और बात सुलझती रही

सपादक

अमृता प्रीतम

ये कहानिया

महब्ब के तसव्वुर की बात दुनिया की सष्टि से एक सौ साल पहले चली थी

दागिस्तान धरती का एक छोटा सा टुकडा है पर उसकी एक कहावत धरती के विस्तार से भी बडी है कि शायर दुनिया की सष्टि स एक सौ साल पहले पदा हुआ था। सा हुस्न और इश्क के तसव्वुर की बात दुनिया की सष्टि स एक सौ साल पहले इसान की छाती मे आग की तरह सुलगी थी और आज तक सुलग रही है

जो बदला है—वह सिफ इसान का दष्टिकोण बदला है या बात करने का अदाज़ बदला है। इस सग्रह की सब कहानिया मुहब्बत की कहानिया है, आदि से चली आ रही आग की पर इनका सग्रह एक खास पहलू स खास महत्त्व रखता है कि इनकी छाती मे शाश्वत तडप भी है, दिल मे शाश्वत सपना भी पर साथ ही इनके परो म एक नया साहस है और हाठो पर एक नई बेबाकी है।

देविदर की कहानी यात्रा', प्रेम गोरखी की कहानी एक टिकट गमपुरा फूल' निमल गरवाल की ठडी भट्ठी, रधावा की 'व्रत, दशन मितवा की दीवार पर चिपकी आह' ऐसी कहानिया हैं, जो पीडा के लम्बे *सफर का कदम कदम तय करते हुए पाठका को सिफ अपनी पीडा ही नही* बाटती, उनके पैरो को जुबिश भी दती हैं।

जसबीर भुल्लर की कहानी 'मसिय की उम्र' कोमल सपनों की चाल स चलती है और खिलते हुए फूलो के हाठो की तरह बातें करती, दर्द की महक से भर जाती है। जसवत 'विरदी' की कहानी 'जवाब-देह' का अक्खड मद कसे अपनी वसा के सब्र के आगे सिर झुका दता है वह अपन-आप म एक सुदर अध्ययन है।

कवल दीप की कहानी 'कथा ननदेव की' बिलकुल अछूती भूमि पर चल रही कहानी है और मनमोहनसिंह की 'काला तीतर' पछियो के प्रेम के माध्यम से मानसिक प्रेम की बात कर रही अपन ही निराले ढग की एक कहानी है।

अजीत कौर की कहानी की नायिका अपन लहू की धारिया जसे अपन शरीर पर झलती है, और साथ ही आज की चेतन औरत का प्रतीक होकर कैसे किसी मद क मनोविज्ञान को समझन म समथ हो जाती है—इस पक्ष स इसे बिलकुल आज की कहानी कहा जा सकता है। रूहानी और जिस्मानी आवश्यकताओ का मिला जुला जिक्र, जिस जालिम बबाकी से अजीत कौर की कहानी म अक्सर आता है उसे सहज ही इस लेखिका की अपने ही ढग की उपलब्धि कहा जा सकता है।

और जस एक प्राचीन कहानी है कि पजाब की सोहनी हर रोज रात को दरिया को तैरकर अपने महीवाल स मिलन जाती थी, तो वह रोज उसक लिए मछली भूनकर रखता था। पर एक बार वह दरिया से कोई मछली न पकड सका, इसलिए महबूबा की दावत क लिए उसन अपनी जाघ का मास काटकर भून लिया। उसी तरह मेरी अपनी कहानी यह कहानी नहीं मेरे अपन शरीर स ही चीरे हुए मास का एक टुकडा है

दिल की बात अगर दुनिया की सष्टि स एक सौ साल पहल इसान के दिल मे जल उठी थी—वह आज भी सुलग रही है सुलगती रहगी

—अमृता प्रीतम

मासय का उम्र

जसवीर भुल्लर

मीरा के जाते समय उसन मीरा का हाथ छोटे बच्चे के सिर की तरह सहलाया।

जिस मीरा क साथ उसन घर बसान का सपना दखा था, उसी मीरा के लिए उसके बनवासी बाल उभरे, "अपनी कहानी लोरी मे शुरू होकर मसिय पर खत्म हो गइ है।"

चलती लूओ म मीरा की खामोशी शीत बनी रही। उसके हाथा का चूडा काप उठा। उसकी माग पर सिंदूर थोडा मा झडकर बरौनियो पर अटक गया, आर फिर जमीन पर बिखर गया। बात करते हुए उसने अपने दोना हाथ मीरा के आग पसार दिए, 'दखा, इन हथेलियों की कोई भी नकीर तुम्हारे लिए नही है।'

मीरा के लिए उसके उदास बोलो का यह आखिरी ताहफा था।

मीरा पराई मौत की तरह बहुत दूर थी, और वह गलत सवाल के हासिल की तरह एक शाम मेरे पास पहुच गया।

अधेरी राता मे रोशनी की कोई कतरन जसे किसी टहनी से अटकी रह जाती है, अपनी भटकन की परेशानी से बौखलाया हुआ सा वाला "रावी, मीरा की माग का सिंदूर मेरे लिए नही था, और न ही मेरी दहलीज पर चुआया हुआ शगुनो का तल मीरा के लिए था। यह मरी मौत थी, रावी! मरी अपनी मौत। इस मौत का जिम्मेदार कोई भी और नही, सिफ मैं हू।'

हम दाना पदल ही यूनिवर्सिटी की ओर चल दिए। सार रास्त वह मीरा की बातें किसी गरीब की अनसुनी शिकायत की तरह करता रहा। कुए म दी हुई आवाज़ की तरह वह जवाब म अपनी ही आवाज़ मेरे मुह मे सुनना चाहता था। मैं भी सार रास्ते अपने बोला को मरहम की तरह बरतती रही।

जब वह पहली बार मिला था, असल मे मुझस नही मिला था, मीरा बहन स मिला था। मैं छोटी थी उन दिना। उसन मेरा सिर सहला दिया था। मुझे तब यह ख्याल तब भी नही था कि मैं कभी उसके बराबर की होकर उसके साथ साथ चलूगी।

यूनिवर्सिटी म उसका कुछ नही था। वहा मेरा भी कुछ नही था, पर दोस्ती के दूसर बरस वह छुट्टी पर आया तो यूनिवर्सिटी का रास्ता हमारे परा की आदत हो गया। हम सुस्तान के लिए वहा बैठत, पानी पीत, चाय पीते और लौट आत। बहुत चले थे हम, पर मुझे इस बात का गुमान तक भी नही था कि हम एक दूसरे की ओर भी चल पड़ेंगे। उसन सहज ही मेर चेहरे पर मीरा का चेहरा चिपका दिया था, और फिर उसी चेहरे का वह मुझम दखना रहा था। उस शाम से पहले मुझे पता भी नही था कि मीरा का चेहरा मेरे अदर म ही समा चुका था, और उसन अब मुझम से मुझे देखना शुरू कर दिया था।

उस शाम हम यूनिवर्सिटी स वापस लौट रहे थ। उस शाम भी सडक के साथ साथ बह रह गदे नाले की बदबू की ओर हमारा कोई ध्यान नही था। उस शाम भी गुजरती हुई टकें हमारे ऊपर धूल डाल गई थी—पर उस शाम उसके बोल कुछ एसे थे जैसे कच्ची टहनी ओस के बोझ से कापती रहती है। दुविधा के विलम्ब के बाद उसन कहा, 'मुझे नदिया शायद इसलिए अच्छी लगती है क्योकि तुम्हारा नाम रावी है। जानती हो मेरी जन्मपत्री मे लिखा हुआ है कि मुझे पानी से डरना चाहिए। नदी म मेरी मौत भी हो सकती है पर ।' उसने झिझक-सी क कारण बाल दबा लिए और बेमतलब आसमान की ओर दखते हुए धीरे से बोला, ' रावी, मेरा दिल डूबने का करता है।

उसके कापते हुए बोला का बोझ मैंन भारी पत्थर की तरह उठाया।

मेरा मन इद्र का सिंहासन नहीं था, पर डोल गया। मेरी समझ म कुछ भी नहीं आ रहा था, जवाब के इतजार म उसकी नजरें मेरे पैरा से लेकर सिर तक फल गई।

उसकी आखा मे उस नन्हे बालक की सी उत्सुकता थी, जो कपडो से ढकी मदिर की मूर्ति को कपडों के बिना दखने की अभिलाषा रखता है। उस पल उसकी आखो म कुछ उस जसी पवित्रता थी, जो हौवे के साथ किए पहले गुनाह के समय शायद आदम की आखो मे रही होगी

इससे पहले मैंन अपन जिस्म पर कभी ध्यान नहीं दिया था। मुझे अपन ही जिस्म के तिलिस्म के बारे मे कुछ पता नहीं था। मैंन जैसे पल-छिन म ही उसकी आखो के जरिए अपन जिस्म को जान लिया हो

मैंने अपनी मुस्कराहट के इद गिद तसल्ली की महीन मलमल लपेट ली।

उसने इस तसल्ली को उगली भी उसी सहज भाव से पकड ली, जितने सहज भाव से उसने कभी मेरा हाथ पकड लिया था। वह सारे काम ही सहज भाव से करता था, बस मेरे होंठ ही उसने कुछ जल्दी म चूमे थे।

उस दिन हम रिश्तदारा के बहाने से उसके किसी दोस्त के यहा चले गए थ।

बठक के एकात म मेरे होंठा पर मीठी-सी झनझनाहट बाकी रह गई थी। उस पल मैं सिर से पाव तक उसकी नगी कामना थी। उसकी नजर चुम्बन बनकर मेरे होठो पर चिपकी रही। वापस लौटे तो मैं बहुत चुप थी, वह जुम का इकबाल करने की तरह नीची निगाह किए बोला, 'रावी, मेरा गुनाह एक कमजोर इसान का गुनाह है। मुझे माफ कर देना। मैं इसका हकदार नहीं हू शायद, पर यह जुम मैं तब तक करते रहना चाहूगा जब तक मर न जाऊ।'

उस रात अपनी खामोशी का मैंन गहर अतर मे बहुत शोर सुना। मैं खुलकर सास लेना चाहती थी, पर बहुत से डर थे, बहुत से सस्कार थे, जो सास लेते समय सास की नली के आगे आ जात थे।

उस दिन उसकी कल्पना बन्द दरवाजे के रास्ते से आकर मेरे साथ लेट गई। मैंन अपनी उगली से उसकी नगी छाती पर अपना नाम लिख

होने के पहले पहले वह जो लेना चाहता था—किसी भी कीमत पर जा लेना चाहता था। जीने के जतन म ही उसन पैरा स सफर जोड लिया था। जीने के जतन म ही उसन अपने माथ से तूफान बाध लिए थे।

मेरे अकेलेपन को हर पल उसकी आवश्यकता थी, और उसकी भटकन को मेरी। पर मैं नही जानती थी कि मर पास आकर वह कुछ घडिया जी भी लेता था या नही।

उसकी उम्र रिश्ता के अभिशाप की उम्र थी। वह बहुत समय से अपने सपनो क तावूत के पास सिर झुकाए खडा हुआ था और अब मरुस्थल की प्यास जैसा चेहरा लेकर चलन के बारे मे सोच रहा था।

कॉफी लाकर रखन वाले वटर ने मरे और उसके नाम पर मैला कपडा फेर दिया। वह कपडा न भी फेरता तो पखे की हवा म पानी से लिखे नाम मिट ही जाते। मुझे उस पल उसकी उलझ गए ताने बाने की गाठो का खयाल आया। सोचा धागा ताडकर खुद को अलग कर लू पर अपन फसले पर आप ही सब्र कर बठ गई। उसकी राह के आगे तो पहले ही कोई घर नही था, फिर पडाव भी नहीं आएगा। न जाने कहा बठकर सास लिया करेगा?

मैंने सदा की तरह अपना प्याला जूठा करके उसकी ओर सरका दिया।

उसन जूठे प्याले पर मेरे होठा वाली जगह पर अपने होठ रखे, और फिर कसैली काफी का एक घूट भर लिया।

उसका जूठा प्याला अपनी ओर करत हुए मैंने ताकीद की, "राजे! खत समय स डाल दिया करना। खत जल्दी नही आता तो फिक्र हो जाती है। जकर अपना खयाल रखना। जाडे शुरू होन तक मैं तुम्हारे लिए स्वेटर बनाकर भेज दूगी। देखो साफ रूमाल लेकर दफ्तर जाया करना। गुम हो जाएग तो मैं और भेज दूगी और हा "

मैंने जल्दी से अपनी बात बीच मे रोक ली। जिसे ये सारी बातें कहनी थी, वह ता वहा ही थी, जहा वह जा रहा था। मैं तो कोई और थी।

हम स्टेशन पर आ गए।

गाडी आई और वह अपनी अटैची बथ पर टिकाकर फिर प्लेटफाम

पर आ गया।

'अब तुम शायद अगले साल आओगे ? और शायद नही भी आओ ।"

उदासी का अंधेरा मुहब्बत की बेवसी की तरह बहुत गहरा था। उसने मेरे सिर पर हल्के-से एक थपकी दे दी, "तुम अगले साल का क्या सोचती हो ? जब गाडी चलने लगेगी तो मैं तुम्हारी बाह पकडकर तुम्हे गाडी मे बिठा लूगा, और फिर उतरने नही दूगा।"

मैंने बनावटी गुस्से से कहा "मैं शोर मचा दूगी।"

और हम हुकडे मारकर रोने की तरह खुलकर हसे।

इंजन ने लम्बी चीख मारी तो उसने मुझे अपनी बाहो म भर लिया 'अच्छा अच्छा ! फिर !"

उसके होठ एक चुम्बन का सफर तय करने के लिए मेरी ओर बढे। अचानक मेरे और उसके बीच की दूरी पथरा गई। वह दौडकर सरकती हुई गाडी पर चढ गया।

वह झक्कड की तरह आकर चला गया था और मैं विचार पेड की तरह खडी रह गई थी।

मैं आज से ही उसके लौट आने की प्रतीक्षा करने लग जाती, जैसे फूल को उस हाथ की होती है, जो आगे बढकर उसे तोड ले। पर क्या पता किसी सवर ने अब सूरज लेकर लौटना भी था या नही।

मीरा बहन को विदा करने के बाद मा को मुझे भी विदा करने की बडी जल्दी थी। शायद गजे के लौटने से पहले-पहले मेरे लिए भी वह समय आ जाए, जब औरत हस रही होती है तो नफरत कर रही होती है। उसी नफरत से नगी सोकर, उसका मुह चूमकर उसीके बच्चे की मा बन जाती है। यह सब कुछ इतने सहज भाव से हो जाना था जैसे कहीं कुछ नही टूटा, जैसे मुस्कराहट मे कही कोई तरेड नही आई।

जा रही गाडी की काली पीठ मैं अब नही देख सकती थी, पर इस पल का सच देख सकती थी।

इस पल का सच यह था कि मैं एक औरत थी। इस पल का सच यह था कि वह एक मर्द था। एक औरत एक मर्द का प्यार करती थी। इसमे कुछ भी गैर-कुदरती नही था। कुछ भी अजीब नहीं था।

यात्रा

देविन्दर

नहीं, यह सौ साल से सोई हुई किसी शहज़ादी की कहानी नहीं है यह सिर्फ पन्द्रह बरस में सोई हुई पद्मा की कहानी है।

सौतेली मां के राज में रुलती हुई पद्मा जब कस्बे के एक अमीर दुहेजू लाला फतहचन्द से ब्याही गई तो ब्याहले कपड़ों में लिपटी पद्मा ने सोचा था कि अब उसके अंगों में जवानी जागेगी। बचपन तो मरी हुई माओं के साथ ही मर जाता है पर जवानी ने तो अभी आंखें खोली थीं

और पद्मा ने आंखें झपककर देखा—दुहेजू की सेज पर सिर्फ खर्राटे थे, जो फूलों की तरह बिछे हुए थे—और पद्मा आंख मीचकर फूलों की उस सेज पर सो गई

और यह पन्द्रह बरस से सोई पड़ी पद्मा की कहानी है

न गले में जमी हुई सांसें, न दीवारों में पोंछे हुए आंसू, न छाती में हिलता हुआ कोई सपना—शायद सोया और मरा आदमी एक जैसा होता है पद्मा को कुछ भी पता नहीं था। वह बस सोई पड़ी थी।

बस सोई पड़ी के कानों में आवाज़ आई 'यह भी नुकसान उठाना पड़ेगा गुड़ देखकर मक्खियां भी रिश्ता गाठ लेती हैं। कहती है भाईजी, मेरे बेटे की नौकरी आपके शहर में लग गई है। वह भला मामा का घर छोड़कर बाहर कहां रहेगा, कोई कमरा-कोठरी उसे दे देना " और लाला फतहचन्द टपकती हुई दाढ़ में रुई का फाहा रखकर कह रहे थे 'न मां ने जन्म दिया न बाप ने आज मतलब पड़ा तो बहन बन बैठी कहती है,

लाला ! मेरी मा तुम्हारी मा की धर्म-बहन थी, उन्होंने हरिद्वार से आया हुआ पेडा आधा आधा खाया था कोई पूछे, भई, अब तो उन दोनों की हड्डियां भी हरिद्वार पहुच चुकी हैं, पर वह पेडा अभी तक नही खत्म हुआ ? यह पेडा कसे बचा गया ?"

और पद्मा को जो हुक्म मिला, उसने पालन कर दिया। घर की पिछली कोठरी, जिसका पिछली नाली वाली गली से भी रास्ता था, झाड़ू दिलवाकर धुलवा दी। एक बान की खाट भी डलवा दी, और असमजस में दाल की एक मुट्ठी भी ज्यादा बढा दी—यद्यपि वह यह नही जानती थी कि इस बिनबुलाए मेहमान को लालाजी ने सिर्फ कोठरी देनी है या साथ में खाना भी खिलाना है

पर शाम के समय दूकान बढाकर लालाजी आए तो उन्होंने दाढ के दर्द की बजाय कहा, 'मैंने कहा, सुनती हो ! इसका तो पैर ही भाग्यवान पडा है। सवेरे दुकान पर जा रहा था तो सबसे पहले यही सामने पडा, और आज ही अचानक आटे का डिपो मिल गया "

'और रोटी ?'

"कहता था कि रोटी की तकलीफ नही दूगा बस, जब तक सरकारी मकान नही मिलता, रात का ही आसरा चाहिए वह तो किराया भी देने को कहता है पर तुम लडके को चाय पानी को पूछ ही लेना, उसका पैर अच्छा पडा है "

पर यह कहानी पसे पसे के लिए जागने वाले लाला फतहचन्द की कहानी नहा है, पन्द्रह बरस से सोई पद्मा की कहानी है

कोई किसीको जगाता है तो आवाज देकर जगाता है, या हौले से कधे को हिलाकर जगाता है। ईश्वर को न जाने क्या सूझी, उसने सोई हुई पद्मा को जगाने के लिए उसका बडे ज़ोर से पैर खीच दिया, इतना कि पैर मुड गया, मोच आ गई

और पद्मा की चीख निकल गई

यह एक सरकारी छुट्टी वाला दिन था, जब सरकारी दफ्तर बन्द होते हैं, पर शहर की दूकानें खुली होती हैं। सो लाला फतहचन्द अपनी दूकान पर थे, और घर का मेहमान किरायदार तिलक घर पर था। उसने आगन

स आती हुई पद्मा की चीख सुनी तो दौड़कर आया और गीले आगन म फिसलकर गिरी हुई पद्मा को हाथ का सहारा देकर उठाया। फिर अन्दर कमरे म ले जाकर चारपाई पर लिटाया, और उसके पैर की गम तेल म मालिश करने लगा

तेल हौले हौले ठडा हो गया, पर तिलक की दोनों हथेलियां गम हो गइ, और पद्मा के पैर की एड़ी तक उसका लहू गम हो गया।

पद्मा चौंककर पद्रह बरस की नीद स जाग उठी

जागी—तो सामने तिलक था। नजर परे की तो खाली दीवार पर भी उसीकी परछाइ थी घबराकर आखें मूद लीं, तो वह बन्द पलकों में से भी अन्दर आखा म आ गया था

जो कुछ बाहर था उससे बचा जा सकता था, लेकिन जो कुछ अन्दर आ गया था, पद्मा उससे बचकर कहीं नही जा सकती थी—इसलिए उसे बचने का रास्ता न मिला—तब उसने अपने सिर को सहारा देने के लिए तिलक की छाती की ओर देखा

तिलक ने दोनों हाथों से कसकर पद्मा का सिर अपनी छाती से लगा लिया

और पद्मा आखें नीची करके धरती पर गिर हुए जिदगी के अर्थों को खोजने लगी

यह बहुत दिन बाद की बात है जब एक दिन तिलक ने कहा, 'पद्मा ! जिदगी नही, पर इस घर की दीवारें मुझे घूरती हैं मुझे इस घर की दीवारों से बचा लो "

"न यह घर मेरा है न दीवारें मेरी जो तोड सकू ' पद्मा बिलख-सी गई।

' फिर घर वाला को घर की दीवारें लौटा दो " तिलक ने हलीमी से कहा।

पर सस्कारो को भले ही कोई बात कितनी ही हलीमी से कहे, उनके माथे पर त्योरी पड जाती है। पद्मा ने घबराकर, अपने माथे पर आया हुआ पसीना पोछा—शायद दुपटटे की किनारी से सस्कारो की त्योरी पोछ

दी—और फिर 'अचभा' सी तिलक के मुह की ओर देखने लगी

लोग दिन के उजाले मे राह ढूढत है पर पद्मा को, जैसे ही सूरज चढता, अपने हर तरफ अधेरा फन गया लगता। और अधेरे मे सारी दुनिया की आवाजें उससे एसे टकरान लगती कि उसके हर खयाल के पैरो को ठोकर लग जाती और वह घबराकर परो को मलते हुए फश पर बैठ जाती ता कितनी ही देर बठी रहती पर रात को जब दुनिया की आवाजें कही डूब जाती उस खामोशी मे उसके मन की लौ ऊची हो जाती, और वह कोई राह ढूढन लगती

और एक रात को सपन म उसे एक राह मिल गई। राह जसे साक्षात हो उसके पैरो के आगे आ गई जहा सामने किसी मदिर का कलस चमक रहा था और उसन दखा, मदिर के चरणो के पास बहती हुई एक नदी म उसन हाथ पैर धोकर कुछ जगली फूल तोडे है और फिर फूलो को पल्ले की किनारी म डालकर वह मदिर की ओर चल पडी है

सवरे यह सपना जस उसके मुह पर लिखा हुआ था। लाला न तिजोरी की चाबी उसके हाथ से ली, तो पद्मा के हसत हुए मुह की ओर देखन लगा। पद्मा न सपना सुना दिया। पर जिस बात का ध्यान पद्मा को नही आया था, लाला को आया, बाला यह तो मैं कहता हू, देवी ने आप आकर मेरा चढावा मागा है। पिछले दिनो जब गोदामो की तोडा फोडी हुई थी मैंने अपने मन मे मानता मानी थी कि मेरा भरा गोदाम अगर पुलिस वाला के हाथ से बच जाए ता मैं देवी को प्रसाद चढाऊगा गोदाम भी बच गया मैंने माल भी ब्लैक कर दिया, पर अभी मानता रहती है "

और लाला ने पद्मा से कहा कि वह जाकर देवी को प्रसाद चढा आए—मुश्किल स सौ कास का रास्ता है और गाडी सीधी जाती है।

'मैं अकेली ? पद्मा ने रास्ते की आर दखा पर पैरा की ओर भी। पैरो के आगे अभी भी मस्कारो की दहलीज थी पर एक पैर उठाते हुए उसन कहा, अगर साथ तिलक चला चले '

अगर वाली बात कठिन नही थी लाला न मान ली, और पद्मा के कापते हुए से पैर यात्रा पर चल दिए

गाडी न जब शहर के प्लेटफाम को पीछे धक्का दे दिया, तो सारे का

सारा शहर पद्मा के मन स पीछे सरक गया—पीछे, न जाने कहा

राह वही थी, पद्मा के लिए भी, और तिलक के लिए भी। पर गाडी जिस भी स्टेशन पर रुकती, पद्मा को लगता उसकी उम्र का एक बरस गाडी से उतर गया है और तिलक का लगता कि उसकी उम्र का एक बरस अभी इस स्टेशन से गाडी पर चढ आया है

इस यात्रा के पन्द्रह स्टेशन थे और जब देवी के मन्दिर वाले स्टेशन पर गाडी पहुची, पन्द्रह स्टेशनो को पार करके, तो उस नय पहाडी गाव म उतरते समय पद्मा की उम्र पन्द्रह बरस छोटी हो गई थी और तिलक की पन्द्रह बरस बडी

तिलक शायद पता लेकर आया था, इसलिए पहाडी गेस्ट हाउस का रास्ता पूछकर उसने अपना और पद्मा का सूटकेस उठा लिया

'और मन्दिर ?' पद्मा न ध्यान दिलाया, तो तिलक हस पडा, "पूजा करने जाएगे, लेकिन भटकते हुए मन से नही सहज पवन की तरह जाएगे आज, कल या परसा "

पद्मा ने एक बार दूर दिखाई दते हुए मन्दिर के कलस की आर देखा, फिर पास ही साथ चल रहे तिलक के मुह की ओर—और फिर पहाडी हवा का एक गहरा ताज़ा सास भरा

रात ठडी थी। गेस्ट हाउस के चौकीदार ने कमरे म चीड की छिपट्टिया जला दी थी जिनका हलकी सी महक वाला धुआ आधी रात तक पद्मा और तिलक के अगा स लिपटता रहा अगा की महक मे मिलता रहा कोई चौथा पहर था जब पद्मा ने कहा तिलक ! तुम्हारे तन क मन्दिर तक आकर मैं पाप-पुण्य स मुक्त हो गई हू तुम सच कहते थ, वहा उन दीवारो मे मैं पाप पुण्य से मुक्त नही हो सकती थी "

कौन जाने तिलक मन्दिर था और पद्मा यात्री, या पद्मा मन्दिर थी और तिलक यात्री—पर सवेरे जब व जागे—तो दोनो के बदन मे एक दूसरे के अगा की महक प्रसाद की तरह पडी हुई थी

पद्मा हस-सी पडी, मन का यह सच कैसा है कि मैं इस दुनिया म किसीका नही बता सकती

तिलक न पद्मा के होठ चूमे, फिर कहा, "सच कहने वाले को लाग

पगम्बर कहते हैं, पर सच सुनने वाली उम्मत कहीं नही होती " और फिर पूछा, कल, परसों या चौथे को वापस जाना होगा ?'

पद्मा के अग कमल फूलों की तरह खिले हुए थे, मन भी—बोली, 'अब कही भी जा सकती हू वहा भी, जिस जगह को लोग घर-ससार कहते है। अब मैंने एक मदिर की यात्रा कर ली है। बाकी रहती उम्र को इस यात्रा का पुण्य लग जाएगा।'

तिलक कुछ देर चुप रहा। शायद अपने मन मे उतर गया। फिर बोला, "नही पद्मा ! पुण्य एक पत्थर नही है जिसे जुडवाकर सारी उम्र गले मे डाल लेंगे यह तो रोज ताजे फूल की तरह खिलता है और रोज मदिर मे ताजे फूल की तरह चढाना होता है "

लोग पद्मा और तिलक के बारे मे क्या-क्या कहते है, मैं नही जानता। मैं सिफ यह जानता हू कि वे दोनों मन की यात्रा पर गए हुए यात्री थे जो वापस नही आए। मन की यात्रा पर गया हुआ कभी कोई वापस नही आया

किरमजी और काशनी धब्बे

अजीत कौर

सिनेमा हाल म अधेरा था। पिक्चर अभी शुरू नही हुई थी, डाक्यूमट्रीज चल रही थी। ग्वालियर म तानसेन का मजार वार्षिक समारोह लाग मजार पर दीपक नही फूला की रीदज रखते हुए सगीत सम्मलन का एक फ्लैश, और फिर वहा एकत्रित जन समुदाय का एक फ्लैश अगली पक्ति मे एक चहरा

सिनमा हाल की बालकनी म स अचानक एक चीख उभरी—' देव !' जसे कोई खोया हुआ बच्चा भीड म घबराकर रोता हुआ, बौखलाया हुआ घूमता है, और अचानक भीड के समुद्र के उस पार पल भर को उस अपनी मा का मुह दीखता है—तो वह चीख उठता है— अम्मा !'

कुछ खटर पटर ! अधेरे हाल का एक दरवाजा खुला। कोई बाहर चला गया। दरवाजा फिर बन्द हो गया।

अमिया खाट पर पीठ के बल लेटी हुई है। छत की ओर घूर रही है। एक कोन म मकडी का जाला लटका हुआ बडा ही उदास लग रहा है। उसके अपने अन्दर इसी तरह के बहुत सारे उदास जाल हिलते डुलते लटक रह है।

अमिया धीम स उठती है। बाहर स लम्बा ब्रुश लाकर वह जाला साफ कर दती है। दीवार के क्रीम रग के डिस्टेम्पर पर एक मली सी रेखा खिची रह जाती है। अमिया ब्रुश से उसे भी रगडकर उतार देना चाहती है। पर वह मटियाली काली सी लकीर और भी ज्यादा बिखर जाती है।

अमिया का मन उतावला हो उठता है। ब्रुश ले जाकर वह आँगन के एक कोने मे रख देती है और वापस आकर अपने पलग पर लेट जाती है।

प- उसके अदर लटकते हुए जाले और भी गहरा उठते हैं। उनके आसपास दीवार पर पुती मटियाली लकीरें और गहरा और चौड़ी हो जाती है।

—किस ब्रुश से इन्हें साफ करू ? बताओ देव, तुम ही बताओ !

यह आह है या क्या है, जो गले मे आकर अटक गया है ? जैसे किसी चट्टान से किसी गुफा का मुह बन्द कर दिया गया हो, और गुफा के अन्दर की हवा और अँधेरा घबराकर गुफा की काली चट्टानो के साथ सिर पटक रहा हो।

—सास क्यो नही आता ? छाती पर यह भार हजारो-लाखो चट्टानें ! ओह ऐसे तो पसलिया कडक जाएगी।

अमिया ने घबराकर आखें भींच ली और जैसे सचमुच कोई शारीरिक पीडा मे छटपटाता है, उसका सिर सिरहाने पर दाए से बाए, बाए से दाए, चक्कर खाता हुआ सा घूमने लगा।

—इतने वर्षो बाद आज तुम किस तरह फिर ? मैं यह नही कहती कि तुमने मेरे घावों के टाके उधेड दिए है, क्योकि टाके तो थे ही नही। मैं यह भी नही कहती कि तुम्हारी याद एक जख्म है। जख्म है भी तो गुलाब जैसा। गुलाब की आग का सेंक, और आग जैसे गुलाब का हुस्न।

—पर इतने वर्षों बाद तुम्हे ऐसे मिलना था ?

अमिया के विचार अँधेरी, सुनसान और परछाइयो भरी गलियो मे भटक रहे हैं। पीडा उसके अन्दर एक विशेष स्थान पर जाकर रुक गई है और वहा लगातार टीस उठ रही है। या तो यह होता कि दर्द के एक के किनारा समुद्र मे वह डूबती, और डूबती ही चली जाती, नीचे नीचे और गहरे नीचे। पर यह नहीं हुआ। कुछ देर तो ऐसा लगा—पहले दो तीन वर्ष—मानो उसने एक तेज जहर पी लिया था, जिससे उसके सारे मसल्ज ऐंठकर टिवच करते थे। उसके कान, आख—सभी थे, पर हैरान परेशान होकर कही बैठ गए थे, काम नही कर पाते थे। फिर धीरे धीरे इस जहर का सारा असर सिकुड गया, सिमट गया। सारी पीडा एक

स्थान पर इकट्ठी हो गई—उसके अन्दर, किसी बहुत ही नाजुक स्थान पर। और तब से वह वहीं टीस रही है। लगातार सुबकती हुई कुलबुला रही है।

—आज तुम्हारी याद हलके-हलके पाव चलकर मेरे सिरहाने आ खडी हुई है देव! एक पुराना स्वप्न वृक्ष के पत्तों के बीच गहरे सास लेती, सुबकती और सिर पटकती हवा की तरह तडप रहा है।

—जी चाहता है कि हवा मुझे टहनी से तोडकर ले जाए, अपने साथ, कहीं। पर टहनी के साथ जुडे रहने की मजबूरी टहनी के साथ ही चिपके रहने की मजबूरी।

जिंदगी की इस टहनी से आप अपनी इच्छा से टूट नहीं सकते। जिंदगी की इस टहनी को आप गम की शिद्दत से तोड भी नहीं सकते।

टहनी बहुत मजबूत है।

चित्रागदा को केवल एक ही वर्ष बसन्त की सुगंध का मिला था न? अमिया देव से पूछती है।

'सिर्फ एक ही वर्ष।" देव सहज-स्वभाव ही उत्तर देता है।

'जब उसने बसन्त के एक ही वर्ष का वर मांगा था तो उसे कोई सोच नहीं आई थी कि उस वर्ष के बीत जाने पर वह क्या करेगी? अमिया की आखो में बच्चो जैसा कौतूहल है।—मां वह तारा कौन-सा है? वह जुगनू सा चमक रहा है, हमारी छत की मेड के ऊपर, एकदम ऊपर बैठा हुआ।

अमिया की आखो का भोलापन और हैरानी व उत्सुकता और पता नहीं क्या-क्या एक जुगनू की भांति टिमटिमाता है।

आज जब उसे वही सब याद आ रहा है तो उसकी आखो की पलको के उस पार थमे पानी की एक बूद में उसी तरह के कई-कई जुगनुओं की लाशो की परछाइयां काप रही हैं।

पानी की उस बूद में दूधिया आसमान की नीलिमा और रातों का भोलापन भी काप रहे हैं।

—मा, जुगनू के शरीर में इतना प्रकाश कहा से आता है ?

"चित्रागदा ने जब वर मागा कि केवल एक वष उसे वसन्त की सुगध का मिल जाए, केवल एक ही वप उसके तन के कैक्टस पर एक गुलाब खिल उठे, जिससे अर्जुन झुककर एक बार उसे सूघ ले तब उसे यह खयाल क्यो नही आया कि उस एक वप के बाद वह क्या करेगी ?"

दव ने पहली बार नज़र भरकर अमिया के मुह की ओर देखा। वह एक नजर अमिया के कलेजे मे कही उतर गई।

घास की तिडे कापती हैं कापती है ।

देव नजर भरकर अमिया के मुह की ओर देखता है। पर क्षण भर बाद उसकी दृष्टि वापस लौट जाती है। भले वह अभी भी अमिया के मुह की ओर ही ताक रहा था। "तुम अभी छोटी हो, अभी तुम्हे यह बात समझ नही आ सकती।'

अमिया का जी चाहता है कि रा द। जी भरकर राए।

आज तो वह रोएगी। बस रोएगी।

—छोटी हू मैं ?

और रात को वह एक गीत लिखती है।

सवेरे गीत वाला कागज़ देव के हाथ पर रख देती है।

—अभी भी छोटी हू मैं ?

अमिया सोचती है, यदि मेरा शरीर भी एक कागज़ होता, और उस-पर मैं अपने समस्त मौन बोल लिखकर ऐसे ही देव के सामने रख सकती !

वृक्ष की एक टहनी हवा के साथ डोलती है। उस हिलती हुई टहनी पर एक घोसला कापता है।

चिडिया जब अपन नन्हे बच्चो के लिए दाना लाती है और बच्चे उचक-उचककर चाच खाल-खालकर मा की चोच मे से चोगा चुगत हैं ता उनके नये जन्मे अधपके पख इसी प्रकार कापते है

दव गीत पढता है, और मुस्करा दता है। अमिया उस मुस्कराहट का अथ समझने के लिए छटपटाती रह जाती है।

चाहे सभी सवालो के जवाब मिलत जाए एक न एक सवाल तो फिर भी बाकी रह ही जाता है।

पर अमिया को तो किसी भी सवाल का जवाब नहीं मिल रहा। सारे ही सवाल बाकी रह गए हैं।

"देव, तुम्हारी आखो मे जो एक रोशनी की पगडडी है, यह किस देश को जाती है?"

'देव तुम्हारी चाल म यह जो एक सगीत है, इसे सुनकर जल-तरग का खयाल क्या आता है?'

'देव तुम्हारी कमीज म जो सलवटे पडती ह, उन्हे देखकर सुबह-सवेर के समुद्र की याद क्या आती है?'

'देव, सारी रात तुम्हारे शरीर की महक मेरे सिरहाने क्या बैठी रहती है?

देव तुम जब मेरी उगलिया को छूते हो, तो मेरी पसलिया एक दूसरी से अलग अलग क्या हटने लगती है?—और हर पसली म एक चौडी अधेरी खाई क्या खुलती चली जाती है?'

'देव जब तुम मेरी आखो मे देखते हो, तो एक सास और दूसरी सास के बीच कौन स अधेरे कुए खुदते चले जाते है?—और उनकी मिट्टी ऊपर आती आती मेरे गले म इकट्ठी हो जाती है—ढेरो के ढेर मिट्टी—मना मिट्टी!

सारे सवाल खामोश भटकते रहते है—पतझड के लाल पीले पत्तो की तरह!

अमिया के मन मे लटकते मकडी के जाले हिल रहे हैं और जालो की जो एक लकीर दीवार पर छूट गई है वह गहरा रही है।

देव ने अमिया के जन्म दिन पर उसे एक उपहार दिया है—गहरी अधेरी रात जैसी काली चुनरी जिसके ऊपर किरमिची रग के धब्बे है और लकीरें है।

अमिया की नजरें देव के मुह पर पता नहीं क्या खोजती रहती हैं। अमिया की आखें मानो हजारो प्रश्नो का उत्तर मागती हैं—सदियो पुराने सवाल पहाडो की खामोश चट्टानो जैसे पथरीले ठोस सवाल, सफेद गरमाई

हवा जसे नाजुक-बदन सवाल धरती की प्यास जैसे गरम सास लेने वाले सवाल, ज्वालामुखिया के लावे जस भयावने सवाल, वपा की बूदो जैसे टिप टिप करते सवाल। पर किसी भी सवाल को बोल नही मिलते। एक बार कह दो। अभी। इसी पल। यह क्षण खो जाएगा। और फिर पता नही क्या होगा ?

दव दुनिया भर की वातें करता है। तरह तरह की। जब वह अपने बचपन की कोई शरारत सुनाता है या अपनी मा की कोई बात, या अपनी छोटी बहिन की कोई बात, या बस-स्टाप की कोई बात, अमिया टुकुर टुकुर उसके मुह की ओर देखती है। उसकी आखे बच्चा जसी मासूमियत और हैरानी से झपझपाती है। उसे लगता है जैसे देव अलिफ्लैला का कोई किस्सा सुना रहा हो।

हवा खामोश उनके शरीरा की गध को लेकर उडती रहती है। मौन क्षण उनके सिरा के ऊपर स अबाबीला की तरह उडत हुए निकल जाते है। धूप चुपचाप रोशनी के छिडकाव की तरह बिखरी रहती है।

देव सक्डा हजारो किताबा की बातें करता रहता है। अमिया चुपचाप आखे झपझपाती सुनती रहती है। उसके अन्दर से मई जून की हवा का एक झोका सरसराता हुआ गुजर जाता है।

—देव एक किताब तुम्हारे सामने पडी है खुली उसका एक पन्ना हवा म फडफडा रहा है। इसे अपने हाथ मे पकडकर पढ लो न। एक बार। अभी। इसी पल—

फिर वह पल भी बीत जाता है।

दव वह एक बात नही कहता—वही एक बात।

धूप आक के फम्बे की तरह उडती रहती है। दव और अमिया की परछाइया कभी सिकुडती है कभी फलती हैं। फलती सिकुडती परछाइया के बीच एक सदियो पुराना सवाल भी सिकुडता फैलता रहता है।

देव की दी हुई रात जसी काली चुनरी जिसमे किरमिची रग के धब्बे और लकीरें है ओढकर उसका मन चाहता है, कही चली जाए।

वह आखें बद करती है और उसे लगता है वह मर रही है। कुछ धुधले स मुह करके आसपास जुडे बैठे हैं। वह धीमे से कहती है, 'यह

चुनरी मेरे कफन पर डाल देना"—यह सोचकर उसे बहुत शांति मिलती है।

—कितनी बचकानी बात है ! यह सोचती है और शरमा जाती है।

एक आवाज अपने नगे-गुरन्रे हाथो से अमिया की इस कहानी को उसके घर के आगन म ला पटकती है। अमिया की मा, अमिया के बाबा, सब उसपर झुझला रहे हैं—'क्या ? मगर क्यो ?"

अमिया टुकुर-टुकुर सबके मुह की ओर देखती है। क्या बताए ? इसका आरम्भ ?—पता नही। इसका सिरा गुलाबी धूपो म और घास के कापते तिनको म, और मौलसरी की टहनियो मे और यूकेलिप्टस के पत्तो म, और अबाबीलो की तरह उडते हुए क्षणो म पता नही कहा खो गया है। इसका अन्त ?—अमिया की आखो म आसू भर आते हैं।—हाय मा, यदि यही मुझे भी मालूम होता ! काश, कि मैं वह परला सिरा पकड पाती !

—प्रलय का दिन किसने देखा है मा ?

अमिया की एक सहेली रोहिणी देव के पास गई—"गलत है यह ! बिलकुल गलत ! वह तो मर जाएगी ऐसे। तुम फसला करो। आखिर सैकडो-हजारो दिन तुम उससे मिलते रहे हो। उसके बाबा के पास जाओ और उसे अपने लिए माग लो।"

देव चुप रहा। एक लम्बे पल के लिए चुपचाप कुछ सोचता रहा। 'क्या अमिया भी यही चाहती है ?"

"वह चाहती है खाक !"—रोहिणी को बहुत क्रोध आ रहा था इस मनुष्य पर। मन म वह अमिया की अक्ल पर कुढ रही थी—यह किसके सिर पर से वह अपना जीवन वारकर फेंक चुकी है ?

—सखी री, तुझे पता है न उस ग्वालिन का, जो दूध बचने आती थी एक एक बूद के लिए अपने ग्राहको से लडती थी ? और फिर एक बाका जवान आता था, जिसे वह भर-भरकर दूध के कटोरे पिलाती जाती। कुछ पीता था, कुछ गिराता था। कुल्ह ने पूछा, 'बूदो का हिसाब करने वाली ग्वालिन अब कटोरो का हिसाब क्यो नही करती ?

"प्यार प्रीति म हिसाब किताब कसा ? अपनी सासें ही जिसपर वार दी, उससे दूध और कटोरा का क्या हिसाब ?
प्रेम प्यार म लखा-जोखा नही—यह बात बुल्हे के दिल म उतर गई, और उसने अपनी तस्बीह[1] तोडकर परे उठा फेंकी।
—सखी री सुनी है न तूने यह बात ?

अमिया की आखो से जो आसू ढुलकते है उनम अगणित जुगनुओ की लाशें है।

' अगर अमिया चाहती है अगर ,
गुलाबी धूप की हथेलियो म घास के मासूम तिनको के काटे चुभ गए है।

—नही, मैं कुछ नही चाहती। कुछ नही कहती।

हवन-कुड के चारो ओर अमिया के कदम उठ रहे है। लपटें काप रही हैं—लाल, पीली, किरमिची नारगी काशनी लपटें। इन लपटो म अपना सारा ससार सारी बातें, सारे सपने, सारे मोह सारे स्वप्न मुटठी भरकर डाल देने होगे।

ओम स्वाहा ।

एक मुटठी स्वप्नो की—एक मुटठी ख्वाबो की—। ओम
ऐसे भी कभी कुछ भस्म हुआ है ? सपनो की लाश को भस्म करने के लिए तो पसलियो की लकडी चाहिए।

अमिया बीबी अपना कोई पुराना कपडा मेरी मलिका को दे जा।'
—महतरानी अपनी छोटी सी मलिका की ओर हाथ करके कहती है।
मलिका शरमाती हुई मुस्करा रही है।

'रोहिणी वह चुनरी निकाल ला।
अमिया मुस्कराकर एक काली चुनरी मलिका की ओर बढा देती है।
चुन्नी के ऊपर किरमिची रग के धब्बे और लकीरें हैं।

---

1 माला

दो दिन बाद अमिया ससुराल से लौट आई। दिन म सोती रहती है रात को सोती रहती है।

फिर फिर टेलीफान की घंटी बज उठती है।

"मैं—देव! अमिया, एक बार सिर्फ एक बार मिल ना यार! आज रात मैं इस शहर से जा रहा हू।"

क्लोरोफाम की बेहोशी के अधेरे की पहली लहर अमिया के शरीर म से गुजर जाती है। हवनकुड की लपटें उसके आसपास नाचती हैं। अमिया आखें बद कर लेती है और उन लपटो के पीले, किरमिची, काले और नारगी धब्बे उसकी आखो के अधेरे म दूर-दूर तक टिमटिमाते बुलबुलाते चले जाते हैं।

"अमिया मैं तुम्हारे बिना जी नही सकता। मुझे अपनी बाहो मे छिपा लो अम्मू! मेरे साथ चल। अभी। हम कही बहुत दूर चले जाएगे।"

नारगी रगो के पीछे म एक स्वप्न झाकता है। गुनगुनी हवा, मौलश्री की टहनिया, यूकेलिप्टस के पत्ते, पत्ता म कापता हुआ घोसला, बच्चा के अधूरे उगे पखो की तरह कापता एक स्वप्न, गुलाबी धूप, वषा की बूदो की टप टप एक बे किनारा शात समुदर, और सदियो पहले सुने हुए किसी गीत के बोल—सभी कुछ देव के शब्दो पर स्थिर होकर ठहर गया है। एक क्षण के लिए सभी गर्दिशें सास रोककर खडी हो गई हैं।

धूप के परो के गुलाबी तलवो म चुभे हुए सारे काटे टीस उठते हैं, और वह माथे पर हाथ रखकर वहा ही बठ जाती है। पतझड के लाल-पीले भुरभुरे पत्तो के नीचे एक मरे हुए सपने की लाश झाकती है।

पत्तो को आग लगा दो, जिससे वह लाश सड जाए।

धूप के गुलाबी तलवो वाले पैर काट दो, जिसमे चुभे हुए काटो की टीस खतम हो जाए।

सावली रात का काला अधेरा और उसके चमकते किरमिची धब्बे धधकते हुए अमिया के गले मे अटक जाते हैं। जसे लपलपाती आग के शोले हो।

अमिया काले अधेरे का एक घूट भरती है, जिससे वे शोले अन्दर

निगले जा सकें।

—आह, दव, यही अक्षर, सिफ य ही दो बोल तुमन पहने क्यो न कहे ? यही सुनन के लिए तो म सैंकडा दिना मे और दिनो के करोडा पला मे भटकती रही। अब तो बहुत देर हो गई है मेर प्राण बहुत देर हो गई है ।

—दो घरो के खडहरो पर हम एक घर किस तरह बनाएग देव ? अगर वह घर बना भी लें, तो खडहरो मे से हू हू करके उठने वाली पुरानी आवाजें उस घर की दीवारो और छतो के साथ सिर पटक्ती रहेंगी।

—नही देव, बहुत देर हो गई है।

बाद म आने वाले कई वर्षों के मरुस्थल म से एक भटकता हुआ पछी फिर-फिर जाता है और उस एक पल के ठूठ के आसपास चक्कर काटता है और फिर उसके ऊपर जा बठता है।

अमिया की पलको पर एक आसू कापता है—और उसके अदर मकडी के जाले की बिखरी हुई लकीर का प्रतिबिम्ब तरता है।

—इतने वर्षो बाद दव तुम्ह ऐस मिलना था ?

तानसेन के मजार के आसपास इकट्ठे हुए लोगो म से एक चेहरा उभरता है। अमिया का आसू उसकी आखो की कोरो म से ढुलक जाता है।

शहनाई के कई मर हुए स्वरा की आत्माए आज फिर कमरे म चक्कर लगा रही है भटक रही हैं।

"अम्मी, ये देखा मैंने तस्वीर बनाइ है।" अमिया की बच्ची ममता बाहर से भागी भागी आती है। उसके हाथ लाल पीले काले, किरमिची काशनी रगा से पुते है और उसके हाथ म एक कागज है।

अमिया उस कागज को पकडकर चारा तरफ घुमाकर देखती है।

क्या बनाया है मेरे बिटलू न ?

"तस्वार अम्मी !" —बच्ची की आखा म उतावलापन है, छटपटाहट

है, एक मोर निहारता है बेताबी है खुशी है और मातरता है—इतनी सुन्दर तस्वीर की भी उसकी माँ को समझ क्यों नहीं आ रही?

अमिया को कागज पर केवल लाल पीले नीले, किरमिची और कासनी धब्बे नज़र आते हैं—धब्बे और लकीरें।

'बहुत ही सुन्दर है' और वह ममता की आँखों को देखती हुई मुस्कराकर तस्वीर को चूम लेती है।

एक टिकट रामपुरा फूल

प्रेम गोरखी

उसन दाता तले जीभ दबाकर, आखें फाडकर आसपास ऐसे देखा जैम रोशनी हा, पर घना अधेरा उसकी आखो मे रुई के गालो की तरह धसा हुआ था और उसने टूटे हुए हाथो से अपन कपडा को सवारा देह जैसे दो फाक हो गई हो, और वह झुलसी हुई टागा को सभालते हुए चारपाई से उठकर फश पर खडी हो गइ ठडे फश पर पैर धरते ही जैसे उसके सिर म फिर स टीस उठी, और वह गिरती-पडती बडी कठिनाई से सभली थोडा-सा हाथ बढाकर चारपाई पर चुनरी टटोलते हुए उसका हाथ बाला के गुच्छे जसी किसी चीज के जा छुआ वह चौंककर पीछे हट गई। और अब उसे अधेरे मे भी चारपाई पर पडे हुए अपने देवर तेजी की देह जैस भरपूर दीख पडी हो। एक भवर मे फसे हुए जसे वह नदी मे डूबनी जा रही हो—पर तभी उसने हाथ बढाकर बत्ती जला दी। शराब मे धुत नग पडे हुए तेजी ने करवट बदलकर जसे अपने आपको झुका लिया और पायती की ओर पडी हुई चादर को कमर तक खीच लिया। खीच-पकड म खुल गए बालो का जूडा करते हुए उसने करवट बदली और लरजती हुई नजर से उस सामने खडी हुई को सिर से पाव तक देखा और फिर धीरे से बोला, "कुछ नही, मैं कहता हू कुछ नही हुआ पुरी क्या जानी है ले, मैं अपनी चारपाई पर चला जाता हू तू लेट जा आराम से " कहत हुए वह चादर को कमर के गिर्द लपेटता हुआ हलके कदमा से चलकर दरवाज के बाहर हो गया। और वह खडी की खडी जैसे स्तम्भ बन गई। उसे लगा

जैसे वह गारे मे भरे हुए कुए म उतरती चली गई हो। और फिर उसने चौंककर आसपास देखा और मे दरवाजा भेडकर क्रोध मे जलते हुए उसने जुडवा चारपाइयो की ओर देखा आहिस्ता से आगे बढी और चारपाई पर बैठ गई आखें फाडे दूध जसी सफेद दीवारो को घूर घूरकर देखने लगी कप और प्लेटो से भरी हुई अलमारियों को दीवारो पर लगे हुए कैलेंडरो को और यह सब कुछ जसे उसके शरीर पर काटे बनकर उगता चला गया।

—और उसने एक लम्बा सा सास भरकर दीवार से पीठ लगाकर ऊपर छत को घूरा घूरती रही और फिर जोर-जोर से अपना सिर दीवार से मारने लगी मारती गई, और फिर फूट-फूटकर रो उठी— "यह क्या हो गया यह सब कुछ अभी-अभी यह साबत रात कपडे की तरह कैसे लीर-लीर हो गई!" सोचते हुए उसने सामने की दीवार पर नजर गडा दी और धीरे-से उसकी निगाह दीवार पर लटकी हुई घडी पर जा टिकी आसुओ से भरी हुई आखो म से घूरते हुए उसे लगा जसे कोई चेहरा दीवार पर लटका हुआ उसे देख रहा हो और उसने जैसे चेहरे के नैन-नक्श पहचानने के लिए बडे गौर से घडी की ओर देखा तो उसकी सदियो से एक ही जगह पर अटकी हुई सुइया जसे उसकी आखो म काटे बनकर आ चुभी। उसने आखें मूदकर हाथो मे कलेजा थाम लिया और फिर अपने हाथो को दातो के नीचे चबाते हुए धूल से भरी हुई घडी की ओर देखा उसे याद आया, उसने जान-बूझकर ही कभी घडी को साफ नही किया था बहुत बार उसके मन ने चाहा भी था वह पहले दिनो की तरह घडी को रोज साफ किया करे और चाबी दिया करे, पर जैसे उसके मन की बात को उसके हाथों ने हामी नही भरी। मन के अन्दर की बात हमेशा जसे उसके हाथो को फटकार देती थी और किशन के कहे हुए बोल फूलो की तरह हमेशा उसकी हथेलियो पर आकर टिक जाते थे— जस्सी! तेरे घर की दीवार पर लटकी हुई यह घडी जब-जैसे टिक टिक करेगी, तुम समझ लेना मैं तुमसे बातें कर रहा हू और तेरे घर की दीवार पर नही तेरे अपने मन की दीवार पर अगर तू चाहेगी तो मैं सदा लटका रहूगा ' और इन बोलो के सामने किशन ने जहा और बहुत-सी चीजें उसके ब्याह

पर अपनी तरफ से खरीदकर दी थी, उनमे यह घडी भी थी। और अब एक पल जैसे उसकी आखो मे भरे हुए आसू सूख गए हो—वह धीरे से उठी ठडा फर्श ऐसा लगा जसे ककड बिछे हुए हो और वह पाच कदम नहीं जस मीलो लम्बे रास्त को तय करके घडी के पास पहुची हो। कुर्सी पर खडे होकर उसन हथेली स शीशा साफ किया, बड सहज भाव स अपना सिर शीशे स लगा दिया लगा जस उसने अपना सिर किशन की तपती हुई छाती पर रख दिया हो और बरसो पहले की घटना जसे हवा के झोके की तरह उसके पहलू से होकर चली गई

उस दिन उदासी मे डूबा टूटा-थका जसे सदियो से सफर करता हुआ वह उसके दरवाजे पर आ गया था घर म पहली लोहडी थी न, इसलिए सौदा-सुलफ लेन गया हुआ पति पास के शहर स अभी लौटा नही था। देवर था जो खेतो पर ईख मे छिपकर शराब खीच रहा था और सारे घर का उजाला थी वह खुद और दरवाजे मे आकर खड हुए किशन की ओर देखकर उसने अपनी आखो म आ गई चमक को बुझती सी कर दिया था और परायो की तरह किशन को कुर्सी पर बैठने के लिए कहा था किशन जिसके लिए वह सारे जग की बदनामी मे नहा गई थी, स्कूल की दसवीं कक्षा स लेकर कालेज की पहली कक्षा तक, और फिर गाव के इद गिद और ननिहाल मे पढा हुआ किशन कालेज से हटकर, सरकारी नौकरी मिल जाने पर, उसीका होकर रह गया था और उसके बिना सास नही लेता था और उसके आगे कापते हुए हाथो से उसने खाने की थाली लाकर रखी थी और जब वह लौटन लगी तो उसका हाथ किशन न ऐसे पकड लिया था जैसे चाद के टुकडे को हाथ बढाकर पकड लिया हो 'मुझे रोटी की भूख नही है, जस्सी ! मुझे मुझे तो बस मेरे हाथो मे अपना हाथ दे दे मुझे तेरे सहारे की जरूरत है जस्सा ! मुझे '
और उसन झटके से किशन के हाथो स अपना हाथ छुडाकर एक कदम पीछे हट गई थी । और फिर उसके पास स वह समय भी गुजर गया जब उसने किशन से अलग होते हुए उसके हाथ को चूमकर वचन दिया था—
'किशी ! मैं कही भी रहू, मेरा सब-कुछ तेरे साथ रहेगा जब तू हाथ बढ़ाएगा, मेरा हाथ कभी पीछे नही हटेगा '

'देख ने, झूठी न पडना ' किशन न पक्का करना चाहा था।

'मैंने कहा, कभी नही, किछो ! कहते हुए उसन अपना मुह किशन की छाती मे छिपा लिया था, और फिर जस उस सब कुछ भूल जाना हा, इसलिए बेहतर समझा था कि 'उसक घर की दीवारो म कल्लर न बढन लगे। उसन किशन की हर चीज की तरफ से मुह फेर लिया था, घडी की टिक टिक जो प्रत छाया की तरह उसे लगने लगी थी, वह उसकी आर पीठ करके खडी हो गई। और पति की वफा को पालन की खातिर वह घर आए किशन की ओर पीठ मोडकर खडे हाकर बोली थी, नही, किशन यह हाथ तो बस मेरे पति की अमानत है अब तरा कोई हक अब मैं' और मन के उपर तनी हुई चादर पूरी तरह उससे खीची नही जा सकी थी।

'तुझे याद नही तू तो कहती थी, तेरे हाथ बढान पर ' किशन उसे पीठ मोडे खडी हुई देखकर जसे कण-कण होकर धरती पर बिखर गया हो।

'नही नही, किछो ! तू जानता है यह मरा घर मरा पति वह कितना भला है मेरा सब कुछ और उस अपने ही शब्दा को रखन क लिए जैसे कोई जगह दिखाई नही दी। बस, मुझे माफ कर दे भूल जा तू ले, मरे घर पहली बार आया है, राटी तो मुह से लगा कहते हुए उसने थाली उसके पास रख दी थी और उसके पैरा के नीचे की धरती थरथरा गइ थी।

---और उसके फसल का मुह देरा किशन न जल्दी से उठत हुए गुस्स मे भरकर जरा सा खाने की थाली की ओर दखा और फिर उसकी ओर एम देखा था जैसे हर चीज का राख करन जा रहा हो जसे वह भूखी आखा स सब-कुछ निगल जाने को हो और किशन चला गया ता खामोश आगन को घूरकर, उसकी उन आखा का ध्यान करते हुए उसका यह जी किया कि वह खिलखिलाकर हस और यह भी जी किया कि हूक्के मारकर जग को सुनाए पर न वह हसी ही और न ही राई बस एक खयाल न उसके बदन पर लकीर-सी खीचकर जसे उसस कहा 'आज तूने दोराहे से हटकर एक राह को चुना है अपनी किस्मत की राह को और इस खयाल क

साथ उसने एक लम्बा सास भरकर आकाश की ओर देखा था।

—और अब जब एक एक याद उसके वदन के पास आकर खडी हो गई थी, उसने शीशे के ऊपर से सिर उठाकर बडे मोह से घडी की ओर देखा और एक याद को उसने कसकर पकड लिया जो उससे कतराकर निकल चली थी। उसे डेढ महीना पहले गाव से आई हुई चाची ने चलते-चलते यह बात कही थी, अरी भलीमानस पता नही क्या नौकरी छोडकर चला गया है जाने घर म कुछ कहा सुनी हो गई फिर जब से उसकी मा मरी है, वह गाव मे कम ही टिका है कहते है शराब मे धुत रामपुरे की दूकानो पर बैठा रहता है एक बार आया था, पहले जैसा रग-रूप ही नही रहा डरावना सा हो गया है मैंने तो पहचाना ही नही मैंने पूछा, भाई गाव मे क्या करता है ?' तो हसकर बोला, 'करना क्या है, मामी ! घर बैठकर लोगो को देखता रहता हू ' मैंने कहा 'चुप रह वे कोई ढग की बात कर '' और चाची की बात को काटकर उसने बात बदल दी थी। वह जानती थी किशन मामा के घर से क्यो चला गया था उसे पता था वह किसलिए गाव छोडकर अपने घर चला गया था घर जहा कॉलिज के दिनो म वह भी किशन के साथ हो आई थी।—और फिर सोच मे डूबी हुई वह चारपाई पर औंधे मुह गिरकर सुबकिया लेकर रोने लगी।

—और फिर उसे लगा जैसे उस समय की ठड उसके अगो को सुन्न करके फेंक जाएगी और उसने चाहा वह इस घडी तो बस ठड मे अकडकर ही मर जाए—'यही कालिख मेरे मुह पर लगाने को रात म चला गया था मुझे अपने हाथ से कुए मे धकेल जाता चिता म जला जाता मेरे वास्ते यही कुछ बचा रह गया था ' यह सब कुछ उसने मन मे सोचा ही नही, मानो अपने पति स भी कह दिया हो और उस पति का चेहरा-मोहरा उसकी आखो के आगे इडा-थोर' की तरह उगकर खडा हो गया जिसकी वफा के लिए उसने सफेद चादर तानकर आज तक उसपर छींटा नही पडने दिया था। रात को उसने और तेजी ने बैठकर साथ शराब पी थी, खाना खाया था, और उठते हुए कहा था, कुए पर मोटर पडी है नालें भी पडी हैं, साले कदम कदम पर तो चोर पडते हैं और तेजी को तो सोने पर अपनी खबर ही नही रहती और कोई मुसीबत पड जाए

मैं रात भर कुए पर पडा रहूगा तेजी, तू घर पर सो जाना और खेस को कधा पर ओढकर वह चला गया था। वह हमेशा की तरह भीतर-बाहर सभालकर, तेजी को बाहर की बैठक म लेटे देखकर, दरवाजा उढककर, चारपाई पर आ पडी थी। और फिर उस, सोई हुई को, खडका भी न जगा सका और तेजी उसके पास आकर लेट गया था। और फिर जब उसन डरकर चीख मारनी चाही थी, तो तेजी न दबी हुई आवाज म उस कहा था, मैं ही हू यू ही कोठा सिर पर न उठा चुप रह ' और उसन तेजी से डरकर टागा पर से सरकती हुई सलवार को खीचा था, तेजी का धक्का भी दिया था पर भाई से भी दुगन तेजी के आग वह बाह तुडवाकर मुह के बल जा गिरी थी।

—क्या से क्या हो गया था और वह जार जार रोने को ही रह गई थी। और अब जब उसने आख खोली थी तब तेजी उसके पास ही था उठ जा अब देख दिन कहा आ गया है गाय को दोह ला भाई भी आन वाला होगा ' कहते हुए तेजी बाहर की ओर मुड गया था पर उस चारपाई पर पडे हुए ऐसा लगा जसे लम्बे नाखूना वाले तेजी के हाथ उसे खरोचने लगे हो। उसने दबी हुई चीख मारकर मुह रजाई मे छिपा लिया हिचकिया लेकर रोने लगी उसने पूरे घर को एक तरफ रख लिया और अपने-आपको एक ओर खडा करत हुए सच्चे दिल से एक टूक फैसला कर लिया, 'बस चाहे सारा जग तान दे कि भई भाई भाई को लडवाकर मरवा दिया बस एक बार फसला हो जाएगा वह घर आए तो तेजी की करतूत को नगा करू यह तो नित नित मुह मारेगा इस जैसे को घर म नही रहने दूगी मै आज खून कराकर रहूगी देखी सुनी जाएगी बाद मे '

'मैंने कहा लेटी हुई है अभी तक—खर तो है " दरवाजे के बाहर से ही उसका पति बोला तो वह अपने-आपमे और सिमट गई। उसे लगा जसे वह अपने ही बोलो के पिछाडी खडे होकर उसके साथ बीती पर धीमे-धीमे मुस्करा रहा हो।—और फिर न जाने क्या सोचकर वह उठ बठी और पति के घर मे पर धरते ही तनकर खडी हो गई और भरी हुई आखो म से घूरकर पति के चेहरे को देखा उसे लगा जैसे नित वाला चेहरा कई

और चेहरा मे खडा हुआ उसपर हस रहा हो। "यही कालख मेरे मुह पर पुतवाने के लिए चले गए थे ऐसे भी कोई करता है भला हम इसपर जान देते थे मैं नही जानती, बस एक बार बात " और उसकी आखो का पानी लाली म बदलता चला गया

'ओ हुआ क्या है भला ऐसे ही काहे को पीटना ले बठी है ?" खेम को कधा पर से खोलता हुआ वह कुर्सी पर बैठकर ऊपरी सी हैरानगी से बोला।

तजी से पूछो, भला रात को क्या किया इसने मेरे साथ मुझे क्या होश था नही खून न पी जाती मरजान का एक बूद जो नीचे गिर जाता । और उसकी बात सुनकर पति दो घडी के लिए जैसे दाता के नीचे जीभ दबाकर सोच मे पड गया। उसे लगा उसका पति दरवाजे के पीछे पडी हुई कृपाण उठाएगा और तेजी के टुक्डे करके फेंक देगा उसका पति उसे प्यार भी तो कितना करता था।

"बस यही बात है ले, पगली न हा ता यह भी कोई बात है ? मैंन सोचा, पता नही क्या ऊट बैठ गया ' और जब वह ढीले मुह से बोला तो जम वह बिलकुल जल भुन गई।

'अच्छा, अभी कुछ हुआ ही नहीं कोई बात नहीं फिर अच्छा तुम करवा लो जो बाकी रह गया है मैं करती हू उनसे चलकर बात जिन्हाने तेरे पल्ले बाधी है " और उसने चारपाई के नीचे ऐसे झुक्कर देखा जैसे पावा मे पहनन के लिए कुछ ढूढ रही हो। तभी उसका पति उठकर आगे बढा और उसने जैसे ही उसे बाहो मे भरने के लिए हाथ आगे बढाए, पर वह हाथा को झटककर दरवाज़े के पास पीठ मोडकर खडी हो गई।

"अपनी बदनामी का ढिढोरा एसे अपने-आप नहीं पीटा करते घर की ही बात है कोई पराया तो नही अपना भाई है साली, इसे अपन बस म रख कुतिया दुनिया तो आगे ही हमे लडाने को फिरती है नही तो अगर वह बछेरा क्ल का आधा हिस्सा बटाकर बैठ गया तो हमारे पल्ले चुनझुना रह जाएगा अब तो दो वक्त रोटी खाते हैं। तेरा क्या टूटकर गिर गया ? यू ही त्योहार के दिन रोना लेकर बैठ गई है घर मे चल कपडे कुपडे पहन ले, माघ का मेला देखने जाना है " कहते हुए पति न

धीरे से उसके कधे पर हाथ रखते हुए जसे जलते हुए कलेजे पर पानी का घडा उडेलना चाहा हो। और पति के बोल सुनकर वह भूभल राख की तरह चारपाई पर जा गिरी थी और उसका पति दरवाजा खोलकर बाहर चला गया था।

—और अब इस घडी जब वह जी भरकर रो चुकी थी, वह जरा-सा सभलकर उठी अपने आप उसके कदम आगे को सरके अलमारी म पडी हुइ घडी हाथ पर बाधी और दरवाजे की ओर बढी तभी उसन रुककर पीछे दीवार पर लटकी हुई घडी की ओर देखा उलटे पाव लौट आई कुर्सी पर चढकर जब उसने रुकी हुई सुइयो को आगे पीछे किया तो उसे ऐसा लगा जैसे उसके अपने अतर मे कोई तार झनझना उठा हो। फिर वह एक पल भी खडी नही रही। जल्दी से आगन मे आ गई चूल्ह के पास बैठे हुए पति को उसने टेढी नजर से देखा तेजी भस दोह रहा था। उसने बाहर के दरवाजे म खडे होकर पीछे मुडकर गुस्से स सारे घर को देखा और थूककर जल्दी से चल पडी और फिर जसे स्टेशन की खुली फिजा ने ही उसकी आवाज सुनी, 'एक टिकट रामपुरा '

आखिरी मौसम

गुलवीरसिंह भाटिया

चढे हुए सास से सीढिया चढते हुए वीनू की नजर सामने वाले घर के चौबारे की ब द खिडकी पर पडी तो वह भीतर तक काप गई। एक झन-झनाहट-सी सारे शरीर म फल गई। दबे पाव सीढिया चढते हुए उसे लगा जसे बरसो से सभालकर रखा हुआ उसका अस्तित्व पल-भर म खडित हो गया हो, जिसका एक टुकडा उसके पति के पलग पर पडा हुआ हो और दूसरा अभी अभी सामने वाले घर के चौबारे की ब द खिडकी के पल्लो मे पिस गया हो।

अपने चौबारे के बन्द दरवाजे की ओर देखकर वह और भी ठिठक गई। लगा जसे उसकी लाश इस ब द कमरे म पडी हुई हो और वह खुद सिफ आत्मा हो बरसो से भटकती हुई आत्मा।

मा से चाभी लेकर कापते हुए हाथो स उसने चौबारे का दरवाजा खोला। सामने उसकी लाश थी, ब द खिडकी। अडोल खडे होकर वह बनी देर तक उसकी ओर देखती रही। मा के आने की आहट हुई तो आखें ब द खिडकी मे हटाकर उसके चेहरे पर गाडते हुए उसने भरी आवाज मे पूछा—'और मा, यह खिडकी कभी नही खोली ?

'कभी जरूरत ही नही पडी।'

'पर खिडकिया तो आखिर खोलने के लिए होती हैं

जेठ अषाढ के दिन दरवाजा खिडकी खोलो मही चौबारे का, धूप सीधी, मौसम भी तो हो कोई ? "

"हा सच, मौसम भी ता हो कोई," मातमी-सा चेहरा लेकर वह अपनी लाश के पास बैठ गई। कभी-कभी मौसम भी कितने लम्बे हो जाते हैं। पन्द्रह बरस लम्बा मौसम। और बठे बठे वह पन्द्रह बरस पहले के मौसम म पहुच गई—खुशगवार मौसम, तितलियो का जीवन जीने का मौसम—निर्जीव खिडकियो की आत्मा बनकर उन्ह प्राण देने का मौसम—एक खिडकी उसके अपने चौबारे की, और एक सामने वाले घर के चौबारे की। एक आत्मा वह खुद और एक सामने वाले घर म रहने वाला रतन। मौसम—जब थोडो सी बाता के बहुत अर्थ होते थे और कापियो किताबो, अडोस पडोस के बारे म की गई ढेर सारी बाता के सीमित, बहुत सीमित अर्थ होते थ। मौसम—जिसके जेठ-आषाढ की तपती दुपहरिया भी खुले दिल स खिडकी खोलने की इजाजत देती थी। मौसम—जो उसकी समझ मे कभी न बदलने वाला मौसम था।

और फिर एक दिन मौसम बदल गया था। एक अजनबी नया मौसम बनकर आया था। और उस रात सहेलियो से घिरे हुए उसने इसी खिडकी से पहली बार नये मौसम को देखा था और उसी पल ही आखिरी बार बीत गए मौसम के रूप म सामने वाले घर के चौबारे की बन्द खिडकी को देखा था। नया मौसम उसका पति था—और उस दिन पहली बार उसने स्वीकार किया था कि मौसम सिर्फ बदलते ही नही बल्कि पलो म बदल जाते हैं।

और बठे-बठे उसने सोचा, आज किसी पल भी पन्द्रह बरस पहले का मौसम आ जाएगा। खिडकी खोलने के लिए हाथ बढाया तो याद आया, पास की कपडा मिल का सायरन दिन मे तीन बार बजा करता था और उस समय वे दोनो घर के किसी कोने मे भी हो दौडकर खिडकियो मे पहुच जाया करते थे। उसने घडी देखी दस बज रहे थ और सायरन का ग्यारह बजे बजना था। और उसने खिडकी बन्द ही रहने दी। क्या न खिडकी ग्यारह बजे ही खोलू उसे भी तो मेरे आने की खबर मिल चुकी होगी और शायद वह भी सायरन का इन्तजार कर रहा हो।

और सामने के घर म पहला ग्रास मुह मे डालते ही रतन ने टेढी नजरो स बीवी की ओर देखा आज सामने वाला के यहा बडा शोर है?

"उनकी लडकी आई है वीनू जा किसी दूसरे देश म रहती है कहते हैं पूरे पन्द्रह बरस बाद आई है उसके बच्चा का शोर है ।" बीवी जान क्या क्या बता गई, पर उसन सिफ एक ही शब्द सुना—वीनू। और ग्रास उसके हाथ म ही रह गया। पानी का एक घूट भरा और उठ खडा हुआ।

'क्या बात है ?" पत्नी न पूछा।

"कुछ नही ऐसे ही "

"और खाना ?' वह हैरान थी।

"भूख नही है चौबारे का दरवाजा खुला है ?

"खुला हुआ ही है पर भूख क्यो नही ?'

'न जाने आराम करूगा जरा चौबारे म

"जलती दुपहर मे ? और फिर दफ्तर नही जाना है क्या ?"

—"दफ्तर ! उसने घडी दखी साढे दस बज रहे थे। जरा तबीयत ठीक नही लगती।' कहते हुए वह बीवी का कुछ और पूछने का मौका दिए बिना सीढिया चढ गया। बडी बेसब्री से बन्द खिडकी की दरारा मे से सामने वाली खिडकी की ओर दखा। खिडकी बन्द थी। वह कुर्सी खीचकर बठ गया। याद आया बचपन, कितने अजीब दिन थे ! 'चीजो मे चीज, गडेरिया' एक-दूसरे का हाथ पकडे गली मे दौडते फिरते थे एक दूसरे के करीब बहुत करीब और फिर उम्र के साथ साथ दूरी बढने लगी गली मे तो निकलते थे, पर हाथो म हाथ नही होते थे और कभी कभी वह सोचा करता था—वही मैं हू वही वह है फिर एसा क्यो कि अब साथ चलत हुए वह गली की बाइ ओर होती है और मैं दाहिनी ओर ? और फिर दूरी कुछ और बढी थी—व दोनो अपनी-अपनी खिडकी की आत्मा बन गए थे और उसने सोचा था—शायद यह सबसे ज्यादा दूरी है। पर फिर नया मौसम आया—वीनू का पति, और तब उसने जाना कि दूरी हजारो मीला की भी होती है।

याद आया—मिल का सायरन बजन पर खिडकी जरूर खोलत थे। घडी देखो, पौने ग्यारह बज रहे थे। उसन सोचा—खिडकी ग्यारह बजे ही

खोलेगा, सायरन बजन पर, और फिर यह देखन के लिए कि कहीं सामन वाली खिडकी खुल न गई हो उसन आखें बन्द खिडकी की दरार स जोड ली। "डैडी ! मम्मी कहती हैं नीचे आ जाओ, यहा गर्मी होगी।'

वह एकाएक काप गया, जैसे चोरी पकडी गई हो। घूमकर देखा। दरवाजे म प्रेमा खडी थी—उसकी बेटी ! उसे पहली बार महसूस हुआ, कि लडकी अब बिलकुल ही बच्ची नही रही। यही उम्र तो थी वीनू की और यही कद-बदन जब और लगा जैसे उसके सामन कई बरस पहले की वीनू खडी हुई हो। फक सिर्फ दरवाजे और खिडकी का था।

'चलो न, डैडी ! खडे हो।' प्रेमा ने कहा।

'तुम चलो—मैं अभी आता हू।" वह कठिनाई से बोला, और फिर कुर्सी स उठकर खडा हो गया। वापस लौटती प्रेमा की पीठ पर नजर पडी तो जैसे जान तन से निकल गई—चौदह बरस की लम्बी प्रेमा भरी-पूरी औरत लग रही थी। पल भर म ही उसने खिडकी खोलने का इरादा त्याग दिया—कोठे जितनी ऊची बेटी है और मैं भला

और ग्यारह बज गए। सायरन की तेज आवाज ने उसे दुविधा में डाल दिया। वह कभी खुले हुए दरवाजे की ओर देखता और कभी बन्द खिडकी की ओर। रह न सका तो पुन आखें बन्द खिडकी की दरार से जोड लीं—और नही तो एक नजर देख ही लू वीनू को

पिछले घंटे भर मे उसने तीन सूट बदले थे, पाच बार शीशे के सामने गई थी, आठ बार चौबारे की सीढिया चढी-उतरी थी और न जाने कितनी ही बार ठोकर खाकर गिरते गिरते बची थी।

"क्या बात है, वीनू ? कहीं जाना है ? मा न पूछा था।

"ऊ हू वैसे ही " चुनरी के रग से लिपस्टिक मिलाते हुए उसन जैसे मा को नहीं शीशे को उत्तर दिया था।

माथे पर बिंदिया लगाने के लिए झुकी तो नजर खिचडी बालो की लट म उलझकर रह गई। वह भीतर तक काप गई। एक नजर दीवार पर टगी हुई अपनी तस्वीर की ओर देखा और फिर शीशे के सामने हो गई। आखो के गहरे गड्ढे और भी गहरे नजर आए और काली झाइया पाउडर

की तह के नीचे से जसे उभर उभरकर झलकन लगी। माथे पर आए हुए पसीन को पाछते हुए वह शीशे के सामने से हट गई—भला यह भी कोई उम्र है

गुसलखान मे मुह धोते हुए उसन सायरन की आवाज़ सुनी ता कापती हुई टागो से चौबारे की सीढिया चढ गई। आखें बन्द खिडकी की दरार मे जोड ली—और नही तो एक नज़र देख ही लूगी रतन को

और सायरन बज रहा है। खिडकिया बन्द हैं। दोनो की आखें दरारो से जुडी हुई हैं। रतन सोच रहा है—शायद यह सबसे ज्यादा दूरी है, कई हज़ार मीलो की दूरी से भी ज्यादा। वीनू सोच रही है—यह मौसम कोई और ही मौसम है। पद्रह बरस पहले के मौसम से बिलकुल अलग, और शायद यह आखिरी मौसम है कभी न खत्म होने वाला मौसम

काला तीतर

मनमोहनसिंह

मुझे चंडीगढ़ से हटाकर गुरदासपुर के ज़िले में डिप्टी-कमिश्नर लगा दिया गया। रावी के पुल पर आना जाना बन्द था। रेल की पटरी भी रेत में दबी हुई कहीं कहीं चमकती थी, क्योंकि बहुत समय से उधर से कोई गाड़ी नहीं गुज़री थी। नदी के किनारे दलदली ज़मीन पर पानी की तलयां थी और ऊंचे सरकंडों के गुच्छेदार फूल झूमते थे। मैं वहां आ गया था।

दिन-भर मैं मुकद्दमे सुनता, लोगों को सज़ाएं देता, और फाइलें टटोलता, जिनमें ज़िला कचहरियों की लम्बी कारगुज़ारियों की बू बसी हुई थी। मैं थका-टूटा अपने बंगले को लौटता जो सफेदे के पेड़ों के पीछे छिपा हुआ था। चौकीदार अर्दली और प्यादे चौबीस घंटे हाज़िर रहते थे। रख-वाली के लिए एक बन्दूकची भी मिला हुआ था।

मेरा अभी ब्याह नहीं हुआ था। अकेला होने के कारण मैं हर शाम को पग भरता और देर रात तक जासूसी उपन्यास पढ़ते पढ़ते सो जाता। सर्दियों में हर इतवार को शिकार खेलने जाता।

मुझे इस इलाके की वीरान सुन्दरता अच्छी लगी। ऊबड़ खाबड़ धरती में होती हुई नदी बल खाती हुई जाती थी। ऊंची-लम्बी जंगली घास और पानी की दमकती हुई नदी में जगह जगह रेत के टापुओं में मुर्गाबियां, मुरखाब और मीलसर रहते थे। सांझ-सवेरे मुर्गाबियों की डार कां कां करती आकाश में उड़ती। उनके भारी पंखों की फड़फड़ाहट की आवाज़ सुनकर मैं बन्दूक संभालता और उनमें से कइयों को नीचे गिरा लेता।

कभी कभी मैं जगली सूअर का शिकार करने जाता। खेतो के मजदूर और कम्मी फसल को बचाने के लिए इनको घेरकर बाहर निकालते और मैं आधे दजन सूअरो को ढेर कर देता।

मुर्गाबियो और जगली सूअरो के शिकार ने मेरी नौकरी की बोरियत को दूर कर दिया। हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बीच छोडी हुई उजाड जमीन न शुरू शुरू मे उदास-सा कर दिया था। खतरे की एक सनसनी, एक गहरा भेदो से भरा डर एक अजीब वीरानी का एहसास। लेकिन गावो के लोग इस माहौल के आदी थे। डर से घिरे वे किसी अदश्य डर को महसूस नही करते थे। सीमा के दाना ओर के जाट खेतो मे हल चलाते और बोलिया गाते। एक-दूसरे को प्यार से आवाजें देते और कई बार लहर म आकर गालिया भी देते। एक-दूसरे के पास चोरी का माल भी पहुचा देते। मेरे बदूकची ने मुझे बताया कि व स्मगलरो की भी मदद करते थ।

एक रात मैंन पैग भरा और दफ्तर की फाइलें देखने के बाद सो गया। मैं गहरी नींद मे सोया हुआ था, जब किसीने मेरे दरवाजे पर दस्तक दी। मैं बिस्तर से उठ गया तो कुछ दबी दबी आवाजें सुनी और फिर जीप की घरर-घरर। फिर दस्तक। मैंन झट अपना ड्रेसिंग गाउन पहना, टार्च सभाली और दरवाजा खोला।

मेरे अदली न सैल्यूट मारा और कहा "जनाब तीन फौजी अफसर आपसे मिलना चाहते हैं।" मैं बाहर आया और उनसे मिला। उन्होने मुझे बताया कि पाकिस्तानी फौज का एक बडा दस्ता हमारे इलाके मे दाखिल हो गया है। यह बात हमारी सीमावर्ती चौकी पर तनात जवाना न पुल पर से गुजरन वाले ट्रको और टको से जानी थी। दुश्मन के फौजी, हथियार लिए मोर्चो पर बठ थे। हैडक्वाटर स उन्हे टेलीफोन आया था कि वे मुझे फौरन खबर करें क्योकि मैं वहा सिफ सिविल का अफसर नही था, बल्कि जिले की आम हिफाजत की जिम्मेदारी भी मेरे ऊपर थी।

हालात का जायजा लेन के लिए मैं झटपट उनके साथ जान के लिए तैयार हो गया। यह भी बहुत जरूरी था कि इस बात को छिपाकर रखा जाए ताकि गाव के लोगो म घबराहट के कारण भगदड न मच जाए। हम

दो जीपा म बठकर सीमा की आर चल दिए। मेरा बदूकची मेरे साथ बैठा हुआ था। हम आहिस्ता-आहिस्ता जा रहे थे, पर रात की सुनसान खामोशी म जीपा की आवाज गरजती हुई मालूम होती थी। कच्ची सडक पर जीपा की नीच की हुई लाइटें कापती और मोड पर मुडते हुए लम्बे सरकडा को चमका दती। कोई सहमी हुई मुर्गाबी फडफडाकर उठती और फिर बैठ जाती। झीगुरा की आवाज गूज रही थी। यह गूज हमारे साथ-साथ दौड रही थी। रात क घुप अधेर मे हम खामोश थे।

नदी स कुछ दूरी पर हमन जीपें खडी की और छिपे छिपे दब पाव एक छाटे से तम्बू म पहुच गए, जिसे हरी टहनिया के थुड न धरती की वनस्पति से मिला रखा था।

मैं एरिया कमाडर स मिला। भरी हुई दाढी वाला लम्बा सजीला सिख नौजवान। मैंन खदको मे जाकर सिपाहिया से मिलन और दुश्मन की हलचल भापन का निश्चय किया।

मैं फौजी तो था नही। सिविल म होने के कारण सुख चैन का जीवन व्यतीत करता था। इसलिए मुझे थाडा डर लगा। हमारे सासो की आवाज झमते हुए सरकडा की सरसराहट के साथ मिल रही थी। फौजी अपने मार्चों मे चौकन्न बठे हुए थे। उनम अथाह शक्ति थी जो खतरे को सामन देखकर आदमी म प्रवेश कर जाती है।

मैं तम्बू के बाहर आया और टीले पर चढकर मैंन उजाड धरती की ओर देखा। पौ फटने के समय पुल की रेलिंग बडी और काली दिखाई दे रही थी। हवा बद हो गई। चारा ओर सनाटा। दुश्मन अपनी सीमा के पार आया हुआ नजर आता था—मोर्चे, झाडियो से दूर कुछ तम्बू।

अचानक मेरे निकट एक भडाका सा हुआ। मैं चौंक गया और झट बदूक सभाली। मेरा बदूकची भी मेरे पास ही सास रोककर बठ गया। हमने चारो ओर देखा—दोनो सीमाआ के बीच पडी हुई सूनी धरती को—।

वास्तव म यह एक काला तीतर था जो पदचाप सुनकर सरकडा मे से फडफडाता हुआ बाहर आ गया था। वह सीना फलाकर खतरे वाली साची

धरती पर जा पहुचा। गुटर गुटर करते हुए उसने एक ज़ोरदार किलकारी छोडी, जो मुझे ऐसी लगी जैसे वह कह रहा हो 'सुबहान तेरी कुदरत। तीतर आमतौर पर डरपोक होता है, वह अपनी परछाई तक से डर जाता है। बारूद की अगर गध आ जाए तो वही गिर पडे। मै खुद कई बार बदूक उठाता तो पटाखा चलने से पहले ही वह गिर जाते।

मैंन पहले कभी इस डरपाक लेकिन वाके पछी को इतन पास से नही दखा था। फूल हुए पख, सजीली गदन, और खोजिया वाली चाल। ठुमक-ठुमक चलत हुए उसने चौतरफा एक तेज़ चमकीली नज़र फेंकी। उसकी आवाज़ वीरान को चीरती हुई उठी और सरकडो के ऊपर गूज गई, मद वह रही नदी के पानी के ऊपर और फिर पुल के ऊपर और फिर साझी उजाड धरती के ऊपर। उनका स्वर इतना ऊचा और निडर था कि मुझे उसकी शक्ति पर आश्चय हुआ।

मेरा हाथ फिर वदूक की ओर गया कि इस मज़ेदार तीतर का निशाना बना लू। पर मेरे वदूकची न मेरा हाथ पकड लिया। उसके एक-दम रोकने से मैं समझ गया कि क्या होने वाला था। मेरी बदूक मे से गोली निकलती तो तुरन्त जग छिड जाने का खतरा था। पहली गोली चलती तो उसका जवाब दुश्मन की ओर से आता और फिर तबाही मच जाती

मेरी सास रुक गई।

तीतर को लडाई का क्या पता था, या शायद उसे खतरे का पूरा एहसास था और वह उडकर उस सूनी मौत की वादी मे आ गया था, जो इस समय सबस ज्यादा सुरक्षित जगह थी। फिर उसन एक ऊची किलकारी मारी जैसे आकाश मे बिगुल की आवाज़ गोदी जा रही हो। शायद वह सीमा के पार अपनी साथिन को आवाज़ दे रहा था। शायद किसी ईख के खेत म उसकी काली तीतरी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। किरमिची गदन धरती को ठाग मारती हुई चोच, और अपने साथी के लिए बेचनी मे बन्द की हुई आखें। खेत मे वह इस काले तीतर के लिए शायद तडप रही हो, बिछोह से व्याकुल। धरती के अन्तर्राष्ट्रीय कानून काले तीतर को अपनी प्रेयसी के मिलन से रोक नहीं सकते। न ही दाना ओर की फौजें।

मेरे बदूकची न कहा, "जनाब, पछी को खतरे का पता लग जाता है। सारे जानवरो को एसी बुद्धि होती है। काले तीतर को भी पता था कि फायर नही होगा। वह इस बात को भाप गया, दलीलो के बिना, सबूत के बिना। उसे दिव्य ज्ञान है। वह जानता है कि किसीम हिम्मत नही है कि गोली चला सके।"

मैंने देखा कि एक सुनहरी धब्बा उसके काले पखो मे चमक रहा था और यह काले पख उसके पेट के ऊपर के भूरे पखो म मिल गए थे। वह सवेर की ठडी, शान्त और ताजी हवा पी रहा था, और बडी मटक और दिलेरी से चल रहा था। उसके सुन्दर काले अस्तित्व ने उजाड धरती मे जान डाल दी थी। अब फिर वह और ऊचे स्वर मे बोला। परली ओर खाइया म छिपे हुए मुसलमान सिपाहियो को उसकी आवाज के स्वर ऐसे लगे जैसे वह कह रहा हो सुबहान तेरी कुदरत। यह पछी सवेर के समय अल्लाह की तारीफ कर रहा था। हिन्दू और सिख सिपाहियो को काले तीतर की आवाज मे 'सुबहान तेरी कुदरत' नही सुनाई दी, बल्कि उन्हे उसी लय पर सुर म बधी आवाज ऐसी लगी जस वह कह रहा हो लहसुन, प्याज, अदरक।' उनका जी किया कि इस मोटे काले तीतर को लहसुन और प्याज से भूनकर खाए तो कितना स्वाद लगे।

पूरब के आकाश मे हरे और किरमिची रग मिल रहे थे। सूरज की पहली किरणा न ऊचे सरकडो को केसरी रग म रग दिया। हमारे सिर के ऊपर से मुर्गाबियो की डार गुजरी जो नदी की ओर पलट रही थी। मरे अदली ने कहा, जनाब लाठी मारें तो इनम से कइया को नीचे गिरा लें। बहुत नीचे उड रही है। पहले कभी भी इतने पास मेरे सिर के ऊपर से नही उडी।"

काला तीतर फिर जोर से बोला और जवाब म सीमा के पार से एक तीतरी की आवाज आई। उसन सिर घुमाया चोच से हवा मे एक ठाग मारा और नदी के दलदल वाले किनारे के ऊपर से होता हुआ उजाड धरती के दूसरी ओर चला गया।

दानो ओर के फौजी खाइयो मे बदूकें सभाले ऐस बठे हुए थे, जस इस ऐतिहासिक क्षण न उन्हें कील कर बुत बना दिया हो।

कथा नैनदेव की

कवल दीप

हमेशा की तरह जब हवाई जहाज टीले की सीध मे पहुचा, तो उससे बम अलग होता हुआ नजर आया और हमेशा की तरह नैनदेव चदरवा के साथ खाई म छिपा हुआ बठा था।

"चदा ! इस बार भी बम पहली वाली जगह पर गिरेगा तयार रहना।" नैनदव ने चदरवा को झझोडकर कहा।

'अच्छा पास ही है अच्छा लोहा हाथ लगेगा। हमारे घर म तो परसा से बाजरा खतम है ' चदरवा अभी कह ही रही थी कि बम धरती पर आ गिरा, और फिर जोर का धमाका हुआ, धरती काप गई, आखो को चाधियाती हुई तज रोशनी हुई और मिट्टी का गुब्बार आसमान की ओर उठ चला। धमाके के साथ बम के स्प्लिटज रेंज पर इस तरह उडे कि रास्ते मे अगर लोहे की दीवार भी होती तो तोडकर गुजर जाते। धमाके के कुछ मिनट बाद ही आसमान पर छाई हुई मिट्टी के सिवा सब शान्त हो गया, पर उसी समय रेंज पर बनी हुई खाइया मे से सकडो बाल्लो जसे, चीथडो म अधनगे से—बच्चे जवान, बूढे और औरतें विस्फोट स्थल की ओर दौड पडे। एक हुल्लड मच गया 'यह मरा है यह मेरा है", और सबने बम के स्प्लिटज इकट्ठे करने शुरू कर दिए। जो विस्फोट-स्थल के निकट थे उनके हाथ ज्यादा लोहा आया।

जिला पडारपुर के गाव बेलवाडी के दक्षिण मे हवाई फौज की रेंज है, जिसपर हवाई जहाज निशानेबाजी किया करते हैं। रेंज का इलाका कई

साला से बमा, गालिया, रॉकेटा और मिसाइला की मार गा साकर एसा हो गया है जैस चाद की धरती का एक टुकडा हो, वह चाद नहीं जिसकी उपमा कोई अपनी प्रेमिका क चेहर स दता है, पर वह जा वज्ञानिका को दूरबीन क जरिए नजर आता है। बजर जमीन, छोटी-बडी चट्टाना का बिखराव और बमा स बनी अनक खाइया-गड्ढे। कही-कहीं एकाध झाडी या घास का टुकडा नजर आता है, जा न जान कस रोज की बर्बादी स बचा आ रहा है।

हवाइ अड्डे पर दस के कोन-कान से हवाई जहाज आत हैं, अपनी निशानेबाज़ी और तबाही की प्रैक्टिस बेलवाडी रेंज पर करत हैं और फिर वापस चले जाते है। यह क्रम करीब सार साल चलता रहता है। इस धरती के टुकडे न अपनी छाती पर कई प्रकार के बम गोलिया और रॉकेट सह हागे। शायद ही हवाई फौज के पास कुछ और हा जो यहा न आजमाया गया हा। कक्रीट और स्टील को तोडन वाने आग लगाने वान, इन्साना को मारने वाले और बिल्डिगें गिरान वाले बम। प्रक्टिस करन वाले कुछ थोड स किलो वजन के बमा से लेकर कई टन वज़न वाले बम। इसी तरह अनेक प्रकार के रॉकेट, मिसाइलें और गालिया। हवाई जहाज से चली हुई गालिया की ऐसी बौछार कि सावन के काले बादला को मात कर द—एक मिनट म कई हजार गोलिया हवाई जहाज की तोप म स ऐसे निकलती हैं जैसे चीनी अजगर अपन मुह म लावा उगल रहा हो। टररररर और धरती की छाती छलनी छलनी

सूरज पच्छिम म डूबन लगा तो सार हवाई जहाज वापस चले गए। ननदव न अपना और चदरवा का इकटठा किया हुआ लोहा एक छोटे-स हथठले पर रखा और गाव की आर लौट गया। ननन्दव और चदरवा बचपन से ही साथ खेले थे और अब, जब जवानी म पाव धरा तो साथ ही रेंज पर बम का लाहा, गालियो के पीतल के खोल, और इसी प्रकार की अन्य धातुए चुनन के लिए आत। नंनदव क मा-बाप बहुत बूढे थे और वह उनका इकलाता पुत्र था। उधर चदरवा का पिता दिन भर कच्ची शराब के नशे मे पडा रहता था। उसका एक भाई था जो पडारपुर म चपरासी लगा हुआ था। चदरवा की मा कभी कभार ही रेज पर आती। ज्यादातर घर के

याम म ही लगी रहती। गए चत 'गुडी पाडवा' के त्योहार पर ननदव के पिता गोरख न चदरवा के पिता दगड् स नैनदेव और चदरवा के ब्याह की बात की तो दगड् न बेमियक कह दिया कि जो पाच सौ रुपया लाकर दगा, वही चदरवा से ब्याह कर सकता है। गोरख को गुस्सा तो आया पर चुपचाप वापस लौट गया। उस अपन बेटे और चदरवा की मुहब्बत के बारे म पता था, पर पाच सौ रुपय की माग बहुत ज्यादा थी। आखिर नैनदेव के कहन पर फिर वह दगड् के पास गया और दिवाली तक रकम देन का वायदा करके, एक रुपया देकर चला आया। ननदेव को विश्वास था कि वह दिवाली तक पाच सौ रुपये इकट्ठे कर लेगा। गोरख को भी अपन बेट पर विश्वास था क्याकि सारे गाव म सबसे ज्यादा माल ननदेव ही लेकर आता था।

हर रोज़ बम गिरते और गोलिया चलती देखकर बेलवाडी वाला को अच्छी तरह अदाजा हो गया था कि नीचे आता हुआ बम किस जगह गिरगा। नैनदेव का अदाजा सबसे ठीक निकलता और वह विस्फाट स्थल के पास ही किसी गढे म छिपकर बठ जाता। या भी उसकी टागो मे ऐसी फुर्ती थी जो और किसीके पास नही थी। जो भी दौडकर पहले पहुचता वही बम के बडे टुकडे पर कब्जा जमा सकता था। कई बार बम ज्यादा पास गिर जाता या अदाजा गलत हो जाता तो आदमी की बोटी तक न मिलती। बलवाडी म शायद ही कोई ऐसा परिवार था जिसके घर स एकाध आदमी रेंज पर बलि न चढा हो, और और कितने ही लोग ऐसे थे जो अपग हो चुके थे।

गरीब के लिए रोटी भी एक चुम्बक की तरह होती है जो उस मौत के मुह म भी खीचकर ले आती है। बेलवाडी वाला को शताब्दिया से एक चीज विरासत मे मिलती चली आ रही थी और वह थी भूख, जिससे निबटने के लिए दो राटिया और चुटकी भर मिच काफी थी—पर यह सवाल इतना बडा था कि कोई इसका हल नही खोज सका था !

जबसे हवाई फौज ने बेलवाडी के पास फायरिंग रेंज खोली थी, वहा क लोग अपने आपको इलाके मे सबसे ज्यादा खुशनसीब समझते थ। व लाहा पीतल और अन्य धातुए इकट्ठी करते और विट्ठल ठेकेदार को

देकर बदले म पैसे या जरूरत की चीजें ले लेत। व जानत थे कि ठेकेदार उन्ह धातुआ के माल का दसवा हिस्सा भी नही देता पर वह कर भी क्या सकत थे। शहर जाकर आप बेचत तो पुलिस सरकारी माल की चोरी क इलजाम म पकड लेती। कभी किसीको खयाल भी नही आया कि विटठल ठेकेदार भी तो शहर जाकर ही माल बेचता था, पर उस पुलिस न कभी नही पकडा। अगर कभी यह खयाल आया भी ता जवाब के बारे म कभी कोई परशान नही हुआ था। एक दो बार कुछ मराठा ने बेलवाडी म धातुआ का व्यापार करना चाहा पर वह न जान कुछ दिना बाद किस हल्की हवा मे उड गए और विटठल ठेकेदार ही कायम रहा। वैस विटठल ठेकेदार बहुत दयावान था और आवश्यकता पडने पर बेलवाडी वाला को उधार पैसा टका दे दिया करता था। पर उसका भी एक उसूल था कि मूल और ब्याज दोना माल के रूप म ही वापस होते थ। जरूरी था कि जो विटठल के लिए माल इकटठा करन म टागें, बाह गवा चुके थ व उसकी दया क पात्र नही बन सकते थे।

चदरबा और उसकी मा ने दगडू पर बहुत जोर डाला कि वह ब्याह के लिए पसा की माग न करे पर वह नही माना। ब्याह की बातचीत क कुछ दिन बाद ननदेव अपनी जान खतर म डालकर चदरबा का बचा लाया था तब भी वह पाच सौ रुपये से पीछा न छुडा सका। बल्कि अगर चदरबा बच गई थी तो दगडू के लिए उसकी रकम बच गई थी।

शाम को ननदेव दगडू स मिला तो दगडू न उस शाबाशी देत हुए कहा 'सुना है कि तुम्हारी होने वाली आज जान लगी थी। दगडू की आवाज म मजाक धन्यवाद और डर मिले-जुले थे।

'चाचा! मेर होत वह नहा जाती।

शाबाश बेटा! मुझे तुमसे यही उम्मीद है। और बेलवाडी वाले ता निरे डरपोक हैं। बम चले तो बच्चा को भी रेंज पर फेंककर चल आए।'

हा चाचा! ऐसे बहुत है जा बच्चा का वहा फेंक आते हैं।' ननदेव ने गुस्से म भरकर कहा।

तुम्हारी जोडी खूब रहेगी। बस, जल्दी स रकम इकटठी करा अब। इतना कह दगडू आग बढ गया।

चदरवा वह दिन कभी नही भूल सकती थी, बल्कि उस दिन की घटना का ध्यान आते ही वह डर स सहम जाती। अभी हवाई जहाजो न बम फेंकने शुरू नही किए थे और वह अपने ध्यान मे मग्न रेंज के बीच से होकर चली आ रही थी। ननदेव उस दिन पहले से ही आकर एक गड्ढे में बम गिरने के इतजार मे बठा हुआ था। हवाई जहाज न पहला बम छोडा तो ननदेव की निगाह उसीकी ओर थी। उसने बम की उडान स आगे निगाह बढाकर रेंज म उस जगह की ओर देखा जहा बम अदाजे के अनुसार गिरना चाहिए था। उधर देखकर वह एक पल के लिए पत्थर की तरह सुन्न हो गया। उसन देखा कि चदरवा उसी जगह अपने ध्यान म मस्त चली आ रही है। नैनदेव गड्ढे म से बाहर कूद आया और चदरवा के पास पहुच गया, और पता नही अचानक उसमे एकदम इतनी ताकत कहा से आ गई कि वह चदरवा को उठाकर कुछ गज दूर एक गड्ढे मे उतर गया। गड्ढे मे उसन चदरवा को फेंककर खुद उसमे छलाग लगा दी थी। उनके गड्ढे मे पहुचने की देर थी कि बम का धमाका हुआ और सारी धरती काप गई। दोनो गड्ढे मे कितनी ही देर तक चुपचाप बुत की तरह पड़े रहे।

कुछ देर बाद नैनदेव को होश आया और उसने चन्दरवा के कधे को हिलाया, 'ऐ चन्दा! अकेली ही मग्न चली थी मुझे भी बुला लिया होता!

चदरवा न कुछ न कहा और नैनदेव की गोदी मे अपना सिर रखकर रोने लगी।

'पगली, रोती क्यों है? अभी तो हम सलामत हैं।"

नहीं! मुझे बम के धमाके ने! बहुत डर लग रहा है।" चदरवा डर से काप रही थी।

'चलो उठो, चलें! वह दूसरा बम फेंकने आ रहा है—एक बार तो बच गए"

नैनदेव न चदरवा को सहारा देकर गड्ढे से बाहर निकाला और थोडी दूर बड के पेड़ के पीछे छिपकर बैठ गए। चदरवा अभी तक डर से काप जा रही थी, और ज्यो-ज्यो उस धमाके का [illegible]

का हाथ कसकर पकड़ लेती।

'चन्दो ! तुम रेंज पर न आया करो।" ननदव चदरवा के पास बैठा उसकी धोती के पल्ले को अपनी उंगली में गिर्द लपेट खोल रहा था।

'न आऊं तो घर का खर्च कैसे चले ? बापू का तो तुम्हें पता ही है, वह तो तिनका तोड़ने को भी राजी नहीं है। बस शराब की हंडिया पीकर पड़ा रहता है।"

"तुम उसे पड़ा रहने दो। मुझे जो कुछ भी रेंज से मिलेगा उसका आधा तुम्हें दे दिया करूंगा।"

'हां जी, जैसे भला बड़ी सयानी तरकीब सोची है। अगर मुझे खतरा है तो तुम्हें भी तो है।'

"मेरी और बात है, मैं मर्द हूं। यह गोलियां और बम मुझे ऐसे लगते है जैसे हवाई जहाज तुम्हारे बुंदे और बालियां फेंक रहे हों

'नहीं, मुझे नहीं चाहिए ऐसी मर्दानगी, मैं भी तुम्हारे साथ आया करूंगी '

"अच्छा बाबा, आ जाना, ज्यादा ही शौक है कमाई करने का। ब्याह के बाद तुम्हारा बापू क्या करेगा ?" ननदव ने गुस्से से कहा।

'ब्याह के बाद वह जो करे या न करे, वह मेरा जिम्मा नहीं "

'ऐ चंदी ! मेरी बात मानो। तुम आ जाया करना पर इस बड़ के नीचे बैठ जाया करना। मैं माल इकट्ठा करके तुम्हारी रखवाली में छोड़ दिया करूंगा, और इस तरह मैं रेंज के ज्यादा फेरे लगा सकूंगा। ठीक ?

ऐसे तो तुम जरूर पांच सौ रुपये इकट्ठे कर लोगे !" चदरवा ने उसे छेड़ते हुए कहा।

'लो, क्यों नहीं ? तीन सौ तो मेरे पास हो गए हैं। और पता है कल शाम मैंने यहां छोटे जहाज आते देखे थे, वही जो गोलियां चलाते हैं पीतल के खोल फेंकते हैं। बस, ईश्वर करे, बारिश न हो और जहाज उड़ते रहें। तब फिर तुम देखना पीतल की बोरी ठेकेदार के घर फेंककर आऊंगा। सौ, डेढ़ सौ तो मिल ही जाएगा। बाकी बापू से कहूंगा कि ठेकेदार से उधार ले ले। ठेकेदार बापू को नाह नहीं करेगा।"

'ना बाबा ना चदरवा ने डरते हुए कहा 'गोलियों के खोल चुनना

तो बडा खतरनाक है। पता है न, बेलवाडी के ज्यादा लोग गोलिया के खोल चुनते हुए ही मार गए है।

"अरे लडकी ! अच्छी बात बोल ! तुम्हे मेरा इतजार होगा तो मुझे अम्बाजी भी नही रोक सकती !"

"हटो, बेधर्मी कही के, कोई देवी-देवताओ के बारे मे ऐसे बोलता है ?" चदरवा ने नैनदेव के कधे पर धप मारते हुए कहा।

फाइटर जहाज आम तौर पर रेंज पर अपनी तोपो की निशानेबाजी करने के लिए आया करते इसलिए चार पाच कनवस के फ्रेम खडे किए जाते जिनपर जहाज निशाना लगाते। बेलवाडी वालो को अनुभव से पता हो गया था कि निशाने लगाने के लिए नीचे को आता हुआ जहाज किस फ्रेम की ओर आ रहा है, और वह बराबर वाले फ्रेम के नीचे छिपे रहते, ताकि जल्दी से पीतल के खोल उठा सकें। छिपने से कोई सुरक्षा तो न मिलती, पर पाइलट की नजर से ओझल होना जरूरी था। कई बार अदाजा गलत हो जाता या पाइलट का निशाना गलत हो जाता तो फ्रेम के पीछे बठने वाला ही निशाना बन जाता। कई बार गोली किसी सख्त जगह या पत्थर से लगकर रास्ता बदल लेती या पत्थर का ही टुकडा टूट-कर गोली की तरह फ्रेम के पीछे बठे हुए आदमी को भी ले बठता।

दोपहर का समय था। ननदेव के लिए पाच सौ रुपये इकट्ठे करने मे बीस दिन और रहते थे। वह बहुत खुश-खुश नजर आता था क्योकि घर मे बाबा आदम के जमाने की सदूकची म चार सौ से कुछ ऊपर ही पडे हुए थे और ताले की चाबी उसने धागे मे पिरोकर गले म लटकाई हुई थी। आते जाते गाव के लडके उससे उसकी खुशी के कारण मजाक करते और उसके भाग्य पर ईर्ष्या भी। ननदेव सबको हसकर जवाब देता और साथ ही ब्याह के अवसर पर आने की बात पक्की कर देता।

एक दिन वह सवेरे सवेर उठा और अपने हथठेले को लेकर चदरवा के घर की ओर चल दिया। चदरवा के घर के बाहर चदरवा का बापू दगडू बैठा हुआ था।

'क्या ननदव, आज सवेरे-सवेर ?"

"हा चाचा आज सवेरे सवेरे काम निबटाकर मेले म जाऊगा।'

दगडू ने आवाज देकर चदरबा को अदर से बुलाया। दगडू का भी लालच रहता कि उसकी बेटी ज्यादा से ज्यादा माल लाए। उसे चिन्ता थी कि चदरबा के ब्याह के बाद वह क्या करेगा। पर करता क्या बेटी का मामला, घर में भी नहीं रख सकता था। आखिर रिश्तेदार क्या कहेंगे।

ननदेव और चदरबा रेंज की ओर चल दिए।

अभी से सोने नहीं देते, ब्याह के बाद न जाने क्या करोगे?' चदरबा ने उसे छेड़ते हुए कहा।

हम सोकर क्या लेना है बस बातें किया करेंगे, बताऊ कैसे?'

'ना बाबा ना रहने दो अपनी बातें अपने पास।' चदरबा ने कुछ दूर हटते हुए कहा।

'आज बम फेंकने वाले जहाज सवेरे-सवेरे बम फेंकने आ रहे हैं। बापू अभी हवाई अड्डे की ओर से आया है, उसने वाड में से उन्हें तैयारी करते हुए देखा है।' ननदेव ने अपनी जानकारी पर गर्व करते हुए कहा।

'अगर थोड़ी देर करके आ जाते तो क्या लुट जाता?' चदरबा ने अगड़ाई ली और कहा। उसे अपनी नींद खराब हो जाने का दुःख था।

'चन्नी रानी! सवेरे-सवेरे हम काम खत्म करके मेले मे जाएगे—पता नहीं दशहरा है आज?'

अरे बाबा! मैं तो भूल ही गई।"

ननदेव रेंज पर चला गया, और चदरबा उसी बड़ के पीछे बैठ गई जहां से वह ननदेव को देख सकती थी। इतने सवेरे और कोई रेंज पर नहीं आया था।

हवाई जहाज आया और उसने ऊपर एक चक्कर लगाया और दूसरे चक्कर पर उसने एक प्रैक्टिस बम फेंका। ननदेव जानता था कि प्रैक्टिस बम बिलकुल खतरनाक नहीं होते। वे फूटे बिना ही थोड़ी सी रोशनी और धुआं करते हैं। ननदेव बम के पास गया और जब बम बुझ गया तो उठा कर चदरबा के पास ले आया।

'लो पकड़ो, यह है पंद्रह सेर लोहा। उसने बम को चदरबा के पास फेंकते हुए कहा, और फिर रेंज पर चला गया।

इस तरह ननदेव ने पांच बम इकट्ठे किए। वह बड़े इत्मीनान से रेंज

पर घूम रहा था, क्योंकि प्रैक्टिस बम से कोई खतरा नहीं था।

हवाई जहाज ऊपर चक्कर लगा रहा था और हर चक्कर पर एक बम फेंक जाता था। हवाई जहाज ने छठा चक्कर लगाया और बम छोड दिया। ननदेव गिरते हुए बम को देख रहा था। बम धरती के थोडा पास आया तो ननदेव को पता लगा, कि बम कुछ बडा है। एकदम उसका माथा ठनका कि हवाई जहाज ने इस बार असली बम फेंका है। उसने अभी गड्ढे की ओर दो चार कदम ही उठाए थे कि बम धरती पर आ गिरा।

चदरबा चौंककर उठ खडी हुई और रेंज की उस जगह की ओर दौड पडी, जहां कुछ देर पहले ननदेव खडा हुआ था।

चारों ओर हवा में मिट्टी ही मिट्टी थी, कुछ भी दीख नहीं पड रहा था। चदरबा नैनी नैनी पुकारती हुई इधर उधर दौडती रही पर कोई जवाब न आया। कुछ देर बाद मिट्टी नीचे बैठ गई तो उसने देखा कि जिस जगह पर ननदेव खडा हुआ था वहां अब एक बडा सा गड्ढा बना हुआ है
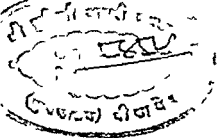
दीवारों पर चिपकी आहे

दशन मितवा

जिसके काना म भनक पडती वह अपना सारा काम बीच म ही छोडकर बचनी ब्राह्मणी के घर की ओर चल देती—और बूढे-बुजुग चौपाल की ओर।

बिशनी को इस गाव म ब्याह कर आए पूरे पद्रह बरस हो चुके थ। अब वह पैंतीस बरस के इधर उधर ही होगी पर देखन मे अभी भी ऐसी लगती थी, जैसे पच्चीस बरस की भरी-पूरी जवान औरत हो। रग गोरा-गोरा—बडी-बडी आखें बाल अलबत्ता आधे से ज्यादा सफेद हो गए थे।

वह गाव म लडकिया जमी शौकीन बुढिया कहलाती थी। घटा शीशे मे अपना मुह देखती रहती थी ददासा मलती, अपने सफेद सफेद दात देखती और आखो मे उस समुद्र जैसी गहराई दिखाई देती। शीशे म अपनी दोना आखो म देखते देखते वह कही गहरे उतर जाती और पल मात्र म भूल जाती कि वह आप आप ही तो होनी थी।

बेहद शरीफ! सारे दिन घर की चारदीवारी के अदर रहकर घर का काम करती रहती, घर के बाहर पर न धरती जस कोई अभिशप्त आत्मा हो। शर्मीली इतनी कि घर म भी बालिश्त भर घूघट निकाले रहती। उसके सुदर होने के कभी गाव म खूब चर्चे थे पर शौकीन होन क अब भी

जब ब्याही आई थी, तब गाव के जवान लडके उसे देखन के लिए

सारा सारा दिन गली के चक्कर काटते थे। एक-दूसरे से बढ चढकर उसके बार मे बातें बना बनाकर सुनाते थे। अगर कही उसके घरवाल के साथ कोई यार दोस्त घर आ जाता, या कोई हसी हसी मे उससे मजाक कर देता, तो वह शम से पानी-पानी हो जाती थी। काम करन की जगह गडी जाती। अग अग शम से लाल सुख होकर उसी जगह स्थिर हो जाता और वह घूघट का पल्ला और भी नीचा कर लेती। उतनी दर तक काम छोडे रखती जब तक वह आया हुआ आदमी चला न जाता या कही ओट मे न हो जाता।

उसका आदमी जोरासिह छह फुटा जवान था। चौडी छाती, गठीला शरीर। जमीन का मालिक नौकर-चाकर वह हवेली वाले सरदारो का काका कहलाता था। शर्मीला सा। वसे यह बात कितनी अजीब और ऊपरी-सी लगती है कि हवेली वाले सरदारा का 'काका' और शर्मीला !

दोना की जोडी बडी फबती थी। जब भी वे दोना साथ गाव से कही बाहर जाते, चारा ओर जैसे आग सी लग जाती। दखने वाले झुलस से जाते पर जब तक व आखा से ओझल न हो जात, नजरें उनका पीछा करती रहती।

'दखो कैसी जाडी बनाई है ईश्वर न ! कौन कहेगा कि य मद-औरत है, साले बिलकुल सगे बहन भाई लगते हैं " लोग कहते।

सास उसे बेटियो की तरह प्यार करती। आते ही उसने सबका दिल मोह लिया था। यो भी वह अच्छे घर की बेटी थी, लेन दन म पीहर वाला न कोई कसर नहा छोडी थी। गाव वाला का कहना था कि घर-आगन भर दिया था।

सारा-सारा दिन वह घर का काम करते न थकती। रात को कभी सास के सिरहान बैठ उसका सिर दबाती और कभी अपने मद की टागें दबाती और फिर पूरे दस बरस ऐस ही बीत गए थे।

—पर अभी भी विशनी की बजर कोख से किसी बीज का अकुर नही फूटा था। जब भी कही उसका जिक्र चल जाता, सब उमीम हमदर्दी जतात— जसी ईश्वर न शक्ल-सूरत दी है, अगर कही करम भी एसे ही दे देता तो दस साल हो गए अभी बिचारी की कोख सूनी ही है ।

पहले चार पाच बरस तो इस बात पर किसीने ध्यान न दिया, सिर्फ जोरासिंह की मा का जरूर चिन्ता लगी हुई थी कि उनके आगन म काई बालक क्यो नही खेलता, जो घर के बाहर जाती हुइ अम्मा का पल्ला पकड-पकडकर खीचता उसकी टागा स लटक जाता जब वह हसता ता सार आगन म चारो ओर आकाश म थडे तारा के ढेर लग जात

'अरे जोरा ! कोई इलाज-उलूज ही करवाकर देख ले ने। किसी डाक्टर को ही दिखा ला बहू को या किसी सयान के पास ही ले जा न " जब कभी मा कहती तो जोरा हसते हसते शर्मिन्दा-सा हो घर के बाहर चला जाता।

"पूर पाच बरस हो गए अब तक तो तीन बच्चे खेलते होत आगन म यह तो घर बस ही सूना सूना लगता है।" मा आह भरती। उस आह म स जसे जमीन और आसमान दोनो पिघल से जाते। ऐसी बात जब बिशनी के काना मे पडती, वह भीतर जाकर रा पडती।

जोरा का मन भी बुरा बुरा सा हा जाता था। चाह वह मा की बातें अनसुनी करके हसता हुआ घर स बाहर चला जाता था, पर व बातें घर के बाहर भी उसका पीछा नही छोडती थी, जाक बनी उसके चिपटी रहती थी। उसका दिल बुझन सा लगता, जैसे भीतर से कुछ खुरचा जा रहा हो। घर के बाहर भी उससे किसीके पास खडा न हुआ जाता। पिता बनने की चाह जोरा के दिल म भी जाग उठी थी। उसका अन्तर् भी चाहने लगा था कि उसका भी कोई बेटा हो उसकी गोदी मे चढे, कधे पर चढे स्कूल जाए पढे लिखे। जब भी कभी वह अपन बाद के ब्याहे गाव के किसी लडके को गोदी मे बच्चा उठाए देख लेता या किसीसे सुन लेता, भई फलाने का लडका हुआ है जगीरे की बहू की गोद म लडकी है तो उस चक्कर से आन का हो जाते !

"क्या बात है अरे जोरा ! अभी तक एक भी नही किया गया, कही कजर क तुम ही तो अरे हमारे पास भेज एक दिन ' उसे यार दास्तो के ऐसे मीठे मजाक भी जहर मे बुझी हुई सुइया बन बनकर दिल मे चुभन लगत। उसे वे बातें पिघला हुआ गम सिक्का मालूम होती जो उसके काना म से होकर उसके सारे शरीर मे धसता जा रहा हो।

वह उलटे परा घर लौट आता। गुम सुम सा बैठा रहता। खाना न खाता, रातो को न सोता। जब बिशनी उसके पास आती तो वह कितनी ही देर तक उसके मुह की ओर देखे जाता। बिशनी सिसकती रह जाती। रजाई को वह दाता म लेकर कितनी कितनी देर वह रोया करती। दिल का सारा दद आखा का पानी बनकर चारपाई पर बिछी चादर म समा जाता।

बिशनी ने कितनी ही बार जोरा से कहा था कि किसी डाक्टर के पास चले चलें पर यह बात उसे बिलकुल पस द नही आती थी। अगर कही डॉक्टर ने, कजर के बच्चे ने, मुझम ही कसूर निकाल दिया, तो फिर तो मरन हो जाएगा। फिर बिशनी को क्या मुह दिखाऊगा ?' यह ख्याल आते ही वह काप जाता— अगर कही लोगा को पता चल गया फिर तो वे वसे ही जीना दूभर कर देंगे, व तो अब भी चन नही लेन देते।

पहले जोरा को बिशनी से बेहद मुहब्बत थी। वह एक मिनट भी उसे आखो से ओझल न होन देता। धीर धीरे जोरा की रस्मी सी बातें ही रह गई थी। पहली सी बात नही रही। पर इस बात का और किसीका पता नही था। अगर कही जोरा बुरा भला बोल भी पडता वह मन पर न लाती थी, बल्कि हस पडती पर उसकी वह हसी बिलकुल खोखली होती, जग लगी हुई हसी। जब जारा उसके पास से उस बिन बुलाए गुजर जाता, तो वह पानी म पडी हुई नमक की डली की तरह गल जाती।

मा की बात भी बढते बढते गालियों और थप्पडा तक पहुच गई थी। बिशनी विचारी, बिचारी सी बनी सब कुछ सहे जाती धौल धप्पा भी— पर सास जब जोरा से दूसरा ब्याह करवाने के लिए कहती तो बिशनी धुर अन्दर तक बेल की तरह सूख जाती।

इसका मुह और कितनी देर देखेगा इससे अब क्या लेना है, करमो जली से! इसे ता तू जब ब्याहकर लाया था, मरा तभी माथा ठनक गया था। इसे घर के अन्दर लाते हुए मेरे पर म ऐसी ठोकर लगी थी कि अगूठे का नाखन ही उतर गया था मारा मैंन कहा, ईश्वर यह वही वानक बन गया जिसका डर था परे छोड अब इसका पल्ला। सोन जसा लडका है, तुझे लडकिया का घाटा है ?" पर यह बात अभी घर के बाहर नही निकली

थी कि गाव की गलियो म फैल जाती। जो कुछ भी होता था, घर की चारदीवारी म होता था और वह घर अब उसको काल कोठरी जसा लगने लगा था जिसकी दीवारें उस हर पल तग और तग लगने लगी थीं। और फिर जोरा न ब्याह करवाने की पक्की ठान ली। घर मे सारा सारा दिन उसके ब्याह की बातें चलने लगी थी। जमीन जायदाद का कोई तो वारिस होना ही चाहिए था। गाव मे हवेली वाले सरदार थे और आसपास के गावा म सरदारजी', 'सरदारजी' होती थी। कोई जोरा से बच्चा गोद लेने के लिए कहता तो जोरा कहने वाले के मुह पर तो सिर मुकाए हा कह दता लेकिन जब बात जमीन-जायदाद पर आ जाती तो दिल लरजा खा जाता, 'भई उसके सब कुछ का मालिक किसी बेगाने को बनना था ?'

अब विशनी का सिर चादी जैसा सफेद हो गया था। जोरा उससे भी ज्यादा बूढा हो गया लगता था, फिर भी उसके ब्याह के लिए कही न कही स रिश्ता आ जाता। हर कोई चाहता था कि मेरा करवाया हुआ रिश्ता हवेली वाले सरदारा के 'काके' को चढे काका' जो अब बाबा लगता था। लडकी लडकी, मैंने कहा लडकी का क्या पूछते हो वह तो ऐसी है जस शहतूत की छडी, सरसा की गदल—नरम, नाजुक कोई आकर बताता। 'फलाने की लडकी देखो ता आखें सेर हो जाती हैं कपास की छडी जसी लम्बी पतली, सफेद सगमरमर की मूरत हाथ जरूर तग है कहो तो चार पाच हजार म काम बन जाएगा "

—ऐसी बातें गाव म कब तक छिपी रहती। जोरा की मा खुद भी बचनी ब्राह्मणी क पास जाकर कह आई थी, "भई, जोरा के लिए कही बात चलाओ," और वहा स बात चलते चलते गाव के घर घर पहुच गई, 'अरी, जोरा अब ब्याह करवान को कह रहा है कब्र मे टागें लटकी हुई है नास जाए पहली के बच्चा नही हुआ और चाहे कसूर अपने म ही हो, दोष विचारी गरीबनी पर "

'नइ आएगी तो क्या आते ही जनकर बच्चा गोद म डाल देगी ? और क्या जाने पीछे से ही ल आए

गाव की हमदर्दी बिशनी स जुड गई थी। "बिचारी फकीरनी बिशनी जसी कौन-सी बन जाएगी ? साले अब धक्के दे-देकर बाहर हाक देंगे हे ईश्वर ! वह तो बिचारी वैसे ही सती सावित्री थी।" कुछ ही दिनो के बाद सारा गाव पलट पलटकर देखता था। जोरा एक और ब्याह लाया था। मुश्किल से उन्नीस बीस बरस की लडकी लगती है और आप पचास से ऊपर लगता है। किसीने अपनी बेटी को कुए मे धक्का दे दिया इससे तो पैदा होत ही गला घोट देते। लगा दी बूढे खूसट के पीछे यह भला अब पराए मुडेरे नही फादेगी तो और क्या करेगी उस बिचारी की जान अलग दुखी करेंगे रह गई बिचारी आह भरने लायक अब उसका जोर भी क्या रह गया ? ' पूरा गाव बातें करता।

जोरा का ब्याह हो गया। घर जसे खुश-खुश हो गया। मा का पैर धरती पर न पडता था। पर बिशनी की आह हवेली की दीवारो से चिपक कर रह गई थी उसकी आहा से जजर हुई हवेली की दीवारें अभी भी बस ही अचल खडी हुई थी।

बिशनी का जी चाहा, 'अब यहा क्या है, पीहर चलकर बठ।' फिर सोचती 'पीहर मे भी क्या है ? यही है अब तो सब कुछ, यही है। जो मिले जाता है, खा-पीकर गुजारा कर ले। अब रह भी कितनी गई ? पीहर जाकर क्या बन जाएगा ? वे वसे ही गम से मर जाएग। साथ ही उनकी बदनामी हागी, कहगे ससुराल वालो ने निकाल दी, आकर बैठ गई है पीहर मे। हर वक्त मा-बाप का दिल ही दुखेगा। ऐसी ही बातें सोचते-सोचत वह सुन हो जाती।

बात बिशनी के पीहर तक भी पहुच गई थी। पहुचनी ही थी। उन्होंने बहुत जोर लगाया, लेकिन कुछ भी न सवरा। उनके घरो के कगूरे जोरा की हवेली के कगूरा से कितने नीचे हो गए थे ! अन्त मे वे भी खामोश हा गए। सोचा, चलो अब ससुराल म वठी ता है। बेशक जान दुखी है, फिर भी अपने घर तो है। अगर उन्हाने उसे बिलकुल ही घर से निकाल दिया, फिर क्या कर लेंगे '

दिन बीतते-बीतत बिशनी उस घर म फालतू सी हो गई। घर के काम-काज से गुलामी पर आ गई। तडके से लेकर रात गए तक बतन माजने स

लेकर उम गोबर कूडा उठान तक के काम करने पडते थे जब बतन माज रही होती तो हर एक आता, चुपचाप उसके आगे बतन डाल जाता। कपडे धो रही होती तो कपडे।

जब वह अपनी सौत और जोरा को साथ देखती, तो उसे याद आता कभी वह भी सौत की जगह जोरा के साथ हस हसकर बातें किया करती थी। तब उसका दिल रुई की तरह धुन जाता। तुरत उसे लाभे के करतार की बात याद आ जाती, 'पर यार, उन्ह क्या पता है कि किसी चीज की कदर का वे तो साले मास का स्वाद ही चाटना जानते हैं। देख लेना, जब उनका जी भर जाएगा तो रजाई के गिलाफ की तरह उतारकर फेंक देंगे, जिसे आज वह छाती से लगाए फिर रहे है ' ये बातें उसे कितनी सच लगती ! "अरी, कितने दिन ऐसे मोमबत्ती की तरह जलती रहेगी क्या गीले उपले की तरह धुआई जा रही है भीतर ही भीतर कुछसे नहीं होती कोई जतन जुगत ? वह भी तो ले ही आया है बता ! दुनिया म क्या रोज रोज आना है ? ' बचनी ब्राह्मणी की ये बातें सुनकर उसके मन म कितनी ही देर उथल पुथल होती रही। फिर जम कुछ याद आ गया हो, वह उठी और अदर जाकर शीशे के आगे खडी हो गई। उसे खयाल आया— मैं कोई बूढी हो गई हू वही गोरा रग जैसा ब्याहली आई थी तब था वही बडी बडी आखें।

तभी समय का पहिया जस अपनी धुरी पर कई साल उलटा घूम गया हो। उसे याद आया, जब वह अपनी ननद के साथ गाव म किसी ब्याह वाले घर गई थी। उसके कानो म कुछ बोल पडे थे— क्या दगा है न रुई के गाले जसी गुर की सौगध ऐसे जी करता है, भई सामने बिठाकर सारे दिन पूजते रहो शरीर का तो जस हाथ ही न लगाए कि कहीं दाग न पड जाए। पर यार अपनी-अपनी किस्मत की बात है ! अपनी किस्मत म ऐसी कहा, यह तो सरदारो के करमो म ही है ! पर यार उन्ह क्या पता किसी चीज की कदर क्या होती है ! वे तो साले बस मास का स्वाद ही चाटना जानते हैं एसी चीज तो इन्सान फूलो की तरह रखे धूप दे-देकर। दगी है ? जब चलती है कसे जमे धरती मे मद सालो एडिया धरा जाती हैं मैं तो धरम से सारा घर-बार छोड जाऊ ऐसी के लिए

'मैन रहा अगर यह तुम्म वह भी आ निकल चले तो उठ चलोगे ?' बिशनी उसक चकोटी सी काटी थी, और वह बोला था 'तू जान की बात करता है धरम म सबर न निकलन दू रही। कभी कहे तो सही। म तो अकेना हू छडा छाट। मुह म तो कह और यह सुनकर तब बिशनी राम-राम म काप उठी थी। फिर धीर स उसन अपनी ननद स उसका नाम पूछा था।

करतारा था लाभे का! सुना था भाभी, क्या कह रहा था वह ? कहता है, जो करता है भइ सारा दिन पूजा करता रहू दरा कैसे डोलना फिरता हू तेर ऊपर ननद के कहने पर बिशनी का मुह शम से लाल हो गया था।

बिशनी न कितनी ही बार शीशा देखा। जितनी बार वह शीशा दखती गई, अपन आपका वह और भी सुन्दर लगन लगी, और हर बार उसके शीशे म जसे लाभे का करतारा आकर खडा हो जाता था और पाना तले गिरी हुई जवानी जस लौटकर उसके अगा पर आ चढी थी सफेद बाल फिर काली बलक मारने लगे

रात को उसन पडासी के छाटे लडके को बचनी ब्राह्मणी के पास भेजा।

"अच्छा फिर मुझे खबर देकर जाना।" बिशनी न उसे जाती हुई को टोका, और बचनी के जाते ही बिशनी को फिर बचनी का इतजार शुरू हो गया था। वह आगन म आ गई। आकाश तारो से भरा हुआ था। चाद आवारा सी हसी हसता हुआ लग रहा था, पर फिर बिशनी न सोचा कि भई यह जरूर उसका भुलावा था, चाद तो आसमान की सच्ची हसी होता है

गाव म चारा ओर सनाटा था। बचनी लौटकर फिर आई तो उसने दौडकर दरवाजा खोला—और जब बचनी लौटन लगी, बिशनी की एडी धरती पर नही टिक रही थी। रात को अच्छे और बुरे सपन जस बारी-बारी आते रह पर वह तडके उठी, मल मलकर नहाई ददासा मला दात एस चमक उठे जसे खडे पानी म सूरज की झलक पड रही हो। शीशे के आगे बैठकर अपन बालो म तेल मसा, कघी की, और आखो मे सुरमा

डाला। फिर अपना सबसे सुन्दर सूट निकालकर पहले अपने अग से लगा-लगाकर देखा फिर पहन लिया। लगा, जैसे अचानक ही कही से घनी अधेरी रात म चाद निकल आया हो

उसी शाम को बचनी ब्राह्मणी का घर गाव की बूढी औरता से भर गया। रामी सुनारिन को भी जब इस घटना का पता लगा तो वह भी बतन माजती माजती उन्ह उसी जगह छोडकर उठकर खडी हो गई। हाथ धोकर सिर के पल्ले से पोछ लिए, और बचनी के घर को हो ली। उसके पहुचने से पहले ही बोग की छोटी बहू, सावनी तरखानी और विद्या नाइन भी वही बातें छेडे बैठी थी।

क्या अम्मा, वह बात सच्ची है बिशनी वाली ? मुझे तो यह अभी छत पर से हमारे नके की बहू ने बताई है। मैं तो बतन उसी जगह छोडकर इधर आ गई मैंने कहा जाकर अम्मा से पता कर लाऊ ।

उस दिन, कहते है, जोरा को शराब म धुत, कधे पर बदूक रखकर ललकारें मारता हुआ सबने देखा था

उस दिन जोरा ने पहले किसीकी आहे अपनी हवेली की दीवारा पर से ढूढी, फिर गाव की गलियो म से—पर आह, गाव वाले कहते थे कि आह करतार के घर की दीवारो पर फूल बनी बठी थी।

—पर करतारे और बिशनी को फिर गाव म किसीने नही देखा

व्रत

बावार्सिह रधावा

पुष्पा ने कल आठवीं जन्माष्टमी का व्रत रात के पिछले पहर से शुरू किया था। गुज़र गई सात जन्माष्टमिया उसे एक एक करके याद आइ, कसे उस नवोढा न गुरुधर की शुभकामना करते हुए पहला व्रत रखा था। उसका मन गदगद हो उठा था। उसकी सेवा मे। गुरुधर खाता कमाता सरकारी कमचारी तो था ही कृष्ण भक्ति के रग म भी रगा हुआ था। पुष्पा न अपने धय भाग समझे।

गुरुधर का सुडौल शरीर, चौडे माथे पर गेरुआ तिलक लगा लेता तो दखत ही बनता। बडी बडी अध बन्द आखें, खडताल मे से निकलती लय पुष्पा निहाल हो उठती। सरकारी कमचारियो की कालोनी म बन मदिर क हर उत्सव म बढ चढकर हिस्सा लेना, जन्माष्टमी हो या दुर्गा पूजा, वह अपन काम की मशीन पर कम और पडितजी के साथ मदिर के कामो मे ज्यादा जुटा हुआ नज़र आता।

पुष्पा को वह बडा मन भाया। पर जसे जसे समय आगे सरक्ता गया वह रीता भक्त ही नजर आया। उसके कृष्णजी महाराज तो खुद रसिया थ पर गुरुधर ने कभी उसको एक रसिया की नजर स आख भरकर नही दखा। उसकी झील सरीखी आखा मे डूबकर उसकी सिन्दूरी आम जैसी ठोडी को कभी न छुआ। उसके स्पश को पुष्पा तरस-तरसकर रह गई। उसके होठा की गुलाबी पखुरिया फडकफर कई बार अगारे बन जाती पर हवा म फडफडा के खुद ही ठडी पड जाती। पुष्पा का दहकता बदन भी

जब गुरुधर के अन्दर जमी शीत को न पिघला सका, तो वह अन्दर ही अन्दर सुलगने लगी।

उसकी समआयु सहेलियां उसे छेड़ती। एक कहती, "तेरे ब्रह्मचारी का तो अभी और बीस बरस ब्याह करने का इरादा नहीं था पर घर वालों ने ज़बरन तुझे उसके गले बांध दिया।" दूसरी कहती, 'मन्दिर का मोहन भोग है और केले खा खाकर वह ठंडा पड गया है।'

ऐसी बातों पर पुष्पा ज़हर के घूंट पीकर रह जाती। गुरुधर जब निर्जीव मूर्तियों को जल धोकर उनका सिंगार संवारता तो पुष्पा देखकर सहम जाती—क्या यह मुझे भी निर्जीव हुई को ही संवारेगा? उसका अंतर रुदन करने लगता। नहा धोकर अपने आपको शीशे में देखती तो ठंडी सांस छोड़कर रह जाती।

अब कोई महीना पहले गुरुधर एक सतमंगी को घर लाया था। "यह मेरा बहुत गहरा मित्र है ध्रुवकुमार जिसके बारे में मैंने तुझसे कई बार ज़िक्र भी किया था। अब इसकी बदली यहां पर हो गई है।" पुष्पा ने शरमाते हुए ध्रुव को नमस्ते की पर उसके चेहरे पर आंखें टिकाना चाहते हुए भी वह झट रसोई मे चली गई। शायद भाग्य ने उसके कलेजे में एक उथल पुथल मचा दी थी। फिर ध्रुव जब भी उनके घर आता, पुष्पा खाने पीने की चीज़ें पकड़ाते हुए उसके बदन की महक आहिस्ता से सांसों में समा लेती।

फिर एक दिन पुष्पा को हरारत सी हो गई। खबर लेने आए ध्रुव ने शायद बुखार देखना चाहा पुष्पा की बांह कम और मखमली हथेली ज्यादा उसके हाथ मे थी। उसके हाथों की गरमाहट पुष्पा के जिस्म में एक झुनझुनी सी भर गई। रात को सोते हुए उसे लगा जैसे वह स्वस्थ ही नहीं, ज़िन्दा हो गई है।

आज सुबह से ही गुरुधर व्यस्त था। कभी प्रसाद की सामग्री मिलाने वालों की तरफ दौड़ता कभी शामियाने वालों को जगह दिखाता। स्टेज का काम भी बाकी था। भजन मंडली में किसको शामिल करना है। वह सुबह से ध्रुव को भी साथ घसीटे फिर रहा था।

गुरुदा! मैं तो भूख और थकावट से हाल-बेहाल हो रहा हूं, मुझ

यहीं रहन दो।" ध्रुव न विनय सी की। वह कृष्ण लीला की झाकिया के पास ही थककर बैठ गया। उनकी सरकारी वर्कशाप के टैक्नीशियनो न भाति भाति की मूर्तिया क नीचे छोटी मोटरें लगाकर उन्ह गरारियो पर रखा हुआ था। बिजली का करेंट देकर उनम भिन भिन हरकतें भर दी थी। कहीं कृष्णजी महाराज गोपियो म फस झूला झूल रहे हैं कहीं मक्खन की चोरी की जा रही थी, कहीं राधा बासुरी की धुन पर मस्त झूम रही थी कहीं अजुन का रथ दौड रहा था—ध्रुव की यहा पर डयूटी लग गई कि आन वाले जनसमूह का कृष्ण-लीला के दशन करवाकर आग भेजे। मूर्तिया और सार सामान की हिफाजत की जाए।

पुष्पा जब कुछ औरतो की टोली के साथ कृष्ण लीला देखन आई, तो वह राधा की मदमस्त झलकी के आगे कितनी ही दर तक खडी रही, जसे वह राधा के भाग्य को सराह रही हो कि कैसे गोपियो म से कृष्ण को चुराकर उसके अग लगी हुई है। ध्रुव ने उसकी आखो में एक चमक देखी। एसा आभास हुआ जसे उसन पिछले सात बरस अपन से उतार कर अलग रख दिए हो। ध्रुव के अन्दर भी कुछ धडका। पुष्पा को आग [illegible] निहारा जैस आज की पुष्पा कोइ अनोखी पुष्पा हो।

भजन मडली का कीतन सबके काना में रस घोलता रहा। [illegible] वक्त भी आ पहुचा जिसकी बच्चे बूढे मद औरतें इतजार कर रहे थे। [illegible] आगमन! सोते बच्चो को जगाया जा रहा था। [illegible] हो गए थे। शायद आरती के समय आगे खडा होने के लिए [illegible] हो। गुरुधर आरती के लिए दीयो का थाल [illegible] तक जगमगाते रह।

जिस आहट के लिए पुष्पा के कान तरस रहे थे, वह बाहर के दरवाज़ की चटखनी के अन्दर से बन्द होने की आवाज थी। ध्रुव ने चाहे बहुत धीरे से बन्द की थी, पर पुष्पा को लगा जैसे मकान के कोन कोने म से कोई सुरीली बसरी उसके कान मे गूज रही हो। अंधेरे मे ही ध्रुव उसके तज़ चलती सासा की आवाज़ पर पहुच गया। तूफान म जसे दो नावा के चप्पू उलझ गए हो। और हवा का दम उनकी चाल और तेज़ कर द।

पुष्पा ने जिस्म की तहा म एक दैवी उन्माद अनुभव किया। मन्दिर स आती घटियो की आवाज़ उसके अन्दर की आवाज को जसे ताल देन लगी। उसको लगा कि पिछले कितन बरसा स वह व्रत रखती आ रही है। जिसके खोलने का समय आ गया है गुनाह जैसी भावना मन के उन्माद के नीचे दबकर रह गई। जसे जग मे जीत की खुशी के नीचे लडाई मे हुए कत्ले आम की भयानकता दबकर रह जाती है।

मन्दिर की घटिया शान्त हो चुकी थी। पुष्पा अडोल पडी थी। गुज़रे कुछ पलो का सुख उसके अगा मे अलसाया सा पडा था। ध्रुव की सासो की महक उसे सारे कमरे मे बिचरती-सी लगी। फिर उसने बडे यत्न से अपन आपको समेटा। जाते हुए ध्रुव जिस गिलास में पानी पीकर गया था उसके नीचे दो घूट बचे, पुष्पा ने हलक के नीचे उतारे। आज वह प्यास का एक कतरा भी बाकी नही छोडना चाहती थी।

अब बाहर लोगो के चलने फिरने, दरवाजा के खुलने बन्द होने की आवाज़ें आनी शुरू हो गई थी। लोग मन्दिर मे से प्रसाद लेकर घर जा रहे थ।

'तू तो पता नही पहले ही चली आई।' आकर गुरुधर न कहा—

हा भूख स मेरा सिर चकरा रहा था ।" गुरधर से प्रसाद लेते हुए पुष्पा न कहा— 'मैंने तो आत हुए ध्रुव को ढूढा, पर भीड म कही नजर नहीं पडा। उसका भी व्रत था यहा ही आकर कुछ खा पी लेता। गुरधर न बैठते हुए कहा।

उसने व्रत खाल लिया ' पुष्पा न कहना चाहा, पर कहा नहीं गया।

और पुष्पा न गुरुधर के मुह की ओर देखकर अपन उर-अन्तर म गुनाह के अहसान को खोजना चाहा, पर मिला नहीं। और फिर पुष्पा का अपना अग-अग पूजा की थाली की तरह लगन लगा ।

जवाब-देह

जसवन्तसिह 'विरदी'

मौसम का बिलकुल भरोसा नही था कि वह क्या रग दिखाएगा। किसी क्षण धूप चमकती तो मन भी चमक उठते पर फिर अगले क्षण ही शीत वायु के झाके से प्रत्येक अपन अ तर मे लीन हो जाता, दुखी होकर। इससे भी बढकर दुख की बात यह थी कि सवारिया पूरी हाने के बावजूद भी अमतसर जाने वाली बस बेजान खडी थी।

जब ड्राइवर न बस स्टाट की ता कहर की सर्दी थी। लेकिन स्टाट करके एक बार उसन फिर राक ली और कूदकर बाहर निकल गया।

"आज बहुत सर्दी है।" उसने जोर से कहा और फिर पता नही कहा चला गया। दुपहर के बाद अमतसर जाने वाली यह पहली बस थी और अक्सर इसके बाद कोई ही बस चलती थी। इसीलिए सवारिया परेशान हो रही थी और लगातार हो रही थी।

फिर जब ड्राइवर और कण्डक्टर वापस आए, तो सभी न अनुभव किया कि उनकी आखें पहले से अधिक चमक रही थी जसे उनपर नशे की परत चढ गई हो।

'अब चलोगे भी कि नखरे ही दिखात रहोगे?" पता नही किसन कहा। ड्राइवर ने शीशे को साफ करते हुए जवाब दिया, "गाडी तू चलाएगा कि मैं?' बात कहने वाला तो वही सीट म ही धम गया पर उसकी और तसल्ली करने के लिए कण्डक्टर न कहा— आप अपनी टिकट वापस कर दो।' किसी बुजुग ने कहा—"अब इन बाता से क्या

लाभ—चलो गाडी चलाओ।"

गाडी चल पडी तो ड्राइवर पिछली सीट पर बैठे हवलदार और थानेदार से फिर बातें करने लगा। जितनी देर गाडी खडी रही थी वह अपने किसी केस पर इनसे विचार कर रहा था लेकिन अब फिर बातें? कई सवारियाँ लगातार परेशान होती रहीं। 'जब ड्राइवर इस प्रकार बातों में लग जाते हैं तो फिर उन्हें सडक दिखाई नहीं देती।"

किसी और ने व्यंग्य से कहा—'वे तो सडक न देखने के लिए ही बातें करते है।

यह भी उनमें से ही लगता है।"

गाडी की खडखड में ही थानेदार ने उसको कहा—'पहलवान, तू जीत जाएगा, तेरा केस स्ट्राग है।'

इस बात पर ड्राइवर ने पहले तो गाडी काफी तेज कर ली और फिर मस्ती में आकर उसने पुलिस वालों से पूछा—"आपने ढिल्लवा अवश्य जाना हो तो हम उधर से चल जाते हैं। मेरे पास बहुत टम है।'

'नहीं। थानेदार ने कहा।

नहीं कोई बात नहीं' हम उधर से ही चले जाएंगे। मैं गाडी और तेज कर देता हू।

नहीं। इस बार हवलदार ने जोर से कहा। अधिकारपूर्ण लहजे में। बस में से फिर किसी ने कहा—'यह ड्राइवर भी अजीब चीज है।'

'अजीब?' ड्राइवर ने एकदम ब्रेक लगा दी जिससे कई लोगों के दांत बज उठे। वह कडककर बोला, 'तू कौन होता है अरे मुझे अजीब कहने वाला?

लेकिन थानेदार के संकेत से वह फिर चल पडा।

तुम्हें इतना भी मालूम नहीं कि मैंने तो छोटी सी बात के लिए अपनी बीवी बसो का कत्ल कर दिया था।"

कत्ल? कोई और बहुत ही आश्चर्य से बोला—'बीवी का कत्ल?

और नहीं तो क्या?' ड्राइवर ने बडे रोब से कहा लेकिन मैंने पहले ही उससे कोरे कागज पर अंगूठा लगवा लिया था।

"उसने लगा दिया ? '

"मैंने जबरन लगवा लिया था कि '

"लेकिन यह तो ज्यादती थी कि "

"ज्यादती ? वह क्या कम थी। कहती थी सन्तासिंह अधिक दारू मत पिया कर और वक्त पर घर आया कर, गाडी धीरे चलाया कर और होश से। कही ऐक्सीडेंट ही न कर देना।

ठीक ही तो कहती थी।

"क्या ठीक कहती थी ? क्या मुझे नही मालूम य बातें ? और वह होती कौन थी मुझे कुछ कहने वाली ?

'तुम्हारी बीवी !' किसीने धीरे से कहा जिसे ड्राइवर ने सुन तो लिया पर वह उस आदमी को पहचान न सका।

बीवी ? इसका मतलब यह तो नही कि औरत आदमी पर रोब डाले जबकि वह दो धप्प सहन नही कर सकती।'

मुसाफिरो की हसी का कहकहा खिडकी मे बाहर निकल गया, लेकिन थोडी-सी औरतें जो वहा बैठी थी अपने आपमे सिकुड गइ। उनके चेहरे जैसे कह रहे थे—'औरत तो इस धरती पर धप्पे खाने के लिए ही पैदा हुई है।

'अब यह लाखा की बस भी मेरी ही समझो।' वह फिर बोला तो मुसाफिरो ने देखा कि उसकी सीट से ऊपर शीशे के समीप उसका नाम और ड्राइवर का नम्बर लिखा हुआ था।

लेकिन इस बस ने कभी मेरे सामने जिद नही की मैं जैसे चाहू इसे चलाऊ। पर औरत व दे को दबाकर रखना चाहती है। यह कैसे हो सकता है ?'

"यह बस तो बेजान है !' पता नही किसने कह दिया।

बस बेजान है ? ड्राइवर तो सीट से ही उछल पडा—"कौन कहता है कि बस बेजान है ?

एक अधेड औरत ने खीझकर कहा—'अरे भाइ ! तू गाडी चला। ज्यादा बाते न बना।

डाइवर चुप हो गया, लेकिन ढिल्लवा के पहले मोड के पास पहुचकर

उसने गाडी रोक दी और जल्दी से थानदार को कुछ कहकर नीचे उतर गया।

लोग फिर कानाफूमी करन लगे। कुछ लोग तो उसे निरा जगली समझ रहे थे और उसके विरुद्ध आवाज भी उठानी चाहते थे, लेकिन लोग आपस मे अजनबी हाने के कारण एक-दूसरे की ओर देखकर ही चुप रह जाते थे—जैसे एक-दूसरे को कुछ कहना तो चाहते थ, पर क्या कहते ?

जब ड्राइवर बस म वापस आया, तो उसन थानेदार को बताया कि जिस आदमी के पास वे ढिल्लवा जा रहे थे, वह कल का चण्डीगढ गया हुआ है, लेकिन फिर भी यदि व चाह, ता वह बस ढिल्लवा के बीच मे से ले जा सकता है।

'नही, तू हमे यही उतार दे।" थानेदार न कहा और वे दोना उसी समय वही उतर गए। सवारिया न शुक्र किया नहीं तो उन्ह ढिल्लवा के बीच मे से जाने पर हैरान होना पडना।

अव जब वह फिर गाडी चलान लगा तो उसने देखा कि कण्डक्टर किसी परिवार से उलझ रहा था। उनके पास शायद किसी अन्य बस के टिकट थे और व गलती से इस बस मे सवार हो गए थे। कण्डक्टर उन्ह और टिकटें लेने पर मजबूर कर रहा था पर वे मान नही रहे थे। ड्राइवर ने कहा—' अपनी कम्पनी के ही टिकट हैं ? चलो कोई बात नही रहने दे।' फिर उसने मुसाफिरो से कहा— अगर तुम्हे किसीने पूछा तो कह देना गलती से बठ गए थे।'

बस का माहोल कुछ सुखद हो गया।

"अरे वाह भई ! एसा ड्राइवर नही देखा कभी।'

' सब एसे ही होत है। आपन कभी सफर भी किया है ?"

"आपन किया है ?

"यह आपके सामन कर तो रहे हैं।'

"किए जाओ फिर।

आप उतर चले ?

' नही आखीर तक जाएगे।

गाडी को एक निश्चित रफ्तार तक पहुचाकर अपने पास बठे बाबू स

उसन फिर कहा—'इन पुलिस वालो स मै अपने मुकदमे के विषय म ही बात कर रहा था बस अडियल आरत न थोडी सी अकड दिखाई और मैंन उस कत्ल कर दिया।'

ड्राइवर ने यह बात इतने रूखे लहजे म कही कि बस के वातावरण मे एक बार फिर तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई।

ये लोग कहते थे कि मैं बच जाऊगा।"

किसीन भी हू हा नही की।

डाइवर आख सिकोडकर बडे धैयपूण स्वर मे बोला—'औरत मद को अपन अनुसार चलाकर खुश होती है। पर हम तो मनमौजी ठहरे। कोई हमसे ताकत के जोर पर अपनी बात नही मनवा सकता।"

'ठीक है।" बात सुन रहे मुसाफिरा का कहना पडा, लेकिन उसन अनुभव किया कि बहुत सी आखें उसे काटा की तरह चुभ रही थी।

व्यास का अडडा सामने आया, तो ड्राइवर ने ललकारकर कण्डक्टर से पूछा, 'अरे रुकू ?

'तुम्हारी मर्जी है।"

ले फिर, दरा मर्जी।' और ड्राइवर उड रही धूल म स बडी तेजी से गाडी निकालकर आगे बढ गया।

जब वह जोर से स्टयरिंग घुमाता तो लोग बहुत ही परेशान हो जाते। कुछेक तो यह भी सोचने लगत कि आज वह उनका भी कत्ल करके रहेगा। जगली कही का।

"अब वे जमान लद गए जब लोग औरता को कत्ल कर दत थे।" किसी एक मुसाफिर न दूसरे स कहा।

दूसरा बोला— लेकिन दख लो इसकी दीदा दिलेरी।'

'दिलेरी ?' किसी और न व्यग्य से मुस्कराकर कहा। कुछ लोग केवल खामोश बठे तमाशा देख रहे थे। शायद सोचत हो कि देखो सही सलामत मजिल पर पहुचत भी है या नही।

जब गाडी रैय के अडडे पर रुककर आधा मील आग बढी तो वहा सडक के किनारे कोई औरत खडी दिखाई द रही थी। उसे देखकर ड्राइवर न जल्दी से ब्रेक लगा दी और दरवाजा खोलकर नीचे उतर गया।

"अरे बसा तू ?" और उसन बसो का बाहो म भर लिया। 'इतनी सर्दी म तू खुद क्यो आई ?'

बसा कुछ नहीं बोली। बसो का चेहरा गोल नक्श तीखे और चहर पर एक प्रकार का गव था जो प्राय औरतो के चेहरो पर नही होता, होता है, तो दिखाई नही दता।

"तू रोटी नही लाई ?"

"मैंने सोचा पता नही तू खाएगा या नही। मेरी पकाइ रोटी जब तुम्ह अच्छी कहा लगती है।

"हत पागल !" ड्राइवर ने उसे फिर अपनी छाती स भीच लिया। उस वक्त दोना का कद काठ एक जसा ही लग रहा था।

"तू परसा स घर क्या नही आया ?' और लगा जैसे वह रोन लग गई हा या शायद यह हवा की ही सरसराहट थी।

सतासिह न कहा— 'आज आऊगा, ज़रूर आऊगा।

फिर गाडी म बठना हुआ बोला—"अब तू घर जा। देर हा रही ह।

लकिन वह औरत वही खडी रही, मील के पत्थर क समान।

गाडी चल पडी थी, पर जब उसने पीछे मुडकर लोगा की आश्चय भरी दृष्टि को देखा तो धीरे स बोला— यह बसो है। मैंने अपनी तरफ से तो इसे मार ही डाला था पर औरत जात ! यह बहुत सख्त जान है।'

फौजन

देविन्दर दीदार

गाव की चढान पर फौजियों का कैम्प लगा हुआ था। यह फौजियों की खुशकिस्मती होती है कि किसी गाव के पास उनका कम्प लगे। लस्सी-पानी का आराम रहता है। उन्होंने लस्सी लाने के लिए वारी वाधी हुई थी और आज अमर की वारी थी जाट का बेटा होने के कारण लस्सी लेने जाना शर्म की बात समझता था। पर साहब का कहना कौन टाल सकता था! विचारा बाल्टी लिए सिर नीचे झुकाए गाव की ओर चल दिया।

जब उसने नम्बरदार के घर की ड्योढी पार की तो चौके में तजो रोटी पका रही थी। एक घुटना माडा हुआ था और दूसरी टाग सीधी रखी हुई थी। सीधी टाग के पास आटे की परात थी और आगे चक्ला-वेलन। दूसरी ओर रोटियों की डलिया थी। तेजो अपनी ही मस्ती में रोटियां पका रही थी और गुनगुना रही थी—सूई सुट्ट ओहदे वूहे दे अगाडी मैं भन ती दिट्टाडी आह भडा कुझ समझे ना'

अमर का जी चाहा, वह सारा दिन इस लड़की को देखता रहे लस्सी का घूट चाहे मिले न मिले। तजो को किसीके आने की आहट आई तो मुडकर देखा और ऊचे स्वर मे बोली, 'फौजी! लस्सी लेने आ गए?'

तेजो सुन्दर लडकी थी कद काठ भी अच्छा था। गोरा रग, गदराई जवानी गुलावी चेहरा, और मारपख जैसी काली आखें, और उसके ऊपर यह सरल स्वभाव कियामत ढाता था। अमर ने एक लम्बी सी सास भरी,

और बाल्टी चौके के पास रख दी। तेजो ने तवा रोक दिया और आटा सने हाथ को झाडते हुए अगडाई ली।

'फौजी ! घर की याद तो बहुत आती होगी। ब्याह व्याह किया है कि नही घर वाला ने ?' तेजो न कहा तो अमर को कुछ न सूझा कि वह क्या जवाब दे। नम्बरदार का घर है अगर कोई बुरी भली कही तो और उलटी न पड जाए। क्या भरोसा इस जैसी मुहफट लडकी का !

तेजो न बाल्टी करीब पौनी भर दी। अमर बाल्टी उठाकर बाहर तो आ गया पर उस ऐसा लग रहा था जसे उसके भीतर बाहर सेंक लग गया हो। आज तक उसन एसी धडल्ले वाली लडकी नही देखी थी।

"क्या, कुछ पता लगा लस्सी कसे मागते हैं ?" उसके एक साथी ने मजाक किया। पर अमर तेजो के बारे मे ही सोच रहा था क्या यह लस्सी लेने जान वाले हर आदमी से मसखरी करती है ? घर मे अकेली थी, पर डर जसी चीज जरा भी उसके आसपास नही थी, बल्कि बढ-चढकर मजाक किए जा रही थी '

कैम्प के पास एक लडका भसें चराता हुआ आ गया तो अमर न उसे आवाज दी। लडका यो तो अमर की ही उम्र का था, पर डर गया कि भसें कैम्प के पास आ गई हैं फौजी रौब मारेगा।

"क्या नाम है तरा, लडके ?" अमर न पूछा।

'जी, मेरा नाम, भजना।

'भजनसिह, डर क्यो रहा है ? फौजी भी तुम्हारे जसे ही होते हैं।"

नही जी ऐसी कोई बात नही। भजन का सास जसे लौट आया।

"अच्छा यार, तुम्हार नम्बरदार का क्या हाल है ?'

बडी खराब चीज है। गाव मे किसीसे नही बनती अपन सगे-से-सगे आदमी की भी भट्ठी पकडवान से बाज नही आता।'

"उनके घर म लडकी कौन है ?

वह नम्बरदार की बेटी है जी, पर है बिलकुल आफत, लडकिया तो दूर, उसका रौब लडको को भी ठडा कर देता है। किसीकी क्या मजाल

है कि उसकी बात टाल सके। धरम से, जब वह गिद्दा नाच मे हो' की आवाज़ लगाती है तो गाव काप जाता है सारे का सारा। सारा सारा दिन कुट्टी काटते नही थकती। एक दिन उसका बाप कहीं गया हुआ था, वह कम्मिया की रोटी लेकर गई तो दो बीघा खेता की डौल बना आई थी।

नाम क्या है उसका ?''

'नाम तजो, पर भाईजी, आप यह सब क्या पूछ रहे हो ? कोई ब्याह की बात का चक्कर है क्या ?'

'नहा भाई एस ही। कोई बात नही हैं। अच्छा, यह बता, हम जब भी लस्सी लेन जात हैं वह घर म अकेली ही होती है बाकी घर के लाग कहा होत है ?'

'मा तो उसकी सन सतालीस के दगा मे ही मारी गई थी बहन कोई है नही। एक भाई है वह ब्याह करवाकर शहर चला गया है और बाप घर पर कभी टिकता नही।'

"अच्छा भाई, दूसरी बात यह है कि इधर भैंस लेकर मत आया कर। अगर साहब न देख लिया तो तेरे साथ हमारी भी शामत आ जाएगी।'

वह लडका चला गया, लेकिन अमर को लगा जसे वह आधा रह गया हो और आधा तजा के खयाल ने खा लिया हो

अगले दिन उसका जी चाहा कि वह वालटियर बनकर लस्सी लेन जाए। पर वह कुछ भी न कर सका। उसकी रूह दौड दौडकर गाव की आर जा रही थी, पर उसे अपने पावा म इतनी शक्ति नही लग रही थी कि वह वसी दिल वाली लडकी का सामना कर सकेगा।

उस दिन उसकी गारद ड्यूटी थी, और वह दिल मे मन्नत मान रहा था कि किसी तरह तेजो इधर आ जाय तो सचमुच कुछ ही देर बाद तेजो उधर से साग लेने आ गइ। अमर ने वसे कई बातें सोच रखी थी, लेकिन तजो को देखते ही वह थोथा हो गया। पर था तो जाटो का बेटा, अपन आपको नीचा कस दिखाता ! एक टप्पा कह दिया नी वेले विच मज्जा चारदी, किते सप्प ना लडा लइ कुडिये !''

टप्पा सुनकर तेजो को जस सरूर सा आ गया हो, उसका जी चाहा कि

कह, 'फौजी, अगर तेर जसा एक भी लडका मरे गाव मे हाता तो मैं कभी भी फौजियो को लस्सी न पिलाती।' पर ऊपर से कडक्कर बोली, "फौजी, क्या लस्सी नही पचती ? तरा डडा सा (बदूक) छीनकर छाती फाडकर रख दूगी।"

"यह तेरे गाव का गभरू नही है जो तेरे रोब मे आ जाएगा।" अमर ने न जान कैसे कह दिया। वसे उसका दिल दहल गया था।

'अच्छा, है हिम्मत रोब झेलने की ?" तेजो ने कहा, पर उसका दिल अदर से खिल उठा।

"वह मद ही काहे का जिसमे हिम्मत न हो।' अमर ने सचमुच तेजो का दिल मोह लिया था। उसे ऐसे लग रहा था जैसे वह पहली बार कोई मद देख रही हो। "अच्छा, फौजी, कल लस्सी, लेने आना, तेरी हिम्मत की टोह लूगी।"

तेजो ता चली गई पर अमर को लगा जसे उसन एक मुसीबत मोल ले ली हो। कल न जाने यह क्या कहे ? सिरचढी लडकी है कही अदर बद करके कुटाई न करवा दे।

पर अगले दिन वह वालटियर बनकर लस्सी लेने गया। आज वह पहले से ज्यादा सवेरे आ गया था। तेजो अभी दूध बिला रही थी, अमर को देखते ही उसका चेहरा चमक उठा।

"यह खाट बिछा ले, फौजी ! अमर चरपाई पर बैठ गया तो तेजो लस्सी का गिलास ले आइ। गाढी लस्सी और ऊपर मक्खन का पेडा। तेजो न पूछा 'जाटो का लडका है ना ?'

'बस, रोब जमाना ही जानती है ? इतना भी नही पहचान सकती।

'फौजी ! एक बात बता, छाती पर गोलिया ही खाने लायक है, या पीठ पर लाठिया भी ?

बात क्या है ? अमर फिर काप गया कि यह लडकी कुछ उलटा काम ही करेगी।

'बात-वात कुछ नही। मेरा फौजन बनने को जी चाहता है। तू अपनी मह, उठा सकगा यह भार ?

अमर न कोई जवाब नहा दिया, तो उसे चुप देखकर तेजो बोली, "बस

फौजी "तना ही जाट है ? फिसलन लगा मुडेर पर स ? '

"कल बताऊगा साचकर

' हिम्मत हो ता लस्सी ले जाना नही ता वह बाजीगरा वाली झुगिया भी उठाकर ले जाना। तेजा का मन खट्टी लस्सी स भी ज्यादा खट्टा हो गया था। अमर लस्सी की बाल्टी उठाकर अपन बच्चा और घरवाली की याद करता हुआ सिर झुकाए कम्प की आर चल दिया जस लडाई म हारकर आया हो

रात कोचरी बोली

सिद्धू दमदमी

भरे जाडो की बादलो से घिरी शाम थी। सूरज शयन करन चला ता काली रात चारा ओर से उतरन लगी। भरी हुइ आखो की तरह बादल चमक रह थे। मौसम का रुख भापकर बूढा तरेडें दरारें देखने के लिए बरसाती की छत पर चढ गया—कही रात का छत चून न लग।

मुडेर के पास चुहिया के बिल को एडी से बन्द करत हुए उसन एक सरसरी निगाह सुदरसिंह के आगन की ओर डाली जो आगन के एक कोने मे बनाए हुए सायबान के नीचे कगनी वाले बडे गिलास को हुजूर साहिब के कडे से बजाकर गुरुबानी पढ रहा था—"मिल मरे प्रीतम जीओ तुध बिन खरी निमाणी '

बूढा होठो म कुछ बडबडाया। फिर उसन उकडू होकर अपन आगन मे झाका। उसकी नेटा जसी एक ही बेटी सत्ता और सत्तो की मा चौक मे सिर जोडे बठी नजर आइ—पाले से ठिठुरती हुई दो फाख्ताए! वह मूछो-मूछो मे मुस्कराया—एक कडवी मुस्कराहट।

'हाय, मर गई, न मारो बापू मैं मर जाऊगी !!!' फडफडाती हुई तोती जसी चीख अचानक बूढे के कानो के आर पार हो गई। तुरत वह बरसाती के बराबर फले हुए मैंगल के घर की ओर मुडा। पर मैंगल के आगन का दृश्य देखकर उसका मुह खुले का खुला रह गया—मैंगल आगन मे बेहाल पडी अपनी लडकी पर बेदर्दी स बरस रहा था। टूटी हुई चूडिया लडकी के आसपास तितली के उखडे हुए रग बिरगे पखा की तरह बिखरी

हुई थी। मँगल का बाकी परिवार लडकी को छुडाने की बजाय कोने म गडा सिसकिया भर रहा था।

बस कर आ कसाई क्या कूटे जाता है कुआरी कन्या को ।। बूढ न मुडेर स आवाज दी। पर मँगल न मुडेर के पास खडे हुए बूढ की ओर एसी कडवी निगाह स देखा जस पडोसी न उसका फटा हुआ जाघिया देख लिया हो और फिर वह तमक उठा— पहले गदन झुकाकर अपने गिरेबान म तो झाक !—फिर दूसरा की पचायत करना बडा चौधरी बनता है। पडोसी का भाले जैसा लौटवा जवाब सुनते हुए बूढ के तलवा म घिसी हुई जूती म स मुडर क रोडे खुभ गए। वह फिसलता हुआ छत पर स उतर आया।

तुम्हे क्या लेना था बोलकर कोई मरे कोई खपे। सत्तो की मा चौके म स बोली। पर बूढे को ये शब्द सुनाई नही दिए। एक अजीब नजर से उसने सत्तो की ओर देखा—सत्तो की कुरती की नीली धारिया उसे छडी की मार स पडी हुई नीली लकीरें लगा। दाहिने गाल का मास अन्दर की ओर खीचकर दाता म ग्वाते हुए वह बरसाती के अन्दर रजाई म जा पडा।

नन्ही नन्ही बूदें पडने लगी। चूल्हे चौके का काम निवटाकर सत्तो और उसकी मा भी बिस्तरा म आ गई। बाहर तेज़ ठडी हवा थोडी सी थमी पर मह का ज़ोर ज्यादा हो गया। कभी-कभी सुन्दरसिंह क आगन से उठने वाली कगनी वाले गिलास की आवाज मह की आवाज से लिपट जाती।

'सत्तो की मा! लालटेन मत बुझाना कही चुआई देखनी पड जाए। हड्डी टूट साप की तरह रजाई म तिलमिला रहे बूढे न कहा। छत की काली कडिया की धारिया देखते हुए उसे फिर कोमल शरीर पर बरसती हुई छडी की धारिया याद आ गई। न जाने क्या उसे लग रहा था जस बाहर किसीकी सिसकिया भीग रही हो। कानो म बजते हुए मह के शोर कगनी वाले गिलास की आवाज़ भीगती हुई सिसकिया और आखो क आगे तरती हुई काली नीली चोट की धारियो से उसके चित्त को अकडन होने लगी।

बूढ़े को बेचन देसकर सत्तो की मा भी बेचन हो गई। अत म जब सत्तो की चारपाई स हल्के-हल्के खुर्राटा की आवाज आन लगी ता उमन बूढ़े की रजाई का पल्ला खीचा।

"तुम काह का बुढे जा रह हो ?

' लो, मुझे क्या जरूरत है कुढन की, उमकी लडकी है चाह गन्न काट डाले। बूढे न पाव फलाकर सो जाना चाहा, पर बाहर म भीगकर आई हुई कुछ सिसकिया अचानक उसके काना म जा पड़ी और उमक मन की परत पर एक और अकडाहट चढ गई। सत्तो की मा बूढ़े की चारपाई की पट्टी स सट गई।

'पता है क्या कूट रहा था लडकी को मैंगल ?' सत्तो की मा न छछूदर छोडी।

' मैं क्या जानू ?' बूढा पूरी तरह खीझ गया था। सत्तो की मा न तसल्ली करने के लिए एक बार फिर निहुडकर सत्ता की चारपाई की ओर दखा और धीमे स्वर में बोली, ' लडकी न ता मैंगल की नाक भरी बिरादरी मे कटवा दी—कहते हैं खेता म जगीरे लम्बड न उस लडके स त के साथ इस झख मारते पकड लिया था—और तो और जाघ ढकन वाली सलवार भी वही "

बूढे का हाथ एक झटके के साथ सत्तो की मा के मुह पर आ टिका—रजाई छाती तक खिसक गई, तलुवा मे मुडेर के राडा की चुभन दावारा हरी हा गई और कुछ देर के लिए जसे वह सुन हो गया। पर फिर—

' ब्याह करके पाप काटे एसी कलमुही का—" कहने को ता बूढा कह गया, पर बाद म सोचकर उसे एसी कपकपी चढी कि उसे रजाई गले तक खीचकर ओढनी पडी।

बिचार की पाच बेटिया हैं। जो चार खेत थे वह कबीलदारी खा गई—कैसे गदन सीधी करे !' सत्तो की मा ने लम्बी सास लेकर एक बार फिर सत्तो की चारपाई की आर देखा जा रगीन फूलदार रजाइ म निश्चल पडी हुई थी। बूढे न भी एक लम्बी सास नथुना म से निकाल दी।

कगनी वाले गिलास की आवाज बन्द हो गई थी, पर कुछ एक भीगी हुई सिसकिया धीरे से बाहर से आकर फिर बूढ़े के कानो मे चली गइ।

"मैने कहा, सत्ता की मा बाहर कोई रो रहा है । वह एकाएकी एस चीखा, जैसे किसीने गम फाहु उसके कानो मे डाल दिए हा।

"तुम्हारे ऐस ही कान बजते है। बाहर कौन रोएगा ? रानेवाला को रोनेवाला के सपने !" बूढे का सास घुट सा गया जसे किसीने उसकी गदन ज़बरदस्ती पकडकर उसकी ही चादर मे लपट दी हो।

"माही नगल वाला का क्या सदेसा आया है ?" शब्द टुकडे टुकडे हाकर बूढे के हाठो से गिरे।

'बस कुछ मत पूछ। पहले तो 'जाडी घोडी या हृद बम्बूकाट मागने ये पर अब यह वडे नवाबजादे कहत है, अगर सारी जमीन सत्तो के नाम करें तब रिश्ता मजूर करेंगे।"

बूढे का माथा सिकुड गया। उसकी आखा के आगे कुछ देर के लिए मगल के परिवार के प्राणी सूखी हुई जीभो की तरह लटके, और फिर मत्ता की कुरती की नीली धारिया गहरी हो गइ—अत म पछतावे की काली लकीर उसकी पगडी के नीचे सरकी 'जाट के अकेली बेटा नही हानी चाहिए !' गाव मे घटी दो घटनाओ ने उसकी चेतना के कानो म 'कुरर की—जमाई के जोर देने पर जब मुक्दे सरा ने अपनी इक्लौती लडकी के नाम जमीन कर दी ता जमाई न धक्के मारकर उसे बाहर निकाल दिया था —साधुआ की टोकरी ढोकर, रोटिया मागन के लिए । चहला क कीरतसिंह ने जब जमाई के सौ पापड वेलने पर भी अपनी इक्लौती लडकी के नाम जमीन नही की तब लडकी से मिलन गए हुए वाप को जमाई ने मरवा दिया था बूढे को हल्का-सा पसीना आ गया। छाती स रज़ाई फिर हट गई और काना म बाहर से भीगकर आई हुई सिसकिया

सत्तो की मा ! बाहर कोई रा रहा है ! । !" वह ज़ोर से चीखा।

' सयान समयदार आदमी हो तुम्ह क्या हो जाता ? सो जाआ !" सत्तो की मा ने तग आकर मुह रज़ाई से ढक लिया। बूढे न भी उसकी ओर पीठ कर ली।

बूढे के दिमाग मे अजीब अजीब खयाल कुलबुलाने लगे। उसे लगा जसे सत्तो दोनो हाथो की अजुलि फलाकर उससे कुछ माग रही है। वह विलख पडा— किवें नी निक्किए तेरा लम्भा हाणी ! खुसदी ए मेर

हत्थो पराणी ।¹ फिर उसन दखा सत्तो का कदबदन बहुत बडा होकर उसके सारे खेत पर फैल गया --उस खेत पर जिसकी मिट्टी की एक मुटठी क लिए वह जान द सकता था। —बूढे की अर्धनिद्रित आखा से आसू ढुलक गए

'सत्ता के बापू ! आगन म कोचरी बोल रही है। देख तो आओ ज़रा बाहर जा के।" सत्तो की मा न उसे झझोडकर जगाया।

बूढे न मन की टीस को दातो मे दबाकर खेस को कधे पर लपेटा और बरछा सभालकर बाहर *निकल आया। अम्बर की आख निचुड चुकी थी।* फटे बादलो मे से पीली चादनी चर रही थी। कपडे टागन वाली रस्सी पर बैठकर बोल रही कोचरी उसे देखकर उड गई। वह खासा और उसे गली के पानी मे किसीके छपक छपक' करके चलने की आवाज़ सुनाई दी।

"कौन है भई ?' बूढे न दबी हुई आवाज़ मे ललकारा। छपक छपक' तुरत दौड म बदल गई। बूढा दरवाज़ा खालकर गली म निकल आया। उसे गली के मोड पर दौडकर जाती हुई एक छाया नज़र आई। अचानक उसे ऐसी झलक मिली जस निहालसिंह के घर का दरवाज़ा भी थोडा सा खुला हो। साथ ही उसे कोई दीवार की छाया म छिपकर खडा नज़र आया। उसने होठ चबाकर छुपे हुए व्यक्ति की ओर बरछा सीधा तान लिया।

'मैं मैं ता, ताया जी, शमिन्दर हू ऊ !" दीवार की छाया म खडा प्राणी डर कर बोला—

"है ! निहालसिंह की लडकी ? तू आधी रात को यहा क्या कर रही है ?" बूढे ने आखो पर ज़ोर डालकर दीवार की छाया को टटोला। पर लडकी 'खामोश पत्थर' बनकर खडी रही और फिर वह भी खामोश पत्थर' बन गया। जब उसने भीतर आकर अपन दरवाज़े का कुडा लगाया तो निहालसिंह का दरवाज़ा भी धीरे से खडक कर बन्द हो गया।

बूढे की मोटे खेस को लपटने के बावजूद, दाती बजन लगी। उसका जी चाहा—जाकर निहालसिंह की दाढी म थूक आए जो भरी पचायत म

---

१ मेरी बटो तेरा साथी कहा खाजू ? मेरे हाथो से हल की हत्थी छूट रही है।

बैठकर वह देता है "जब स मरी लडकी मास्टरनी लगी है पगली ब्याह के लिए राजी ही नही होती ।' फिर बूढे की आसा के आगे वह दा बीघा जमीन फल गई जो निहालसिह न हाल मे ही किसीका रज दकर गिरवी रख ली थी। सार गाव को साफ पता था कि लडकी की कमाई स ली है नहीं तो, कौन मे निहालसिह के हल चलते थे ?—बूढे की दाती का बजना और भी बढ गया—उसकी आखो के आग कभी शमिन्दर निहाल-सिह के उन दो बीघा खेता पर बिछ जाती, कभी उसकी अपनी बेटी सत्ता उसके सारे खेत पर !—वह रूई की तरह धुना जा रहा था !

न जान वह और कितनी देर इसी तरह खडा कापता रहता अगर उसके काना म कुछ भीगी हुई सिसकिया फिर न आ जाती। अब उसे सिसकिया साफ सुनाई द रही थी। सिकुडता हुआ सा वह बरसाती की गीली छत पर चढ गया। एक काचरी सुन्दरसिह के आगन की ओर स उडती हुई आई, पर बैठी आकर मैगल के आगन मे उगे नाट नीम पर। ताक झाक करते हुए बूढे न मुडेर पर स मैंगल के आगन म झाका। सारा आगन पीले उजाले से भरा हुआ था। अचानक बूढे की आखें खुली की खुली रह गइ, और सिर चकरा गया—बरामदे के खम्भे से मैंगल की बडी लडकी रस्से से बधी हुइ धीरे धीरे कराह रही थी। बूढे का हाथ बरछे पर कस गया और आखा के आगे तारे नाचन लगे। उसका जी चाहा कि मगल के आगन म कूदकर लडकी को खम्भे से खोलन से पहले मैंगल को बरछे मे पिरो दे !

पर अचानक कोचरी उडकर अपन आगन मे तनी कपडे टागन वाली रस्सी के ऊपर 'चुरर चुरर करन लगी। बूढे के पैरा के नीचे से गीली छत सरक गई। उस लगा, जैसे कोचरियो की एक डार गाव मे आकर उतरी हो घर-घर । उसन गदन घुमाकर सुन्दरसिह के आगन की ओर देखना चाहा पर चाद बादल की ओट म हो गया था। अन्त म वह अधा की तरह हाथ स टटोलकर अधेरे मे लकडी की सीढी ढूढन लगा।

कोठरी म पहुचकर जब उसन एक गरीबनी जैसी निगाह सत्तो की चारपाइ की ओर डाली तो उसकी आखे ही मुद गइ—सारी की सारी

रगीन फूलदार रज़ाई सत्तो की बाहा और टागा के बीच सिमटी हुई पडी थी लालटेन की पीली रोशनी मे लडकी की गदन पर पसीने की बूदें चमक रही थी। लडकी को रज़ाई ओढा दे और लालटेन बुझा दे !' बूढे ने सत्तो की मा को ज़ोर से झझोडा—उसकी आवाज़ सीली हुई थी। रज़ाई मे मुह ढापकर वह आखो को जार से बन्द करन लगा, पर दो पलको के मिलने म उतनी ही दूरी रह जाती जितनी एक खयाल—'दो बीघे ज़मीन पर छाइ हुई शमिन्दर, और दूसरे खयाल—'सार खेत पर छाई हुई उसकी बटी सत्ता के बीच थी। इतनी दूरी मे से जब वह रज़ाई के अधेरे म झाक्ता ता उस मैंगल पडोसी की रस्से से बधी और कराहती हुई बेटी नजर आती शेप रात काचरी आगन म बोलती रही बोलती रही !!

एक बार फिर

दलबीर चेतन

पाश आज बहुत उदास थी—छट हुए पड की तरह उदास, जाडो की धूप की तरह उदास और किसी प्यार की रह रहकर आन वाली याद की तरह उदास।

अधखुले दरवाज़े को ठडी हवा का झाका धक्का देकर अदर चला आया। दीवार का सहारा लेकर खडी हुइ पाश कापकर रह गई। वेहोशी सी की हालत मे उसन दरवाजा उढक दिया। अपन ठिठुरे हुए हाथो का तपते हुए हीटर पर सेंकते हुए भी वह कापे जा रही थी। उसने एक लम्बा सास लिया—अपनी जिंदगी के दुखो जितना लम्बा। उसने जिंदगी मे सब कुछ चुपचाप सह लिया था कभी भी काई शिकायत नही की थी। वे बाप की पाश की एक बुढिया मा और छोटी बहन ही थी। जिंदगी ने उन्ह भी ता कुछ नही दिया था। बूढे और छोट हाथ अपन सहारे के लिए उसके हाथा की ओर ही ताकते रहते थे। वह अपनी हिम्मत म ज्ञानी की परीक्षा पास करके एक स्कूल मे पढान लगी, और उसके वतन म घर का थोडा बहुत चूल्हा जलन लगा।

नौकरी लगने से उसन अपनी उम्र से भी भारी कतव्या का भार सिर पर उठा लिया। किसी साहूकार से ब्याज पर लिए हुए कज की तरह कतव्या का कज भी खत्म हान का नाम नही लेता था। पत्थर जसी स्थितियो से सिर टकराती हुइ वह स्वय भी एक पथरीली जमीन जसी बनकर रह गई थी। पर इस पथरीली जमीन पर भी देव की निकटता

हरियाली की तरह उग आई थी। स्कूल के सारे स्टाफ में उसे मास्टर देव के बोल ही अपने लगते खुशबू की तरह देव की उदास आंखों में से उसे अपनी झलक मिलती रहती। इसीलिए वह उसके पास कितनी ही देर बैठी रहती। मनुष्यता के दर्द को छाती से लगाए वह उसे राजनीति समझाता। समाज में प्रचलित भेदभाव को स्पष्ट करता और इन्हें दूर करने वाले संघर्ष की रूपरेखा बनाता।

देव में पाशो की दिलचस्पी बढ़ती गई। उसका साथ उस सूरज की लौ जैसा लगता। उसके मन में कई बार आता कि वह सूरज जैसे देव से कहे 'देखो, मुझे अपनी थोड़ी बहुत लौ दिए रखना कहीं मैं अंधेरे में भटक न जाऊं। पर एक दिन वह हैरान ही रह गई। उसका सूरज ही उससे कह रहा था 'पाशो! तुमसे एक बात कहनी है लेकिन मैं झिझकता हूं मैंने कभी भी अपने ब्याह के बारे में नहीं सोचा था। सोचता था, जो रास्ता मैंने चुना है, उसमें इसके लिए कोई जगह नहीं है पर अब मैं महसूस करता हूं कि अगर तुम्हारा साथ मिल जाए तो मैं दुगनी हिम्मत से अन्याय के विरुद्ध लड़ सकता हूं' इसी के सरोवर में तैरती हुई पाशो, उदासी का गोता खा गई। वह कितनी ही देर तक एकटक देव की ओर देखती रही और फिर बड़ी कठिनाई से उसने नहीं में सिर हिला दिया 'देव! तुम्हारे बढ़ाए हुए हाथ को लौटाते हुए मेरा दिल फटता है पर यकीन करो, ब्याह की लकीर मेरे हाथ में नहीं है। छोटी बहन को पढ़ा लिखाकर किसी जगह के लायक बनाना है, फिर बूढ़ी मां को भी तो कोई सहारा चाहिए। बहुत अकेली हूं देव! पर मन के पास रहना मुझसे दूर न होना।'

पर देव ऐसा दूर गया कि फिर जिन्दगी में उसे देखना भी नसीब नहीं हुआ। देश की आजादी के लिए जेलों में रातें गिनते आखिर जेल में ही उसकी जिंदगी का अन्त हो गया

ठंडी हवा के झोंके ने उढ़का हुआ दरवाजा फिर खोल दिया। पाशो ने उठकर तख्ते भेड़े और अन्दर से चटखनी लगा दी। आज ठंड उसकी हड्डियों में सिरहन का काम कर रही थी। उसने हीटर को खोलकर और पास रख लिया। पर तपते हुए हीटर की ओर देखकर वह भयभीत

हो गई, उस मा की चिता याद हो आई जिस रात मा की मृत्यु हुई थी व दोनों बहनें लाश से चिपटी हुई सारी रात रोती रही थी। अन्त में पाश ने अपने आंसू पोछकर छोटी बहन को गले से लगा लिया था, यह तो दुख सारी उम्र का है रानी ! कितनी देर रोएगे हौसला कर रोने से कभी दुख नहीं मिटते !

और इन दुखो को मिटाने के लिए उसने सब कुछ भुला दिया। छोटी बहन को पढा लिखाकर नौकरी पर लगाया, और फिर अच्छा घर-बार देखकर उसका ब्याह कर दिया। बहन को घर से विदा करके वह बिलकुल अकेली रह गई। आते जाते, बहन-बहनोई ने कई बार साथ ले जाने के लिए जोर दिया पर उनका सिर नहीं में ही हिलता रहा। पर यह सच था कि अकेलपन की दम में पाश से उजला नहीं जाता था। उसे लगता जैसे घर की दीवारों में चिनी हुई वह सास तोड देगी जैसे अकेलेपन की गम तवा उसे झुलसाकर रख देगा। पर धीरे धीरे इस सब कुछ की उसे आदत पड गई। दीवारों के गले लगकर उसने अपने आपको बहला लिया। समय के पानियों में बहते हुए, अकेलेपन के बाईस बरस इन्ही पानियों में घुला दिए। इस वनवास का काटने में सिर्फ किताबें ही उसके साथ चली थी। उन्होंने ही पक्की सहेलियों की तरह दुखो में भी उसका हाथ थाम रखा था। पर कभी-कभी, कियामत जैसी शाम में कोई भी सहारा उसके साथ नहीं चलता था

आज वह थोडी देर पहले कमरे में बैठी पढ रही थी कि हानी के हाथों ने दरवाजा खटखटाया। उसने दरवाजा खोला तो एक अजनबी आदमी बाहर खडा था—"जी, मुझे पाश जी से मिलना है।' पाश ने अजनबी को गौर से देखा, पर वह बिलकुल ही अनजाना था, बोली आइए मैं ही पाश हू आइए ! कोई आधी उम्र में ऊपर का वह आदमी अन्दर आ गया।

'आप मुझे नहीं जानती।' आने वाले ने कहा, 'बस एक संयोग ही समझिए कि मैं आपके पास आ पहुचा हू। आने वाले ने अपनी ऐनक उतारकर सूरत के पल्ले से शीशे की ओर फिर उस पर...हुए कहा, 'आज से कोई चौबीस साल पहले देश का मेरी राह में साथ छोड जाना भी एक संयोग ही था। पाश देश का नाम सुनकर सारी की सारी काप गई। एक

भरी भरी-सी सास लकर उसन अपन आपको सभाला। वह कह जा रहा था, "भूख हडताल मे बयालीसवें दिन उसकी हालत बहुत ही खराब हो गई। उस दिन मैं पहरे पर था। दव एक एक सास करके मेरी आखो क सामने दम तोड रहा था। मुझसे झला न गया। पुलिस की वर्दी की परवाह न करत हुए मैं उसके सिरहान जा बैठा, पूछा 'दव ! काई सवा मरे लायक ?' वह बोला, 'बस, दोस्त ! तुम्हारी बडी कृपा पुलिस की वर्दी मे होते हुए भी तुम मेरे हमदद बने हो मनुष्यता का दद रखन वाले दोस्त ! एक खयाल आता है कि तुम लोगो न यह हथियार हमे बन्दी बनाने के लिए क्या उठाए हुए हैं ? क्या नही इनके मुह उनकी तरफ मोड देते जो हमारे देश की किस्मत नही बनने देत ? देव की बातें सुनकर मेरी आखें गीली हो गई। मेरे आसू पोछते हुए बोला, 'देखो, रोना नही, हम तो रोती हुई आखो के आसू पोछने निकले है फिर भी, उसके आसू तो सूख गए मेरे आज तक नही सूखे। मैं उसकी लाश से चिपटकर धाडें मारकर रो उठा। दूसरे कदियो को जब देव की मौत का पता चला तो जेल मे नारो का एक शोर मच गया। सबकी मिली हुई आवाज जेल कमचारियो का कियामत के शोर जसी लगी। वह भागते हुए हमारी तरफ आए। एक बागी की लाश पर मुझे रोते हुए देखकर गोरा सुपरिटेंडेंट खतरे को भाप गया। आते ही, पास पडी हुई राइफल को काबू म करते हुए वह मुझ पर बरसा, 'तुम्ह पता है, तुम एक खतरनाक बागी का पक्ष ले रह हो ? एक गद्दार से हमदर्दी के गुनाह की सजा जानते हो ?' जिस गोरे अफ्सर के सामने खडा हुआ मैं काप जाया करता था, उस दिन तनकर खडा हो गया "

बोलते बोलते अजनबी आदमी न एक आह जसी उदास पाश को देखा। उसकी आखो म अतीत का बादल बरसकर पानी ही पानी बन चुका था। अपनी आयु जितना लम्बा सास लेते हुए पाश न अपने आपको सभाला। वह नही चाहती थी कि घर आए अनजान मेहमान के आगे उसकी आखें बरस पडें। वह चुपचाप उठी और मेहमान से ओट म होकर आखें पोछ आई। पर रसोई म चाय बनात समय पाश की सास, जलते हुए स्टोव से भी ज्यादा गम थी। आज की यह यातना उसस सही नही जा रही

थी। शान्त मन के पानिया मे आज की घटना एक भारी पत्थर वनकर गिरी, जिसन नीचे की तह म डूबी हुई कितनी ही यादा का चक्योरकर सामने खडा कर दिया। मन के पानियो मे उस वह अक्षर तैरते दिखाई दिए जो देव के अतिम पत्र म उसके लिए बेचनिया जुटाकर लाए थे—'अपनी छोटी उम्र मे मैंन सिफ आजादी को ही प्यार किया था। इसकी प्राप्ति के लिए जब मैं अपन आपका मजबूत कर रहा था, तुम भी आज़ादी की तरह प्यारी लगने लगी और आज, मौत के थोडे से कदमा की दूरी पर खडा सोचता हू मेरी वारी आई तो कुदरत इतनी कजस क्या हो गई ? कम स कम एक चीज़ तो दे देती ।'

चाय उबलकर स्टोव पर गिरी तो पाश का ध्यान लौटा। चाय का गिलासा मे डालकर वह उस अजनवी के पास आ बठी। गिलास देते हुए पूछा, 'फिर आपक साथ क्या बीती ?

'वस जी, बीतना क्या था' अजनवी न चाय का घूट भरत हुए कहा मुझे भी सात साल की कैद ठुक गई। अभी कैद पूरी भी नही हुई थी कि देश आजाद होने क साथ हम भी आज़ाद हो गए। अजनवी न दो एक घूट और भरकर कहा कुछ साल तक ता होश ही नही रहा—वस आज़ादी की खुमारी मे ही उडते फिरते रहे और जब खुमारी उतरी तो महसूस हुआ कि कोई बहुत कुछ नही बदला था। जब हमन फिर आवाज़ बुलन्द की तो वही पुलिस वही यातनाए वही अदालतें और वही जेल । कुछ दिना से मैं दव की जीवनी लिखन के बारे मे सोच रहा हू। इसीलिए पूछते पूछते उस स्कूल पहुचा जहा देव पढा करता था। स्कूल के एक पुरान टीचर न आपका नाम लेत हुए बताया कि दव की निजी जिंदगी के बारे मे आप ही ज्यादा से ज्यादा बता सकती है। आपका नाम मेरे मन के किसी अधेरे कोन म एक उजाले की तरह चमक उठा। मुझे याद आया कि इस नाम की चिट्ठिया दव मरे हाथ से ही डाक म डलवाया करता था। उस टीचर से ठौर ठिकाना पूछकर मैं आप तक पहुचा हू '

फिर वह दव की बाता म ऐसे खोए कि उन्ह आसपास की भी सुध न रही। जब कमरे के अन्दर अधेरे की परछाइया खूब गहरी हो गईं ता पाश चौंककर उठी और बत्ती जला दी। दाना खाली गिलास उठाकर एक आग

रखकर फिर अपनी जगह आ बैठी।

"मै ज्यादा देर तक नही रुक सकता। बस एक बात और आपके लिए होगा तो मुश्किल पर जेल के दौरान लिखी गई दव की चिटिठया मेरी मदद कर सकती हैं।"

'चिटिठया?' पाश की सोच को एक झटका लगा 'मेरे पास जीन के लिए कुछ तो रहन दीजिए' कहना चाहती थी पर अपने इस विचार के लिए उसे शब्द न मिले। उसकी उदास आखो न जब अजनबी की ओर देखा तो वह चौक गई। कुर्सी पर बैठा हुआ अजनबी उसे देव का ही बदला हुआ रूप लगा। वही बातें, वही सादगी, और आखो की गहराइया म झलकता हुआ लोगो के लिए वसा ही दद। 'असल मे देव ने मुझे कोई चिट्ठी लिखी ही नही।' पाश न एक गहरा सास लेते हुए कहा, "उसने जो कुछ भी मुझे लिखा वह लोगो के लिए ही था," और उसने ट्रक मे से रुमाल मे लपटी हुई सारी चिटिठया निकालकर अजनबी को दे दी। "लीजिए आप पढ लें—तब तक मैं रसोई देखती हू। अजनबी न चिटिठिया लेत हुए अपनी घडी की ओर देखा, 'यहा से अमृतसर कितनी दर का रास्ता होगा?'

वस कोई आध घटे का।"

तब तो मुझे चलना चाहिए।'

नही, एसे मत सोचिए, आप यहा बे झिझक रात रह सकते है।"

रात को रहन की बात नही है पाशी! पर मैं जरूरी काम से कलकत्ता जा रहा हू। किसी भी तरह रुक नहा सकता।" अपना नाम एक अजनबी के मुह से इतन अपनत्व स सुनकर पाश हिल सी गई। देव भी उस बहुत बार ऐसे ही पुकार लिया करता था और आज एक लम्बे अर्से के बाद एक अनजान की तरह आए हुए मेहमान ने उसी नाम को लेकर पाश के अन्दर एक कम्पन सा छेड दिया।

'आप फिर कब आएगे?

यह फिर हमारी ज़िंदगी मे बहुत कम आता है। न जान कौन-सी जगह सघष क लिए इतजार कर रही होगी?'

पाश को लगा वह अजनबी की छाती पर सिर रखकर उम्रो के रुके हुए आसू बहा द, पर अपन ऊपर जब्त रखते हुए उसन सिर दीवार स लगा लिया

'नही पाशी ! रोना नही। यह आसू राने से नही मिटा देने से ही मिटेंगे।' अजनबी न कहा, और कुछ याद आ जान की तरह जल्दी स अपनी घडी की तरफ देखा—

'अच्छा, मैं चलता हू कही गाडी से न रह जाऊ ?' अजनबी ने वद आखा म आसू राक्ती हुई पाश के दोना हाथ अपन हाथा म कसकर थाम लिए।

जाने से पहले अपना नाम तो बताते जाइए। पाश न अपन खत्म हाते हुए होश के किसी तार को थामते हुए कहा।

"नाम क्या बताऊ, पाशी ? इस राह पर चलन वाले का कोई नाम नहीं होता पर एक लम्ब अर्से से दव के कदमा के निशान पर चलते हुए मैं अपने आपको दव ही समझने लगा हू।"

घर आया हुआ अजनबी दव बनकर चला गया तो पाश बहुत उदास हो गई छटे हुए पेड की तरह उदास, जाडो की धूप की तरह उदास, और किसी प्यारे की रह रहकर आन वाली याद की तरह उदास

ठंडी भट्ठी

निर्मलसिंह गरेवाल

अंधियारे मे भी केसरो के पगो ने उस धरती को पहचान लिया, जहा उसने अपना बचपन गुजारा था। हसती-खेलती के कधो पर जवानी के पर लगे वह उडती हुई अभी थोडी दूर ही गई थी कि बाज झपट पडा। उस बाज ने उसे चक्कर खिलाए, उसे नोचा, ताजा और कीमती मास खाकर ऊपर ही छोड दिया। वह बाज के पजे म से छूटी नही थी बाज ने खुद ही अपना पजा खोल दिया। वह चक्कर खाती हुई नीचे की ओर आई। उसका दिमाग चकराने लगा। वह गिरे तो कहा गिरे। वह हार चुकी थी, आखिर उसके अपने पैर धरती पर आ टिके वह अपने गाव मे खडी थी। उस गाव मे जहा उसने बचपन गुजारा था। धरती उसके परो को खीचने लगी। पर दिल अभी भी नही ठहर रहा था। वह शम और डर से धडक रहा था। गहन अधेरे मे भी वह सिर नीचा किए अपने घर की ओर बढ रही थी, कही कोई पहचान न ले और शोर न मचा दे केसरो आ गई धीवरो की लडकी, भट्ठी वाली जो भाग गई थी। ज्यो ज्यो वह आगे बढ रही थी, उसका डर भी बढता जा रहा था।

अगले मोड पर उसे ऐसे लगा, जैसे कोई आ रहा हो। वह डर सहम-कर सासें रोककर दीवार से सट गई। आने वाला लाठी की ठक ठक करता हुआ आगे गुजर गया शायद चौकीदार था। स्टेशन वाली पगडडी पार करके वह आगे आकर खडी हो गई। वह सोचने लगी अदर से जाए या बाहर की तरफ से, बाहर भी कुत्तो का डर था। अदर से गई तो सरदारो

की ओर रगापत्ती गुरद्वारे की लाइट म वह देखी जा सकती थी। कुछ पल वह सोचती रही, फिर हिम्मत करके वह चौपाल की ओर बढ ली। अपने आपको अधेरे म ढापती हुई वह चलती गई। जरा-सी भी आहट होती तो वह सहमकर खडी हो जाती। उसे ऐसा लगता जस यह आहट उसे देखकर हुई हो। अपन आपको छुपाती वह पोनी डगर पार कर गई। अचानक बराबर के कीकर से उल्लू चीख पडा। केसरो डर से काप उठी। उल्लू की आवाज सुनकर किसी कुत्ते न भौकना शुरू कर दिया। एक-दो-तीन, पता नही कितने कुत्ते भौंकन लगे। वह डरकर खडी हो गई। वह जितना भी धडकन को थामती, वह और बढती जाती थी। कुत्तो के भाकने की आवाज लगातार उसके काना म छीदे जा रही थी। कुत्तो की आवाज, लोग वह उधारी हो जाएगी। यह खयाल आते ही वह तजी से अपन घर की ओर बढ ली। कुत्ते पीछे ही भौकते रह गए। अगला मोड मुडकर उसन सुख की सास ली। शायद वह अपने घर के पास आ गई थी। पर गली लाघते हुए उसके कलेजे म हौल सा उठा उसने दाइ ओर गौर स ताका। अधेरे की कालिख न सब कुछ दबोचा हुआ था। उसके पर जबरन ऊपर की ओर बढ गए। पास जाकर उसे सब कुछ दिखा, यह उसकी भटठी थी—जहा वह चने भूना करती थी। अब वह ढह चुकी थी, उसकी तरह तबाह हो चुकी थी। उसन एक उमास भरी पता नही भटठी पर या अपने पर फिर पल-भर म जैस उसके शरीर म बिजली सी फिर गई हो। एक झनझनाहट ने उसका मुह दाइ ओर चौबारे की तरफ घुमा दिया। उसकी बुझी अधेरी आखा म धुधली सी रोशनी जाग पडी। यह चौबारा बचन का था। उस बचन का जा उसे प्यार करता था। पर पर वह आगे कुछ न सोच सकी।

वह धीरे धीरे चलती अपने घर की ओर बढ गई। पर उसके पैर जसे उसे बाध रहे हो उसन एक बार फिर मुडकर बचन के चौबारे की ओर ताका और करतारी के उस तारकोल के चौतरे के पास बठना चाहा जहा वह बठकर बचन के चौबारे की ओर ताका करती थी। पर उसे मायूसी हुई। तारकोल भी शायद ढलकर बिछ चुका था। केसरा को तारकाल अपनी जवानी सरीखा लगा जा कि अब ढल चुकी थी। खडी खडी पता

नही क्या-क्या सोचती रही।

बचन हमेशा उसकी भटठी पर तब आता था, जब वह भटठी बुयान को होती थी। केसरो हमेशा उसे कहती—"निगोडे, तू ठडी भटठी पर ही आया कर।'

वह आगे कहता— 'फिर क्या हुआ, दुबारा से सुलगा ले फिर तरा हमारा लिहाज काहे का हुआ।" 'काहे का लिहाज रे।" केसरो उसे छेडन के लिए कहती। 'पडोसदारी का"—बचन उसको टाल दता।

दिन बीते, केसरो और बचन दोनो मिलते रहे। दिल पिघलत रहे और दोना उडते रहे। जवानी भरती गई। दोनो खेलते रह। कभी-कभी केसरो का दिल डरता, बचन जाटा का बटा था और वह आप । उस डर था कि यह कैसे हो सकता है? यह सोचकर वह उदास हो जाती। वह अन्दर से बुझ जाती। उसके सारे चाव मर जात। वह अपन आपको कोई घटिया और बेकार-सी चीज समझने लगती। उसे खीझ-सी आती कि वह जाट क्यो नही है, ताकि वह हसे-खेले। हसती खलती ता वह अब भी थी —पर उसकी हसी फीकी थी, वह खेल डरावना था, पर फिर भी कसरा के मन मे कभी-कभी एक चिनगारी उभरती। बचन खुद—उसे ब्याह के लिए कहता था। दूसरा यह कि उसका खानदान छडा का था, और उसके घर मे लोग रिश्ता करने से झिझकते थे। पर फिर भी उनम सामाजिक फक था। चाहे बचन का इस बात की ओर ध्यान न था, पर फिर भी केसरो का मन अन्दर से बहुत डरता था। वह बुझी-बुझी-सी रहन लगी। बुझती बुधती आग जैसे एक बार पूरे ज़ोर से जल उठती है, वसे ही केसरो के दिल मे पता नही क्या आया, उसकी जवानी को आग लग गई। गाव म उड गई—केसरा निकल गई—केसरो भाग गई—सुरजीत फौजी के साथ।

बचन के दिल पर चोट लगी। वह सोचने-समझने से तग आ गया। दिनो मे ही ढल गया। शराब पीकर अफीम खाकर उसन खानदान की रीति निभाई। सबसे बडी रीति यह निभी कि वह छडा रह गया। उसकी मा न बहुत ज़ोर लगाया कि वह साम बन जाए। पर वह बहू का मुह दख बिना ही स्वग सिधार गई।

अन्दर से करतारो क पशुआ की आवाज के कारण केसरो वापस आ

गई। वह एक उसास भरकर रह गइ और घर की ओर चल पडी। उसका दिन अजीब ढग से धडकन लगा। उसे लगा, जसे वह किसी पवित्र जगह पर कूडा फेंकने जा रही हो। वह दुविधा म थी—जाए तो कहा जाए? मा के बिना उसे कौन गले लगाता? औरत औरत का दद समझती है। फिर मा सरीखा विशाल हृदय शायद दुनिया म किसीका नही होता। मा उसे गले से लगाएगी या नही? वह उसके सामने कसे पाप से खराचा चेहरा लेकर जाएगी? कैसे कालिख मला मुह दिखाएगी? उसे लगा वह अदर-बाहर से काली है अधेरे की तरह, जिसमे वह एक रोशनी की किरण की ओर बढ रही थी।

जसे जैसे द्वार नजदीक आ रहा था उसका दिल धडके जा रहा था। दरवाजे पर जाकर वह रुक गई। वही दरवाजा था। दरवाजे के कपाट उसपर हसत से लगे। उसने नजर उठाकर कुडे की ओर देखा नजर पडते ही उसकी चीख निकल गई। उसका कलेजा बाहर आ गया। आखें भर आइ। वह सुन सी हो गई। आखो के आगे अधेरा छा गया। उसके मुह से एक ही शब्द निकला हाय री मा!" और वह दरवाजे स सटी नीचे की ओर सरक गई। दरवाजे पर लगा ताला मौत का प्रतीक था।

केसरो सारा दिन अदर पडी रही। पता नही उस अदर कौन छोड गया था। पर अब उसके पास कोई नहा था। घर की सब चमकनी चीजें जो वह छोड गई थी उसपर अब मिट्टी जमी हुई थी। जिस खटिया पर वह पडी थी उसपर हाथ मारन पर धूल उडती थी। उसे खयाल आया कि वह गद म पडी हुई है, वह उठ बैठे और किसी साफ-सुथरी जगह पर बठ जाए। पर उसे एसा लगा कि वह साफ जगह जाकर क्या करेगी। वह अब कूडा ही तो थी जो गद मे पडी है तो क्या हुआ। वह ठीक जगह पर ही पडी है। फिर उसे और तरह के खयाल आने लग। उसे ऐसा लगा जैसे दिमाग म सोचो के सिवा उसका समूचा शरीर है ही नही। वह अकेली थी—रेगिस्तान मे पटे फूल की पखुटी की तरह जो झुलसी सी पडी हो। उस हैरानी थी कि वह मरी क्या नही? उसे मौत क्यो न आई? अगर वह न जाती? उसकी या ही मत मारी गई। अगर बचन की बात मान लेती तो तो वह अब चाहे कुछ भी होती, पर आज जैसी न होती। बचन

ने उसको बहुत चाहा था, पर वह ही पगली रही उसे समझ क्या न आई ?

धीरे धीरे बात बचन तक पहुच गई कि केसरो लौट आई है। सुनते ही बचन के शरीर म एक झनझनाहट-सी फिर गई, जिसन उसके पुराने जख्म उधेड दिए। वह निढाल सा अन्दर खटिया पर पड गया। दो दिन गुजर गए। उधर केसरो अन्दर स बाहर न निकली—इधर बचन भी घर से बाहर न निकला। दोनो भूखे प्यासे अपनी-अपनी खटिया पर पडे रहे। जसे किसीन उन्हे कील दिया हो। केसरो को पडे पडे पता नही कैसे खयाल आया कि वह बचन के पास चली जाए। शायद वह उसे कबूल ले। पर क्या ? यहा उसके विचार ठिठक गए। अब उसके पास क्या था ? वह क्या लेकर बचन के पास जाए। अब वह एक गुठली थी, जो चूसकर फेंक दी गई थी। हर ओर उसे अधेरा ही अधेरा दिखा।

साझ ढलन पर अधेरे न अपनी जगह घेरनी शुरू कर दी। उसन नलके पर जाकर पानी पीना चाहा। पर इस बात की मारी न उठी कि नलका चलान स आवाज होगी और बाहर लोग कहगे कि मुह काला करवा के भी टहलती फिरती है। वह करवट लेकर ही रह गई। उसने एक सूखा-सा घूट अपन अन्दर भरा। पर उसके मुह म इतना थूक भी नही था, जिससे उसका गला गीला हो सकता। वह उदास सी पडी रही। हारी थकी टूटी अब वह जिन्दगी से भागना चाह रही थी। पर जब वह यह सोचती कि उसने अभी क्या देखा है दुनिया म आकर ? क्या किया है ? उस जीन की चाह होती। पर फिर अपनी करतूत देखकर मरन को जी चाहता। कभी कुछ, कभी कुछ सोचती रही करवटें बदलती रही।

अचानक उस ऐसा लगा जैसे किसीके कदम उसकी ओर बढे आ रहे हो। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे इन कदमो की आहट उसन पहले भी सुनी हो। यह ख्याल आते ही उसका समूचा बदन हिल गया। पता नहीं गुस्से से या खुशी से। उसे अपनी सास रुकती सी लगी। उसने चाहा कि वह अपना सब कुछ ढाप ले। पर वह ऐसा न कर सकी। उसने बडा जोर लगाया कि वह आने वाले को न देख, पर पता नही क्यो जबरन उसकी पुतलिया उस ओर मुड गइ और आने वाले के मुह पर जा टिकी। आने

वाला बचन था। उसने केसरो को देखा। दमकता सिन्दूरी आम अब गुठली-सा बना हुआ था। उसका सब कुछ ढल चुका था। आखो मे कोई चाह नही थी। कोरे आसमान सरीखी उसकी आखें थी। बचन को लगा, केसरो को सहारे की जरूरत है। उसे पहले भी सहारे की ज़रूरत थी। उसने सहारा लिया भी था, पर उसने सहारा लेने के लिए जिस पेड स ढासना लगाया था, वह कटीला निकला। केसरो छलनी छलनी हो गई। उसे मरहम की जरूरत थी। कितनी देर तक बचन उसे रोती आखो स निहारता रहा। फिर पता नही उसके मुह म से कब अनायास ही निकल गया, "चल उठ केसरो।"

केसरो कुछ भी न बोल सकी, पर उसकी आखें बरस पडी। बचन को लगा जसे वह कह रही हो निगोडे ! अब भी भट्ठी ठडी होने पर ही आया है ।'

एक और लडकी

प्यारासिंह रमता

उस समय मै यहा बिलकुल अजनबी था। जब मैं उदास हो जाता, मेर मन मे कई सकल्प उठते। अन्य लोग यहा बहुत रगो मे रह रहे थे, मैं किसी भी रग मे नही था, इस बात का सिर्फ दलजीत को ही पता था हम दोना एक कमरे मे रह रहे थे। वह बहुत उदार स्वभाव का और धीरज वाला इसान था, पर मैं जसे उखडा हुआ, आवारागर्द सडको पर घूमता हुआ कइयो को मिलता, कई अचानक मुझे मिल जाते। उस दिन जब मुझे अहमद ईरानी अरबी चोगा पहने हुए और सिर पर सफेद अगोछा लपेटे हुए मिला था, उसका सारा रूप मुझे ताजरो की तरह लगा। पर इससे पहल जब वह मुझे उस अहाते के मोड पर मिला था तो उसके सिर के बालो की बेतरतीबी हजामत और खसता से पहने हुए कपडो मे मुझे वह सटको पर या ठेकेदारो के नीचे काम करने वाला मज़दूर लगा था। इसलिए मैंने उसको पहली नजर मे ही पहचान लिया। उसने मुझे सलाम किया और उत्तर मे मैंने भी उसकी बोली मे हालचाल पूछा पर वह हमारी बोली हिन्दी उर्दू की तरह बोला जिस वजह से मैं उसके और नज़दीक हो गया।

इस वक्त पता नही उसको किस बात की खुशी थी, मेरे पास आकर कहने लगा 'सरदारजी एक चीज है, उसको आप देखना।

उसने अपनी जेब मे हाथ डालकर कान म पहनने वाले सोने के दो चमके निकाले, और दोनो हाथो के पपोटो पर लटकाकर कहने लगा, 'इसको आप उर्दू मे क्या कहते हैं ?'

"झुमके।" मैंन मुस्करा कर कहा।

उसन इनकी खबसूरती और वजन के अन्दाज़े के लिए दोना घुमके मेरे हाथ पर रख दिए "कितन वजन के है? बताइए?"

मैंन अदाज से हाथ पर तोले और कहा, 'तकरीबन एक एक तोले के हैं। इतने भारी तो काना को फाड देंगे।'

"नही फटेंगे सरदारजी! हमारी एक महबूबा है, हम उसको देगा।" इसपर वह झूम उठा।

मैंन उसका दिल रखन के लिए कहा, 'मुबारक हो तुम्हारी महबूबा का! खुशी की बात है।" और मने दोना झुमके उसके हाथ पर रखकर कहा, "अच्छा सभलकर देना, य तुम्हारी दौलत भी है और मुहब्बत भी।'

उस दिन मैं घर जल्दी वापस न आ सका। सूरज का लाल टिक्का रेत के अम्बारो के पीछे जा चुका था। अधियारा गहरा रहा था। गम हवा म नमी आ गई थी। रात की आखिरी अजान पास की मस्जिद म से मुल्ला के मीठे गले म स गूजी और मेर काना म से गुजरकर शहर म अलोप हो गई।

लोहे का वडा गेट लाघकर मैं अपन कमर म पहुचा, ता दलजीत मेर इन्तज़ार मे ह्विस्का पी रहा था। मुझे चुप चुप देखकर उसन दूसर गिलास म एक वडा पग डाला और साडे स भरकर गिलास मेरे हाठा स लगा दिया। मैं उसके पकडे हुए गिलास का आधा पी गया फिर अपन हाथा म गिलास पकडकर उसका शुक्रिया अदा किया।

कमर का वातावरण एकदम एकाग्र हो गया। कमर की रोशनी खिडकी स निकलकर दूसरे घर की दीवार से टकरा रही थी, और खुले दरवाज़े की रोशनी दूर सडक क खम्बे से जाकर लिपट गई थी। मैंन उठकर दरवाज़ा बन्द कर दिया और फिर बठ गया। दिन भर की थकावट, जब ज़रा सुरूर आया तो मुझे सुबह की अहमद की बात याद आई। मन दलजीत से पूछा, 'तू अहमद को जानता है? वह जो इसी अहाते के कमर मे रहता है "

दलजीत इस बात पर मुस्कराया और कहन लगा—'पहले इसे पी ले।'

मैंने गिलास खाली करके वही जमीन पर रख दिया। दलजीत ने भी अपना गिलास पीकर वही शैल्फ पर टिका दिया और कहने लगा, "उठ आ! तुझे कुछ दिखाऊं।" उसने मेरा हाथ पकडा, और मुझे रसोई के कमरे में ले गया। रसोई की दीवार में छोटा-सा सुराख था। उसने उस सुराख में एक आंख से देखा पता नही उसने क्या देखा, दो मिनट के बाद मुझसे कहने लगा 'इधर आ और इसमें देख।'

मैंने दाई आंख उसी सुराख में गुजार दी। मेरी आंख अब दूसरे घर को देख रही थी। उस घर की चीजें हमारे घर की तरह ज्यादा बिखरी हुई नहीं थी, पर रोशनी के मलाव में मुये हर चीज गीली दिखी। उस घर में एक जवान लडकी स्कर्ट पहने घर का काम कर रही थी। उसके सिर के बाल एक से कटे हुए थे। टांगें मोमबत्ती सरीखी मुलायम और गोरे गोरे पैरों में लाल रंग की रबड की चप्पल थी। उस भूरी आंखों वाली को मैं बडी देर तक निहारता रहा। उसकी एक छोटी बहन और एक छोटा भाई लोहे की सलाखो से भुना हुआ कबाब उतारकर खा रहे थे। भूरी आंखों वाली एक और औरत थी, उसके पेट में बच्चा पूरे दिनो का होने वाला था। उसने अलसाई सी ने पीढी पर बैठे कोई दवाई जैसी चीज पी और उसने लडकी का नाम लेकर अपने पास बुलाया। तब मुझे पता लगा कि उसका नाम फौजिया है। फौजिया जब बोलती तो लगता जलतरंग बज रहा हो। उस समय उस घर में एक तरफ बैठा हुआ एक आदमी भी था। शायद वह उसका पिता हो। वह जिस वक्त अरबी में बोलता तो ऐसा लगता—जैसे ऊंट बलबला रहा हो।

दलजीत ने मेरा हाथ पकडकर कहा "आ अब चलें!" तो मेरी आग का सीन फिल्म की तरह टूट गया। हम दोनो कमरे में आकर फिर अपनी अपनी जगह बैठ गए। दलजीत ने दोनो गिलास सामने रखकर फिर एक एक पैग डाला, और सोडा डालकर मुझे गिलास पकडाकर कहा

तूने क्या देखा?"

एक जवान लडकी उसकी मां दो बच्चे और एक बूढा अरबी।' मैंने उत्तर दिया।

उसने ह्विस्की के घूंट भरे और कहा, 'यह बूढ़ा मेरा वाकिफ है। पहले

मुझे आम तौर पर मिलता था, अब पता नही क्या बात है। मतलब मेरी बातें करता है। औरतें हैं, अच्छी है, बुरके मे हैं।"

मरहबा।' मैंने उसे मुबारकबाद दी। उसने गभीर सा मुह बनाकर कहा, "और बातो का भी मुझे पता है जो तू कहे तो बताऊ। बात यह है कि अहमद इस लडकी के चक्कर मे पडा हुआ है। कुछ काम कर जाता है और छोटा मोटा सामान खरीदकर दे जाता है। पर इस लडकी का ब्याह हो चुका है, अपनी ही बिरादरी म। चाचा का बेटा है दो तीन बार अपने घर जा-आई है '

' इस बात का अहमद को नही पता ?' मैंने हैरानी से पूछा।

' जहा तक ब्याह की बात है, वह तो अहमद को पता है। पर बुडढा बहुत लालची है। उसने अहमद का कह रखा है कि फौजिया की शादी, पहले पति को तलाक देकर तेरे साथ कर दी जाएगी। इस झूठ का अहमद को कोई पता नही कि यह बात इस रिवाज के साथ सम्बंधित है। सारे अरब मे लडकिया भेड-बकरियो की तरह बिकती हैं।

अगले दिन मैं फिर अहमद को मिला। उसकी आखें आज पहले से ज्यादा लाल थी। पता नही गुस्से मे था या नशे म। मैंने उसे बिलकुल नही बुलाया, क्योंकि अब मैं उसको नही, उसकी मुहब्बत को देख रहा था ।

शाम को वह अपने कमरे मे आया। शेव की, मुह धोकर सफेद कपडा (चोगा) पहना और उगली के गिर्द माला को घुमाता कमरे से बाहर निकल गया। लौटकर जब घर आया तो काफी रात हो चुकी थी। कमरे की तन्हाई मे सारी रात पता नही कैसे सपने देखता रहा।

एक दिन वह पहले की तरह घर से निकला, फौजिया काला बुरका पहनकर एक अरबी आदमी के साथ घर से निकली और कच्चे कोठों म से होती हुई एक पक्की कोठी मे चली गई, और फिर किसी और आदमी की कार मे बैठकर दो घण्टे बाद घर लौट आई।

घर लौट आई या घर से निकल गई अहमद न इतना ही पता किया, और उस रात वह सीधा अपने कमरे म आकर सो गया। सो गया जागता रहा, इस बात का किसीको कोई पता नही। पर सुबह

बेलचा पकड़कर काम पर पहुंचा, तो उसकी आंखें जल रही थीं। मैं अचानक ही उसे मिल गया और दोस्ताना लहजे में पूछा, "अहमद क्या हाल है तेरा और तेरी महबूबा का ?"

मेरी बात सुनकर वह खूब हंसा फिर कहने लगा, "आज मेरी शादी है सरदारजी, तुम भी आना ! यह शादी सबके सामने होगी।" और उसकी आंखों की लाली फटकर जर्द हो गई थी ।

उस दिन मैं होटल में चाय पीकर किसी और जगह नहीं गया। अपने कमरे में आकर एक किताब पढ़ता रहा। मुहब्बत की कई झांकियां मेरे जहन में से गुजरती रहीं और मैं अपनी यादों को स्वयं ही देखता रहा।

दोपहर से शाम हो गई, फिर अंधियारा गहराने लगा। दलजीत ने काम से आकर खटिया पर लातें पसार दीं। आज वह काम करके बहुत थक गया था। मैंने उसे आराम करने को कहा, पर वह कहने लगा "गहरी थकावट, गहरी भूख गहरी नींद गहरी मुहब्बत, गहरे जख्म मुझे बड़े प्यारे लगते हैं। हर गहरी चीज मुझे बहुत पसन्द है। दिल चाहता है किसी गहराई में छलांग लगा दूं।

पर मैं अपनी गहराई का लाघकर जवाब देना चाहता था कि बराबर वाले घर में एक चीख सुनाई दी, बड़े जोर की एक और चीख हम दोनों चौंककर कमरे के बाहर आ गए। मैं उस घर के दरवाजे की ओर दौड़ा, पर दलजीत ने दौड़कर मेरी बांह पकड़ ली, नहीं अन्दर नहीं जाओ।"

एक और चीख फिर चीखें मारती फौजिया हमारी ओर का दरवाजा खोलकर बाहर आ गिरी। वह अपना सब कुछ दो बांहों और हाथों से छिपा रही थी, और अहमद तीन इंच के चाकू से फौजिया के नंगे जिस्म पर वार कर रहा था

मुझसे न रहा गया। मैंने दूर खड़े-खड़े ही ललकारा, अरे पागल !' पर उसने अपनी मरजी से फौजिया के जिस्म पर कई वार किए फिर चाकू कहीं दूर फेंक दिया और नशे में स्वयं ही थाने में जाकर बयान दे दिया, और अपना कसूर मान लिया। दूसरे दिन फौजिया अस्पताल में थी और अहमद हवालात में। फिर सुना, फौजिया की मां की गोद में उस रात एक और लड़की ने जन्म ले लिया

थके जिस्मों की गाथा

गुरचरण चाहल भीखी

सारा दिन हडिडया को तोड दने वाला काम होता, काम के बोझ से मन भी दबा रहता, उस भी सिर उठान का समय न मिलता। बस एक रात आती थी, जो उसके लिए खुशियो की झोली भर लाती थी।

हरिया रामकली की आखा के बारे म सोच रहा था। ऐसे लगता था, जस सारी दुनिया की सुदरता रामकली की आखा मे आ समाई हो। रामकली जब हरिये की तरफ देखती, तो उसे उसकी आखो मे प्यार का समुदर उमडता दिखाई पडता। ऐसे समय म हरिये का जी चाहता कि वह रामकली को अपनी बाहो मे भर ले, खूब खाए और आखो मे छलकते प्यार को अपने होठो स पी ले। परन्तु ऐसा करना उसके नसीब मे नही था। काम धन्धा म लगे हुए लोग उन्ह देख रहे थे। शर्म शर्म के मारे उनके मन पिल्लो की तरह अपने दरबो मे दुबक जाते।

भटठे पर सारा दिन मोटी मोटी रेत उडती रहती। जो कामगारो की आखा म रात को भी रडकती रहती, उन्ह प्यार के मीठे सपने भी न लेन देती। भट्ठे पर सारा दिन, कानो के पर्दे फाडता, इटें ढोने वाले ट्रको-ट्रालिया का शोर होता। साथ ही किसी ऊची जगह पर खडे ट्रको के ड्राइवर तथा काना मुशी मजदूर औरता के साथ कामुकतापूण भद्दे मजाक करते रहत। वे मजदूर औरतो की ओर देखते थे, मानो उन्ह आखो ही आखा से भोग रहे हा।

एसे समय मे हरिये के जी म आता कि वह उन सबके सिर पर इट दे

मारे ! और रामकली को एस माहौल स यही दूर ले जाए !

बस सारा दिन कुछ इसी प्रकार घटता रहता। शाम तक रेत की इतनी तह मजदूरा के चेहरो पर जम जाती कि उन्हें पहचानना भी मुश्किल हो जाता। शरीर थककर इतना चूर हो जाता कि गन्न सीधी करम सामने तक न दखा जाता था। रत की यह तह केवल जिस्मा पर ही नहा मन पर भी जमती जा रही थी।

साचो मे ढालन के लिए, मिट्टी को रौन्ते हुए मजदूरा को देखकर हरिये को लगता था कि वे मिट्टी को नही रौंद रहे, बल्कि मिट्टी उन्हें रौंद रही है।

आज सुबह जब हरिया गम गम चाय की चुस्किया ले-लेकर पी रहा था, तो थाडी ही दूर श्वास कास की मरीज बूढी मा खास रही थी, तथा छोटा भाई छोटी बहन को छेडखानी करके जगा रहा था, तो रामकली न हरिये की बाटी म चाय की एक और पत्ती डालत हुए उसकी ओर शिकायत-भरे ढग से देखा। उसकी आखो की पलकें बहुत थोडी दर के लिए खुलती थी, और फिर शीघ्र ही बद हो जाती थी। उसकी वह अदा हरिये को बहुत अच्छी लगती थी।

"क्यो ?" हरिये की आखा ने सवाल किया था।

आप, रात को बहुत जल्दी सो गए ? मैं आधी रात तक जागती रही। कितनी ही देर तक आपके सिरहाने खडी रही। एसी भी भला क्या नीद ?' शिकायत भरे मीठे लहजे मे रामकली टेढी गदन करके धीरे-धीरे बोली थी और हरिया सिफ मुस्कराकर रह गया था।

'पगली ! थक हुआ को ऐसी ही नीद आती है।"

मैंने भी सोचा, चलो सा लेने दे, थके हुए हैं।"

बाद मे वे दोनो मुस्कराते रहे थे। माना इन्ही दो शब्दा से शिकायत दूर हो गई हो।

भटठे पर ट्रको-ट्रालियो का शोर शुरू हो गया था। हरिये का छोटा भाई गधे खोलकर भटठे पर ले गया था। गधो के ऊचे ऊचे बजत घुघरू माना उस पुकार रहे थ।

'अच्छा आज सही !'' सारी दुनिया का मोह अपनी आखों मे भरकर हरिये ने रामकली की तरफ देखा। मीठा मीठा मुस्कराया और तेज कदमो से भटठे की तरफ चल दिया।

वह सोच रहा था—साली, यह भी कोई जिन्दगी है? दिन भर हड्डिया तोडता काम और रात को नीद ! हरिये को लगता, कोई अच्छी-सी चीज उसकी मुटठी मे आई हुई है। परन्तु वह उसका आनन्द नही ले सकता। रेत की तरह वह फिसलती ही जा रही है। भविष्य मे उसके रीत जाने की कल्पना से उसकी रूह काप उठती थी।

दिन मे आते-जाते जब कभी दोनो की आखें मिलती तो उनमे एक भूख चमकती थी मानो पेट की भूख मे और मन की भूख मे कोसो की दूरी हो! पेट की भूख के लिए हरिये को शुरू से ही कमरतोड मेहनत करनी पडी थी। तब से ही, जब वह बेहद छोटा था।

भटठे के मजदूरो की छोटी छोटी झुग्गिया थी जिनमे हवा और प्रकाश आने का कोई साधन नही था। वे इतनी छोटी थी कि एक दो घडा, थोडे बहुत खाने पीने के सिलवर के बरतन, गधो के पलाने और एक दो टूटी-फूटी चारपाइयो से भी भरी भरी लगती थी। कच्ची इटें भटठे के अन्दर पहुचाना और पक्की इटो को बाहर निकालने का लम्बा या छोटा हरिये का सफर था।

इटें पलानो से उतर जाने पर गधे तेज भागते थे, मानो यह एक परम्परा हो। बस यह सब हरिये की नजरो मे धरती पर युगो से हो रहा था। अगर गधे धीरे धीरे चलते या खडे हो जाते, तो हरिया उन्हे अपनी बोली मे अच्छी-सी गाली देता, डडा घुमाता, तो वे फिर अपनी पैतृक चाल पकड लेते।

एक जमाना था, जब हरिया गधो को इटो के भटठे तक ले जाता था और उसका बाप इटे लादता था। हरिया बारी-बारी कान से पकडकर गधो को भटठो के पास लाता था। गधे आखे मीचे, साधु बन खडे रहते थे। परन्तु वह जमाना बीत गया था। उसका पिता लम्बी बीमारी भोगने के बाद मर गया था। हरिये ने समय से पहले ही अपने बाप की जगह सभाल ली थी और गधो को हाकने का काम उसके भाई ने छोटी उमर मे

ही पकड लिया था।

ज्योंही हरिये की ठोडी पर एक-दो दाढी के बाल आए माना बूढा उन्हीकी इ तजार म था चलता बना। विरामत म हरिये के लिए कमर-ताड काम छाड गया।

जबस हरिय न होश सभाला था, उसकी आखो के आगे बस एक ही दृश्य था। भटठे का भयानक दृश्य ! जहा दिन भर रेत उडती थी। जगह जगह ईटो क भटठे थ। किसी राक्षस की लम्बी-लम्बी टागो-सी धुआ उगलती चिमनिया थीं।

बस एक चीज थी जो बदलती थी। वह थी गोरी निछोर हद से ज्यादा शर्मीली हरिये की नई-नवेली दुल्हन ! उसकी पायल उसके काना मे मीठा मीठा शहद घोलती रहती थी। उसके छोटे और गोरे पावा मे पायल दक्न म भी सु दर लगती थी। जबस वह आई थी, हरिये की नजरा का वाता वरण बदल गया था। सब कुछ सु दर और प्यारा हो गया था।

हरिया चाहता था—रामकली हर वक्त उसके इद गिद नाचती रहे और वह उसकी पायल का मीठा मीठा सगीत सुनता रहे। उसके खिले हुए बदन को देखता रह। अगर वह शम से आखें झुका ले तो चेहरे की सु दरता का ही रसपान करता रह। पर तु काम था जो हरिये को कुछ न करन देता। हवा मे उडती लाल रेत से रामकली का चेहरा भी पुत गया था, और काम मे उलझे हरिये को एसा लगता था, मानो वह रामकली को निकट से नही, कोसो दूर से देख रहा हो !

काम था जो दिन उगे ही शुरू होता और वही रात पडे खत्म होता। जब टिमटिमात हुए तारे लिए रात आती, तो थकी हुई गदनें सीधी भी न हो पाती ! चारपाइयो पर गिरते ही थके हुए जिस्म गहरी नींद मे डूब जाते।

पर तु हरिये के मन की हसरत सदा जागती रहती—वह हो राम कली हो निकट नाले पर उगे वक्षा म से गुजरती हुई हवा गा रही हो वह रामकली के साथ इतनी बातें करे कि बातें कभी भी खत्म न हो !

पर तु रामकली थी हरिया था। वे रात का ज्योंही एक-दूसरे की

घाट की तरफ बढते, तो कभी किसी मज़दूर औरत का बच्चा रोने लग जाता, कभी हरिये की बूढी मा की खासी चल पडती, कभी कोई गधा बोल पडता, तो फिर एक दूसरे की होड मे सारे गधे ही चू ही चू करने लग पडते। शाति भग हो जाती। प्यासे हरिये तथा रामकली के होठो से लगा गिलास कोई गिरा देता। हरिया सोचता—ज़िन्दगी की कल्पना कितनी मीठी है और ज़िन्दगी का यथार्थ कितना कडवा है।

जब कभी हरिया मुशी की कोठी मे लगे शीशे के सामने खडा होता तो उसमे उसे अपने पिता की परछाइ नज़र आती। ऐसे लगता था, मानो बूढा हरिये के रूप मे फिर से कामो की चरखी पर आ चढा हो। हरिये की रेत से ढकी ज़िन्दगी मे हर वक्त कुछ सुलगता रहता था।

ज़िन्दगी ईटे उतारकर आए गधो की तरह भाग रही थी। कभी ईटो के भार से लचक भी जाती थी। एक कल था, जो बीत गया था। एक कल था, जो आना था। बीता हुआ कल थकी हुई हड्डियो की पीडा-सा था और आने वाला कल सब कुछ निगल जाने को तयार था। हरिये की रेत मे ढकी ज़िन्दगी मे भी खुशबू थी। थोडे दिन रहने वाली खुशबू! हरिया इसका मज़ा लेना चाहता था, परन्तु भट्ठे की रेत ने सब मज़ा किरकिरा कर दिया था। हरिया जानता था जिस प्रकार उसका पिता काल की भेट चढ गया, उस प्रकार वह भी चढ जाएगा। उसकी हरकतें भी।

कभी-कभी भट्ठे का मालिक कार पर अपनी पत्नी के साथ आता। मालिक कालाकलूटा और भद्दा था। उसकी घरवाली बडी सुन्दर थी। जब वह अपनी पत्नी को बाहो मे लिए घूमता, तो हरिये को अपनी दादी से सुनी कहानी याद आ जाती—'एक राक्षस था, वह एक सुन्दर-सी राजकुमारी को चुरा ले गया और उसके साथ मनचाही हरकतें करता रहा।'

ऐसे मे हरिये के भीतर सेठ के प्रति नफरत की आग सुलगने लगती उसे उसकी मेम जसी पत्नी पर तरस आता। कभी-कभी हरिये को लगता, सेठ की बाहो मे और कोई औरत नही रामकली ही है। वह चीख मारकर हमला करने ही वाला होता कि उसे रामकली की पायल की झकार सुनाई पड जाती, जो कही पास ही ईटो की बुर्जी उठाए चल रही होती थी।

तब भट्ठे के मालिक की दूध जसी सफेद मेम हरिये को रामकली के

आगे तुच्छ लगती। वह कोई बहाना बनाकर रामकली के पास जाता और कहता— 'देख, उसके रगे हुए हाठ भी इतने लाल नही जितने तरे। मुझे तो उसके रगे हुए हाठा स घिन आती है। गेहू जसा रग भी तो तरा कितना सुन्दर है। तेरी सासो मे भी गेहू की रोटिया की महक आती है।"

बडाई सुनकर, शम से दुहरी होकर रामकली दूसरी आर देखन लगती, तो हरिये का मन उसकी इस अदा पर कुरबान होने को करता। उसकी वाह रामकली की ओर बढती, परन्तु चारो ओर काम मे लगे चेहरे उनकी तरफ उठ जाते। खास करके किसी ऊचे स्थान पर खडे काना-फूसी का अटटहास सुनाई पड जाता।

हरिये का छोटा भाई गधो को तेज हाकता हुआ जब उन्हें ला खडा करता, तो हरिया अपनी तुलना गधो से ही करने लग पडता। उसे गधा पर भी तरस आता। वह अपन छोटे भाई को सदा आदेश देता रहता— पशुआ को मारा नही करते। ये भी बेचारे अपने जसे ही है।"

फिर उसका जी चाहता, कि वह गधो को पाव पकडकर पूजे, जस कि देवताओ की पूजा की जाती है।

कामो म लदा, पहाड जैसा दिन खत्म होता, तो रात आती, जो उनक लिए खुशिया की झोली भर लाती।

'अच्छा आज सही।' लाता की रेत अपनी पगडी से झाडते हुए हरिये ने रामकली से कहा।

सितारा की चुनरी ओढे रात मुस्करा रही थी। अगनाई की ओट म रामकली बेचनी से करवटें बदल-बदलकर जसे समय काट रही थी। थके हुए हरिये को भी नींद क कितन ही झोके आ चुके थ।

निकट के नाले के किनार उगे पडा म से गाती हुई हवा गुजर रही थी। वातावरण शात था। गाव म दूर कही कुत्ता के भावन की आवाजें आ रही थी।

बुड्ढी दमे की मरीज भी शात थी। हरिया खटिया पर उठ बैठा। किरती (तारा का झुड) पश्चिम की ओर चली गई थी चाद पेडो की ओट मे चला गया था। कितनी ही रात बीत गई थी। उसे लगता था

मानो हरिया इतनी देर तक प्रतीक्षा करता रहा हो।

रामकली के मीठे सासा की आवाज आ रहा थी। हरिया धीरे धीरे उठकर रामकली की खाट पर आया। धीरे से सिरहान की ओर बैठ गया। पडा मे से छनकर आ रही चितकबरी चादनी रामकली के सौंदय को चौगुना कर रही थी।

हरिये का जी चाहा कि वह युगा युगो तक रामकली के इस रूप का देखता रहे और वह कितनी देर तक देखता रहा। एक वार उसने रामकली को जगाना चाहा परन्तु फिर सोचा—'थकी हुई है बेचारी को सो लेन द।'

हरिये को खुद को भी जोरो से नीद आ रही थी। वह उसी प्रकार धीरे-धीरे अपनी चारपाई पर आ गया और नीद म डब गया।

सुबह हरिये न शिकायत की— 'रात तू बडी जल्दी सो गई ?'

थके हुओ का नाद आ ही जाती है।'

आखें नीची किए हुए रामकली मुस्करा रही थी। हरिये न महसूस किया कि उसका मीठा वतमान मुट्ठी म भरी वाल की तरह रीत रहा है।

इबारत

हरजीत

कल मैं अपने कमरे को अलविदा कहकर, जब दरवाजे के बाहर आया, तो एक आदमी बिलकुल मेरे ही जैसा, मेरे कमरे म दाखिल होकर मेरी ही तरह मेज पर बाह फैला हाफ्ते हुए बठ गया। फिर अपन बाए हाथ की उगली से मेज पर रखी हुई किताबो पर ऐस लकीर खीची, जस कोइ धूल सने साज के तारा को बहुत ही उदास पोरा से छेडता है। उगली एक किताब पर अटक गई।

उसने किताब की जिल्द पलटी। पहले खाली पन्न पर एक तारीख और एक रिश्ते का दस्तावेज था। रिश्तो की इबारत कहत हुए उसन अक्षरो को फिर साज की तरह छेड़ा।

बाहर बिजली के तार पर रोज की तरह बठा हुआ काला पक्षी पालने की तरह झूल रहा था।

अपने इतन उदास होन पर जब वह बहुत जार स हसा तो पक्षी फडफडाता हुआ हवा मे कूद गया— कितना अजीब आदमी है।

फिर वह मेरी ही तरह बिस्तर पर गिर पडा, और तकिय म चेहरा डुबोकर गुनगुनान लगा। किताब के पहले पन्न के अक्षर उसके पास आए और एक अनुपस्थित हाथ की उगलिया उसके उलझे हुए बालो को सहलाने लगी, और फिर उसके कान के पास बहुत ही धीम स्वर म कहा, 'हिशशशश ! पागल न हो रात कितनी हो गई है कोई भला एस भी जागता है। तुम सो क्या नही रहे हो ?'

वह बिलकुल मेरी ही तरह लेटा रहा। उसने फिर कहा "देखो, सवेरा होते ही मैं धूप की उंगलियां बनकर तुम्हारी बंद पलकों पर दस्तक दूंगी और फिर एक बहुत खूबसूरत दिन होगा पर तुम सुबह तक पलकें मत खोलना।

पर आधी रात से ही उसके जहन में भयानक सपने तैरने लगे। जब वह तड़का होने पर जागा तो मेरे साथ तपती दोपहर में रेत की लम्बी सड़क पर चलता जा रहा था।

एक पेड़ के नीचे किसीके आखिरी पद चिह्नों पर पैरों का उधड़ा हुआ मांस, एक डायरी, और मीलों के अंक पड़े हुए हैं। कुछ पल सुस्ताने के लिए हम पेड़ के नीचे बैठ गए। रेत में पक्षियों के परों से अनेक चेहरे बने हुए थे। वह आदमी उठकर खड़ा हो गया और बोला, "तुम चलते रहो मैं तुमसे अगले पेड़ की छाया के नीचे मिलूंगा।' यह कहते हुए वह रेत में पद चिह्नों की नावें बनाता हुआ वापस लौट गया। वह बिलकुल मेरी ही तरह उस लड़की के सामने जाकर खड़ा हो गया। वह बोली "मैं जब भी कागज पर पक्षी बनाती वे हमेशा उड़ जाते। पेड़ों में से गुजरती हुई आवारा हवा का संगीत मुझे क्यों नहीं सुनाई देता? सब रंगों की प्रकृति उदास ही क्यों होती है?

पर वह बिना कुछ कहे चुप बैठ गया, उसकी आंखें जल रही थीं और वह बुखार से तप रहा था।

'तुम्हें मालूम है नींद नाम की कोई चीज भी होती है इस दुनिया में।' वह उसकी जलती हुई आंखों को चूमकर हंसने लगी। वह कहकहा मारकर हंसी, तो बिल्डिंग कांप उठी, पर वह कहकहे के ऐन शिखर पर एक आंसू ढुलका बैठी।

तो वह बिलकुल मेरी ही तरह बोला, 'उदास मत हुआ करो।'

वह हंस पड़ी, तुम कौन हो जो ऐसे चुपचाप मुझे उदास देखकर मेरे इतने नजदीक आ गए?'

एक गैरहाजिर हाथ की छोटी सी लकीर हूं।

पगले! गैरहाजिर चीजों का भी कोई अस्तित्व होता है?'

किसीकी गैरहाजरी में किसीका अस्तित्व ही तो बचता है।

कल फिर आओगे न ? देखो, नही मत कहना, जरूर आना।"

'मुझे कल उस लडकी से मिलने जाना है।" मेरे साथ रेत मे चलते हुए वह बोला।

"तुम्हे नहीं जाना चाहिए, रेतीले रास्ते, जड की छाया, और उघडे हुए पर लेकर कैसे जाओगे ? जिस एक घर की छत की स्निग्ध छाया की जरूरत हो, उसे कागज़ की छाया नही दी जाती।'

और हम दिन भर बस चलते ही रहे।

हम दोनो चले जा रहे थे कि वह अचानक रास्ते मे आकर खडी हो गई।

'मैं कितना इन्तज़ार करती रही,' रास्ता रोकने के लिए उसने दोनो बाहे फैला दी।

"आपसे मैं इसी जगह पर मिलूगा।" यह कहकर मैं दूसरी ओर चल दिया।

मैंने पीछे मुडकर देखा, वे रेत मे घर घर खेल रहे थे। मुझे याद आया, यह आदमी बचपन मे कैसे घरौदे बनाकर खेलता था, और इस खेल से तो इसे पागलपन की सीमा तक प्यार था। खाली डिबिया, टूटी हुई चीजें तीलिया तिनके और धागा से यह घर बनाता, तो मा कहलाने वाली एक औरत चीखती, क्या गदगी फैला रहे हो यहा ?' और वह पाव से सारी चीजो को बिखेर देती। वे अभी भी घर-घर खेल रहे थे, और जगली फूलो की बाडो की पक्तिया बना रहे थे।

इस आयु मे बच्चो की तरह नही खेलना चाहिए। अभी कोई मा कहलाने वाली औरत पाव से इस घर को बिखेर देगी। मैं घबराकर उस आदमी को आवाज़ देता हू पर उस आवाज़ को तेज हवा फिर मेरे पास लौटा लाती है। तभी कोई मेरे कधे पर टहोका देता है।

'कहा रहे इतने दिन ? उस आदमी को लौटाते क्यो नही ? कोई घायल पोरो और गिटटे वाले हाथो से भी रेत के घर बनाता है ? तो मैं उसके पतले, पर बडे ही राप मे भरे चेहरे की ओर देखने लगता हू।

'जानते हो शहर मे क्या हो रहा है ? तुम ऐसे ही बेखबर भटक रहे हो।

" 'तन हुए मुक्के' आपके इन्तजार मे हैं। यह समय ऐसे व्यय गवान के लिए नही है।' वह मुझे खीचकर रेत के घर के पास ले जाता, और दूसरे आदमी को भी उसके कुरते से पकडकर खडा कर लेता है और हम तीना एक ही दिशा मे चलन लगते हैं—

कुछ देर हम चुपचाप चलते रहे।

लडकी अभी भी रेत के घर के पास बठी है।

एक तनाव भरी स्थिति आती है।

वह आदमी बालता है "हम तीना एक साथ नही जा सकते "

वह रेत के घर का मोह नही छोड सकता।

मैं सफर का अधूरा नही छोड सकता।

और तीसरा आदमी अपना काम नही छोड सकता वह सडक पर एक खोखे मे साइनबोड पेंट करता है।

वह रग लिथडे, मले कपडा वाला तीसरा आदमी कहता है "अच्छा मैं तो वापस जा रहा हू, मुझे अभी 'हैरीसन लाक्स' के कितने ही बोड पेंट करन है और फिर रात के समय उस इबारत को बार-बार लिखना है जा मुझे कोई अज्ञात व्यक्ति लालटेन की रोशनी मे दे गया था।'

'अच्छा, हम फिर मिलेंगे।"

यह कहकर हम अपनी अपनी दिशा की ओर चलने लगते है।

पर वे दोना अभी भी पेड के नीचे रेत के घर के पास खडे हैं।

' क्या तुम्हे घर बहुत अच्छा लगता है ?" लडकी ने पूछा।

' हा।'

' तुम मेरे साथ रहो "

' मेहमान बनकर कितनी देर जिया जा सकता है। हर मूल्यवान वस्तु मेहमान को भेंट की जाती है पर उसका चले जाना बिलकुल निश्चित होता है।

"तुम मेहमान थोडे ही होगे।'

'नही गैस्ट होऊगा,' वह आदमी बडी जोर से हसा, ता फिर वही

वाला पक्षी हवा म यह कहत हुए कूदा, 'कितना अजीब आदमी है !'

लडकी चौककर बोली, "तुम्ह कैसा घर चाहिए ?'

"जैसा मैंन बचपन म बनाया था, जिस एक मा कहलान वाली औरत न परा से बुहार दिया था।"

' तुम अपन आपको किसी घर के नाप के अनुसार क्या नही ले आत ? '

' हम अब चलना चाहिए। दिन बीत गया है। शायद हम फिर कभी मिलें, शायद अजनबियो की तरह। हम जब फिर मिलेंगे तो इन क्षणा का जरूर दोहराएग, हसते हुए याद करेंगे, कैसे हमने अचानक एक दिन बच्चा की तरह रेत के घर बनाते हुए बिताया था।"

मैंन देखा, वे दोना मेरी ओर चले आ रहे थे।

'अच्छा अलविदा ! हम अब रगसाज़ के पास जाना है, जो 'हैरीसन लाक्स के सारे बोड पेंट करके रात वाली इबारत लिखन के लिए बहुत बेचैन होगा।'

हम रगसाज़ के पास पहुचे।

बिखर हुए रग, तारपीन की महक, बडे-बडे खाली डिब्बा से उसकी आवाज़ टकराई।

' समय बर्बाद न करो और रात की इबारत लिखो।" एक ओर साइन बोर्डों का अम्बार लगा हुआ था। सारे बोर्डों पर तालों के चित्र बन चुके थे, बस इबारत बाकी थी।

' यह सब एक ही कम्पनी के ह ?" मैंन पूछा।

लॉक्स वही है, नाम बदलते रहते हैं।" रगसाज़ ने उत्तर दिया।

हम तीना इबारत लिखने लगते है।

पहला आदमी अब भी 'रेत के घर' की, और 'उदास लडकी की कहानी लिखन लगता है।

रगसाज़ उस इबारत को लिखने लगता है जो उस एक अनात व्यक्ति लालटन की रोशनी म द गया था।

मैं अपने सफर, और इन दोनो आदमियो की कहानी लिख रहा हू।

हा मुझे तो सिफ इबारत को दस्तावेज़ बनाना है।

सफेद रात का जख्म

रामसरूप अणखी

उसने धूनी की लकडी को चिमटे से कुरेद दिया। दो तीन छोटी छोटी चिनगारियां लाल पीली-सी चमक देकर राख पर गिर पडीं। सेंक के पास बैठा होने के बावजूद शीत की कपकपी उसे छू गई। मौत की सी खामोशी उसके रोए रोए को डस रही थी। तडके सवेरे ही लम्बरदार की बडी बहू आएगी, तो वह उसे क्या जवाब देगा ?

मंगलदास की दाढी में अभी तक एक भी सफेद बाल नहीं था। उसके चेहरे पर अभी तक एक भी लकीर नहीं उभरी थी। उसकी आंखों में पूरी चमक थी। उसके शरीर की गोलाइयां सख्त और मजबूत थीं। लम्बरदार की बडी बहू उसपर कुछ ज्यादा ही भूल आई थी। बस तो लम्बरदार का बडा बेटा खासा हृष्ट-पुष्ट था लेकिन कुदरत का खेल, वह अपनी पत्नी को कोई बच्चा नहीं दे पाया था। उस गांव की लडकियां, बूढियां और बहुएं सुबह के वक्त मंगलदास के टीले पर सीस नवाने आतीं। उनके साथ लम्बरदार की बडी बहू भी पन्द्रह दिन तक आती रही। आज सुबह भी वह दूसरों से आंख बचाकर मंगलदास को कोई गुप्त संकेत कर गई थी। फिर सबके साथ वापस जाते हुए वह क्षण भर के लिए मुडी थी और यत्न तडके आने के लिए कह गई थी। उसके पांव छूते समय वह मंगलदास के पांव का अंगूठा भी दबा गई थी। वह तो सुन्न बना-सा बैठा रह गया था। एक शब्द तक उसके मुंह में नहीं फूट सका था और अब आधी रात तक जागता और धूनी के पास बैठा वह इस चिन्ता में मग्न था कि अगर वह आ

गई, तो धरती के किस कोने मे वह गक हो सकेगा।

जग्गा सुलफे की आखिरी चिलम पीकर कब का घर जा चुका था। गाधू नाई टीले के सभी छोटे मोटे काम निबटाकर धूनी से दूर, कच्ची इटो की ओट म, कपास की टहनिया से बनी अपनी झुग्गी मे टाट पर लाल गूदड लपट सो रहा था। तालाब के शात गहर पानी म से एक मुगाबी निकली थी, और पत्त फडफडाकर उसन टीले का एक चक्कर लगाया था, उसके बाद वह फिर पानी मे गुम हो गई थी। आसमान मे पूरा चाद बफ की तश्तरी की तरह तर रहा था। टीले के पास के गहू क खेतो पर दूधिया सफेद चादनी उतर रही थी, जसे एक सूरज डूबा हो, दूसरा चढ गया हो। सफेद रात की खामोशी न मगलदास को और बेचन कर दिया था। चादनी की तीखी सुइया उसके अग-अग को बीध रही थी।

मगलदास का जन्म जाटो के घर मे हुआ था। छोटा-सा मगल जानवर चराता था। तब उनके पडोस म अपनी मौसी के पास आई उसकी हमउम्र लडकी भी एक दिन खेत मे आई थी। रहट पर से पानी पीते हुए वह मगल क मुह पर पानी के छीटे फेंक गई थी, और पागला की तरह हसी थी। फिर तो जब कभी भी वे मिलते, तो चोर हसी हसते रहत। कभी कभार कोई बात भी कर लेते। एक महीना रहकर वह अपन गाव लौट गई थी। दो साल बाद आई तो जसे वह पूरी गाय बन चुकी थी। ऊचा कद, भरे भरे अग, चलती तो धरती धसकन लगती। किसी काम से वह उनके घर आइ। अधेरा घिर रहा था। वह लौटकर जा रही थी कि मगल न उसे दरवाजे म ही राक लिया, और कुछ भी आगा पीछा, सोचे-देखे बगर उसने उस बाहा मे घर लिया। उसके शरीर म कोई मीठा मीठा सेंक था। बेसुरती क आलम म मगल न उसे चूम लिया, तो उसे यो लगा जस उसने पहले तोड की शराब का कोई गुनगुना-सा घूट भर लिया हो।

इस बार तो वह चार पाच दिन ही रही थी, लेकिन इन चार-पाच दिनो मे ही मगल न कोई अजीब ससार देख लिया था। उन्हाने पानी के चुल्लू भरकर कसमे खाई कि वे ब्याह करेंगे तो सिफ एक-दूसरे से ही वरना वरना करेंगे ही नही

और फिर चार-पाच महीना के बाद ही मगल के कानो म सीतो के

ब्याह से सम्बन्धित बातें पड़ने लगी। एक दिन दोपहर को जोत छोड़कर वह घर आया, तो एक बुढ़िया से उसकी मा यही बातें कर रही थी।

सीतो ने अपनी मा से कहा था और मा अपनी बहन के पास [illegible] थी।

मौसी ने शरीकेबाजी का जिक्र किया था, और बहन को [illegible] सौ बातें कह डाली थी।

और फिर चार एक महीने और गुजर गए ना [illegible] और जगह पर कर दिया गया। मंगल ने सुना, [illegible] गया। ब्याह भी हो गया सीता का, गाना भी हो [illegible] में वह कभी नही आई।

एक दिन सारे गाव को पता चला कि [illegible] घर से निकल गया है। दो महीने तक [illegible] मिला। और फिर खबर आई कि वह [illegible] मील दूर। वहा के डेरे के बाग में [illegible] अन्य आदमी उसके साथ गए, लेकिन [illegible] का बुत बना रहा था। न हंसता था, [illegible] जन्म से ही कोई साधु हो। डेरे के [illegible] बैरागी हो गया। इस ससार में [illegible] वापस लौट आया।

नाम ही सच्चा है। लेकिन कभी कभी उसे महसूस होता कि यह ससार तो योग्य वस्तु है, मान्य पदाथ है। साधु होकर मनुष्य बहुत बडा पाप करता है जीवन से धोखा। ऐसे पलो म उसे औरत की जरूरत महसूस होती। कभी कभी तो बडी शिद्दत से। वह सोचता, अगर एक सीतो नही मिली तो जिंदगी का धक्का तो नही दे दना चाहिए। किसी एक को लेकर मरन की क्या जरूरत है। वह नही और सही। उसका जी चाहता कि साधुगीरी छोडकर वह ब्याह कर ले, और मनुष्यो जैसी सहज जिंदगी व्यतीत करे।

एक बार तो उसकी यह मनोदशा कई दिन उसका पीछा करती रही और फिर वह इस फैसले पर पहुचा कि स्त्री भोग एक साथक काम है। इन्ही दिनो उस गाव की एक भर-जवान लेकिन छटटड लडकी से उसका शारीरिक सम्बध हो गया। लडकी खुद ही किसी अधड की तरह आकर मगलदास से टकरा गई थी। जाने किस वजह से उसके खाविंद न उस मायके मे छोड रखा था। कामाग्नि से अधी हुई, वह किसी मद की तलाश मे थी। सो, मगलदास से उसका मेल हो गया था, और मगलदास की आध्यात्मिकता दुनियावी विचारो मे तबदील होकर रह गई। दिखाई देने वाला ससार एक हकीकत बन गया। आखें तभी खुली, जब वह लडकी गभवती हो गइ।

मगलदास का घबराहट हुई। गाव म उसका कितना मान-सम्मान है। वह ता देवता-स्वरूप साधु माना जाता है। चौथे महीने ही तिनका के नीचे दबी आग भडक उठी। पता नही क्या, वह अपना गभ गिरवान को भी तयार नही थी। साफ कहती थी कि वह मगलदास के पास जाया करती थी। जो भी सुनता, दाता म उगली दबा लेता। इस बात पर विश्वास ही न होता। सभी कहते, लडकी झूठ बोलती है। जान किसका पाप खरीद बैठी है। साधु को तो बिना बात बदनाम कर रही है।

उन्ही दिना के दौरान मगलदास न बेहद घबराहट और हताश के प्रभाव के तहत, एक रात उस्तरे स अपना गुप्ताग काट डाला। फिटकरी वाले पानी म पट्टिया भिगा भिगाकर बाधता रहा। पेशाब करता तो पट्टी खाल लेता, वरना सारा दिन सारी रात पट्टिया बदलता रहता, और फिर धूनी की गम गम राख न पाच सात दिना म ही उसके जख्म को भर दिया।

पद्रह बीस दिना तक गाव म चख चख चलती रही, और फिर एक

दिन दस आदमी उस लडकी को साथ लेकर टील पर आए। 'बोलो। क्या यह तुम्हारी करतूत नही है ।' उन्हान मगलदास स कहा।

मगलदास ने कोई जवाब नही दिया, सिफ लगोटी खोलकर खडा हो गया।

व सब जान क्या सोचकर आए थे। सबके सब चुपचाप घर को लौट गए।

मगलदास गाव के भीतर तो पहले भी कभी नही जाता था। अब तो खैर क्या जाता। उसके श्रद्धालु टीले पर ही आते थे सीस नवाते थे, और चढावा चढाकर लौट जात थे। लेकिन जो भी कोई आता था, उसके चेहरे की ओर देखता रह जाता था। टीले के पास से गुज़रन वाले लोग, उसके साथ घटी इस घटना की चर्चा करते। उनकी कोई बात कभी मगलदास के काना मे भी पड जाती। अब उसे यह चर्चा मार रही थी।

उस लडकी को उसके मा बाप न कही और बठा दिया था। तीन महीन बाद उसन बफ सा, गोरा चिट्टा लडका जन दिया। जहा वह बठाई गई थी, वह आदमी उम्र के उतार पर था और अकेला था। वह तो इसी बात स खुश था कि उसके घर मे औरत आ गई है। लडका भले ही किसीके बीज का हो माना तो उसीका जाएगा।

अब मगलदास इस बात को लेकर सोचता रहता कि यह अनहोनी क्या कर दी। हा कह देता तो जटाओ को सिर से उतारकर फेंक देता और उसे ब्याह कर गाव ले जाता। बाप भी खुश मा भी खुश। उसन तो अपनी जिंदगी ही बरबाद कर ली। इससे तो मौत ही बेहतर थी। वह सोचता रहता, भीतर ही भीतर घुलता रहता। अपनी अक्ल को लानत भेजता। किसी भी श्रद्धालु से आख न मिलाता। कभी भूल से किसीकी ओर झाक भी लेता, तो उसे लगता जसे देखने वाला उसपर तरस से भरी तेजाबी पिचकारिया मार रहा हो। बहुत निराश, उदास, बेदिल होकर उसने वह गाव छोड दिया।

अब उसन इस गाव क पश्चिम की ओर, बडे तालाब के दक्षिणी कोने म पुरान वक्ता के एक आवे को साफ करवाकर अपनी कुटिया बनवा रखी थी। आवा तो अब उसे कोई कहता ही नही था, सभी मगलदास का टीला ही कहते।

इस गाव मे वह पिछले सात साल से रह रहा था। उसने अपने मन

को समझा लिया था। अपने पास आने वाले लोगो को वह गृहस्थ आश्रम म रहकर परमात्मा के पास होने की शिक्षाए देता। बुरे कार्यो म उन्हें रोकता। शराब, अफीम के अवगुण बताता। दवा बूटी भी देता।

वह किसी औरत की तरफ आख भरकर झाकता भी नही था। शरारत उसकी आखो मे कभी नही आती थी। उसकी जिंदगी तो एक ऋषि की जिंदगी थी। लेकिन इस बात का पता गाव म किसीको भी नही था। यह गाव उस गाव से सौ मील दूर था। मगलदास की जन्मभूमि से भी साठ सत्तर मील दूर। उधर का तो कोई आदमी कभी इधर आया ही नही था।

पता नही, लबरदार की वडी बहू का दिल मगलदास पर कैसे आ गया था। वह उसे क्या बताता अपने मुह म ?

रात आधी से ज्यादा जा चुकी थी। चाद टीले स थोडी दूर खडे ऊचे नीम की पीठ पीछे जा खडा हुआ था। गोधू नाई अपनी झुग्गी मे पडा धीरे-धीरे खास रहा था। मगलदास न धूनी की आग को एक बार फिर झकझोर दिया। इस बार कोई चिंगारी नही भडकी। लगता था आग सो गई है। मगलदास खडा हो गया। उसके मुह से अलख निरजन नही निकला, वरना वह जब कभी भी धरती से खडा होता था तो अगडाई लेकर अलख निरजन पुकारता था। अब तो उसने अगडाई भी नही ली थी। उसने देखा, तालाब के किनारे के साथ साथ कोई परछाई टीले की ओर बढती आ रही थी। पास आने पर उसने साफ देखा, यह लबरदार की वडी बहू ही थी। हाथ मे लोटा था। दूध से भरा होगा। गरम चादर उसने लपेट रखी थी।

एक कपकपी सी मगलदास के शरीर को छू गई। पल भर म वह जाने क्या सोच गया। उसन लबरदार की बहू की तरफ फिर नही झाका। एकाएक वह भागा और उसने तालाब म छलाग लगा दी। पिछले साल की मिट्टी का खादकर नया पानी डाला गया था। जहा उसन छलाग लगाई थी वहा तो हाथी भी डूब सकता था। लबरदार की बहू के मुह से दबी सी चीख निकल गई। अपने कल्पित भविष्य पर एक गहरी खरोच लगवाकर, वह उन्ही पैरो वापस घर की ओर लौट गई। गोधू नाई को कुछ पता नहीं चला। झुग्गी मे लेटा वह धीरे धीरे खासे जा रहा था।

दिन चढा तो मगलदास की लाश तालाब के ठिठुरे हुए पानी म फूलकर कुप्पा बनी तर रही थी।

यह कहानी नही

अमृता प्रीतम

पत्थर और चूना बहुत था, लेकिन अगर थोडी सी जगह पर दीवार की तरह उभरकर खडा हा जाता, तो घर की दीवारे बन सकता था पर बना नही। वह धरती पर फल गया, सडको की तरह, और व दानो तमाम उम्र उन सडका पर चलते रहे।

सडकें एक दूसरे के पहलू से भी फूटती हैं, एक दूसर के शरीर को चीरकर भी गुजरती है, एक दूसरे से हाथ छुडाकर गुम भी हो जाती है और एक दूसर के गले स लगकर एक दूसरे मे लीन हो जाती हैं। वे एक दूसरे से मिलत रहे, पर सिफ तब, जब कभी कभार उनके पैरा के नीचे विछी हुई सडकें एक दूसरे स आकर मिल जाती थी।

घडी पल के लिए शायद सडकें भी चौककर रुक जाती थी, और उनके पर भी।

और तब शायद, दोनो को उस घर का ध्यान आ जाता था, जो बना नही था।

बन सकता था फिर क्यो नही बना? वे दाना हैरान से होकर पावा के नीचे की जमीन को ऐसे देखते थे जसे यह बात उस जमीन स पूछ रहे हो।

और फिर व कितनी ही दर जमीन की आर ऐस देखन लगने, मानो वह अपनी नजर स जमीन मे उस घर की नीवें खोद लेंगे।

और कई बार सचमुच वहा जादू का एक घर उभरकर खडा हो

जाता, और व दोना ऐसे सहज हो जाते माना बरमा से उस घर म रह रह हा।

यह उनकी भरपूर जवानी के दिना की बात नही, अब की बात है, ठडी उम्र की बात, कि 'अ' एक सरकारी मीटिंग के लिए 'स' के शहर गई। 'अ का भी वक्त न 'स' जितना सरकारी आहदा दिया है और बराबर की हैसियत के लोग जब मीटिंग से उठे, सरकारी दफ्तर के बाहर शहरा मे आन वाला के लिए वापसी टिक्ट तैयार रखे हुए थे। 'स' न आगे बढकर अ का टिक्ट ले लिया, और बाहर आकर 'अ से अपनी गाडी म बैठन के लिए कहा।

पूछा— सामान कहा है ?"

' हाटल म।"

'स न ड्राइवर मे पहले होटल और फिर वापस घर चलने के लिए कहा।

अ' न आपत्ति नही की, पर तक के तौर पर कहा, "प्लेन मे सिफ दो घटे बाकी है, होटल होकर मुश्किल मे एयरपोट पहुचूगी।'

"प्लेन कल भी जाएगा परसा भी रोज जाएगा।' स ने सिफ इतना कहा, फिर रास्ते भर कुछ नही कहा।

होटल से सूटकेस लेकर गाडी म रख लिया, तो एक बार 'अ' ने फिर कहा—' वक्त थोडा है, प्लेन मिस हो जाएगा।"

'स' न जवाब मे कहा—' घर पर मा इतजार कर रही होगी।'

'अ सोचती रही, कि शायद स' न मा को इस मीटिंग का दिन बताया हुआ था, पर वह समझ नही सकी—क्या बताया था ?

'अ' कभी कभी मन से यह 'क्यो पूछ लेती थी पर जवाब का इतजार नही करती थी। वह जानती थी—मन के पास कोई जवाब नही था। वह चुप बठी शीशे मे से बाहर शहर की इमारतो को दखती रही।

कुछ दर बाद इमारतो का सिलसिला टूट गया। शहर से दूर की आबादी आ गई और, और पाम के बडे बडे पडा की कतारें शुरू हो गइ।

समुद्र शायद पास ही था, 'अ' के सास नमकीन से हो गए। उसे

लगा—पाम के पत्ता की तरह उसके हाथो मे कम्पन आ गया था, शायद 'स' का घर भी अब पास था।

पडा-पत्तो म लिपटी हुई-सी एक कॉटेज के पास पहुचकर गाडी खडी हो गइ। 'अ' भी उतरी, पर कॉटेज के भीतर जाते हुए एक पल के लिए बाहर कल के पेड के पास खडी हो गई। जी चाहा—अपने कापते हुए हाथा को यहा बाहर केले के कापते हुए पत्तो के बीच मे रख दे। वह 'स क माथ भीतर कॉटेज म जा सकती थी, पर हाथो की वहा जरूरत नही थी।

मा न शायद गाडी की आवाज़ सुन ली थी, बाहर आ गइ। उन्हान हमशा की तरह अ' का माथा चूमा। और कहा, "आओ, बेटी।"

इस बार 'अ' बहुत दिना बाद मा से मिली थी, पर मा ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए—जसे सिर पर से बरसा का बोझ उतार दिया हो—और उसे भीतर ले जाकर बिठाते हुए उससे पूछा, "क्या पियोगी, बेटी ?"

'स' भी अब तक भीतर आ गया था, मा से कहने लगा—' पहले चाय बनाआ, फिर खाना।"

अ न देखा—ड्राइवर गाडी से उसका सूटकेस अन्दर ला रहा था। उसने स' की ओर दखा, कहा—'बहुत थोडा वक्त है मुश्किल से एयर-पोर्ट पहुचूगी।"

स' न ड्राइवर से कहा—'सवेरे जाकर परसो का टिकट ले आना।' और मा से कहा—"तुम कहती थी, कि मेर कुछ दोस्तो को खाने पर बुलाना है, कल बुला लो।"

'अ' न स' की जेब की आर दखा जिसम उसका वापसी का टिकट पडा हुआ था कहा—' पर यह टिकट बरबाद जाएगा।'

मा रसोई की तरफ जात हुए खडी हो गई, और 'अ' के कधे पर अपना हाथ रखकर कहन लगी—' टिकट का क्या है, बेटी! इतना कह रहा है रुक जाओ।'

पर क्या? अ के मन मे आया, पर कहा कुछ नही। कुर्सी से उठकर कमरे के आगे बरामद मे जाकर खडी हो गई। सामने दूर तक पाम के ऊचे ऊचे पड थ। समुद्र परे था। उसकी आवाज़ सुनाई दे रही थी, पर पेड़

दिखाई दे रहे थे। 'अ' को लगा—सिर्फ आज का 'क्यो' नही, उसकी जिंदगी के कितने ही 'क्यो' उसके मन के समुद्र के तट पर इन पाम के पेडो की तरह उगे हुए हैं, और उनके पत्ते अनेक वर्षों से हवा म काप रहे हैं।

'अ' ने घर के मेहमान की तरह चाय पी, रात को खाना खाया, और घर का गुसलखाना पूछकर रात को सोने के समय पहनने वाले कपडे बदले। घर मे एक लम्बी बैठक थी, ड्राइग, डाईनिंग और दो और कमरे थे—एक 'स' का, एक मा का। मा ने जिद करके अपना कमरा 'अ' को दे दिया, और स्वय बैठक म सो गई।

'अ' सोने वाले कमरे म चली गई, पर कितनी ही देर झिझकती हुई सी खडी रही। सोचती रही—मैं बैठक मे एक-दो रातें मुसाफिरो की तरह ही रहती, ठीक था, यह कमरा मा का है, मा का ही रहना चाहिए था।

सोने वाले कमरे के पलग म, पर्दों म और अलमारी मे एक घरेलू-सी बू-बास होती है, 'अ' ने इसका एक घूट-सा भरा। पर फिर अपना सास रोक लिया, मानो अपने ही सासो से डर रही हो।

बराबर का कमरा 'स' का था। कोई आवाज नही थी। घडी पहले 'स' ने सिरदर्द की शिकायत की थी, नीद की गोली खाई थी, अब तक शायद सो गया था। पर बराबर वाले कमरो की भी अपनी एक बू-बास होती है 'अ' ने एक बार उसका भी एक घूट पीना चाहा पर सास रुका रहा।

फिर 'अ' का ध्यान अलमारी के पास नीचे फर्श पर पडे हुए अपने सूटकेस की ओर गया, और उसे हसी सी आ गई—यह देखो, मेरा सूटकेस, मुझे सारी रात मेरी मुसाफिरी की याद दिलाता रहेगा।

और वह सूटकेस की ओर देखती हुई थकी हुई सी, तकिये पर सिर रखकर लेट गई।

न जाने कब नीद आ गई। सोकर जागी तो खासा दिन चढा हुआ था। बैठक मे रात को होने वाली दावत की हलचल थी।

एक बार तो 'अ' आखें झपककर रह गई—बैठक मे सामने 'स' खडा था—चारखाने का नीले रंग का तहमद पहने हुए। 'अ' ने उसे कभी रात के सोने के समय के कपडो मे नही देखा था। हमेशा दिन म देखा था—

किसी सडक पर, सडक के किनार किसी कफे म, होटल मे या किसी सरकारी मीटिंग म—उसकी यह पहचान बडी नई-सी लगी, आखो मे अटक-सी गई।

'अ' न भी इस समय नाइट सूट पहना हुआ था, पर 'अ न बठक मे आन से पहले उसपर ध्यान नही दिया था, अब ध्यान आया तो अपना आप ही अजीब लगन लगा—साधारण से असाधारण-सा होता हुआ।

बठक मे खडा हुआ स 'अ' को आते हुए देखकर कहने लगा—"य दो सोफे हैं, इ्ह लम्बाई क रुख रख लें? बीच मे जगह खुली हो जाएगी।

'अ ने सोफा को पकडवाया, छोटी मेजो को उठाकर कुर्सिया के बीच मे रखा। फिर मा न चौके स आवाज दी, तो 'अ' ने चाय लाकर मेज पर रख दी।

चाय पीकर स' ने उससे कहा—"चलो, जिन लोगा को बुलाना है, उनके घर जाकर कह आए, और लौटते हुए कुछ फल ले आए।"

दोनो ने पुराने परिचित दोस्ता के घर जाकर दस्तक दी, स दशे दिए रास्ते से चीजें खरीदी, फिर वापस आकर दोपहर का खाना खाया, और फिर बैठक को फूलो से सजाने मे लग गए।

दोना ने रास्ते मे साधारण बातें की थी—फल कौन-कौन से लेने हैं? पान लेने हैं या नही? ड्रिक्स के साथ के लिए कबाब कितने ले लें? फला का घर रास्ते मे पडता है उसे भी बुला लें?—और ये सब बातें वे नही थी, जो सात बरस बाद मिलन वाले करते हैं।

'अ को सवेरे दोस्तो के घर पर पहली दूसरी दस्तक देते समय ही सिफ थोडी सी परेशानी महसूस हुई थी। वह भले ही 'स के दोस्त थे, पर एक लम्बे समय से अ' को जानते थे, दरवाजा खोलन पर बाहर उसे 'स' के साथ देखते तो हैरान स हो कह उठते— आप!"

पर वे जब अकेले गाडी मे बैठते, तो 'स' हस देता—"देखा, कितना हैरान हो गया, उससे बोला भी नही जा रहा था।"

और फिर एक-दो बार के बाद दोस्तो की हैरानी भी उनकी साधारण बातो म शामिल हो गई। 'स' की तरह 'अ' भी सहज भाव से हसन लगी।

शाम के समय 'स' ने छाती म दद की शिकायत की। मा न कटोरी म ब्रा डी डाल दी, और 'अ' से कहा—'लो बटी ! यह ब्रा डी इसकी छाती पर मल दो।"

इस समय तक शायद इतना कुछ सहज हो चुका था, 'अ' ने 'स की कमीज के ऊपर वाले बटन खोले, और हाथ स उसकी छाती पर ब्रा डी मलने लगी।

बाहर पाम के पेडो के पत्ते और केलो के पत्ते शायद अभी भी काप रहे थे, पर 'अ के हाथ मे कम्पन नही था। एक दोस्त समय से पहले आ गया था 'अ' ने ब्रा डी मे भीगे हुए हाथो से उसका स्वागत करते हुए उम नमस्कार भी किया, और फिर कटोरी म हाथ डुबोकर, बाकी रहती ब्रा डी को 'स' की गदन पर मल दिया—क धा तक।

धीरे धीरे कमरा मेहमानो से भर गया। 'अ' फ्रिज से बरफ निकालती रही, और सादा पानी भर भरकर फ्रिज मे रखती रही। बीच-बीच म रसोई की तरफ जाती। ठडे कबाब फिर से गम करके ले आती। सिफ एक बार जब 'स' ने 'अ' के कान के पास होकर कहा, 'तीन-चार तो व लोग भी आ गए हैं, जि हे बुलाया नही था। जरूर किसी दोस्त न उनस भी कहा होगा, तुम्हे देखने के लिए आ गए हैं।' तो पल भर के लिए अ' की स्वाभाविकता टूटी पर फिर जब स' ने उससे कुछ गिलास धोन के लिए कहा तो वह उसी तरह सहज हो गई।

महफिल गम हुई रात ठडी हुई और जब लगभग आधी रात के समय सब चले गए, अ को सोने वाले कमरे मे जाकर अपने सूटकेस में से रात के कपडे निकालकर पहनते हुए लगा—कि सडकों पर बना हुआ जादू का घर अब कही भी नही था।

यह जादू का घर उसने कई बार देखा था—बनते हुए भी मिटते हुए भी, इसलिए वह हैरान नही थी। सिफ थकी थकी सी तकिए पर सिर रखकर सोचने लगी—कब की बात है—शायद पच्चीस बरस हो गए नही तीस बरस—जब पहली बार वे जिंदगी की सडका पर मिले थे—'अ' किस सडक से आई थी 'स कौन सी सडक से आया था दोना पूछना ही भूल गए थे, और बताना भी। वे निगाह नीची किए जमीन म नींवें खोदते रहे

और फिर वहा जादू का एक घर बनकर खडा हो गया, और वह महज मन मारे दिन उस घर म रहत रहे।

फिर जब दोना की सडका ने उन्ह आवाजें दी, वे अपनी अपनी सडक की ओर जाते हुए चौक्कर खडे हो गए। देखा—दोनो सडका के बीच एक गहरी खाई थी। 'स' कितनी ही देर उस खाई की ओर देखता रहा, जस 'अ से पूछ रहा हो, कि इस खाई को तुम किस तरह पार कराओगी ? 'अ न कहा कुछ नही था, पर 'स' के हाथ की ओर देखा था, जैसे कह रही हो—तुम हाथ पकडकर पार करा लो, मैं मजहब की इस खाई को पार कर जाऊगी।

फिर 'स का ध्यान ऊपर की ओर गया था 'अ' के हाथ की ओर। 'अ की उगली मे हीरे की एक अगूठी चमक रही थी। स कितनी ही दर तक देखता रहा, जैसे पूछ रहा हो—तुम्हारी उगली पर यह जो कानून का धागा लिपटा हुआ है मैं इसका क्या करूगा ? अ न अपनी उगली की ओर देखा था, और धीरे से हस पडी थी, जैसे कह रही हो—तुम एक बार कहो, मैं कानून का धागा यह नाखूना म खोल दूगी, नाखूना से यह नहा खुलेगा तो दाता से खोल दूगी।

पर 'स' चुप रहा था, और 'अ' भी चुप खडी रह गई थी। पर जैसे सडकें एक ही जगह पर खडी हुई भी चलती रहती ह वे भी एक जगह पर खडे हुए चलत रहे।

फिर एक दिन स के शहर से आने वाली सडक 'अ' के शहर आ गई थी, और 'अ' ने 'स की आवाज सुनकर अपने एक वरस के बच्चे को उठाया था, और बाहर सडक पर उसके पास आकर खडी हो गइ थी। 'स न धीरे से हाथ आगे करके सोए हुए बच्चे का 'अ' से ले लिया था, और अपने कधे से लगा लिया था, और फिर वे सारे दिन उस शहर की सडकों पर चलत रहे।

वह उनकी भरपूर जवानी के दिन थे—उनके लिए न धूप थी, न ठड। और फिर जब चाय पीने के लिए वे एक कफे मे गए तो वर ने एक मद, एक औरत और एक बच्चे को देखकर एक अलग कोने की कुर्सिया

पाछ दी थी, और कपे मे उस अलग कोन म एक जादू का घर बनकर खडा हो गया था।

और एक बार—अचानक चलती हुई रलगाडी म मिलाप हो गया था। 'स भी था, मा भी, और 'स' का एक दोस्त भी। 'अ' की सीट बहुत दूर थी, पर 'स' क दोस्त न उससे अपनी सीट बदल ली थी, और उसका सूटकेस उठाकर 'स के सूटकेस के पास रख दिया था। गाडी में दिन के समय ठड नही थी पर रात ठडी थी, मा ने दोना को एक कम्बल दे दिया था, आधा स के लिए, आधा अ के लिए, और चलती हुई गाडी म उस साझे के कम्बल के किनारे जादू के घर की दीवारें बन गए थे।

जादू की दीवारें बनती थी, मिटती थी, और आखिर उनके बीच खडहरा की सी खामोशी का एक ढेर लग जाता था।

स का कोई बधन नही था। 'अ' को था। पर वह तोड सकती थी। फिर यह क्या था कि वे तमाम उम्र सडका पर चलत रहें।

'अब ता उम्र बीत गई — अ न उम्र के तपते दिना के बारे मे भी सोचा और अब के ठडे दिना के बार म भी। लगा—सब दिन, सब बरस, पाम के पत्ता की तरह हवा म खडे काप रहे थे।

बहुत दिन हुए, एक बार 'अ' ने बरसो की खामोशी को तोडकर पूछा था— तुम बोलते क्या नही ? कुछ भी नही कहते। कुछ तो कहो !'

पर स हस दिया था, कहने लगा—'यहा रोशनी बहुत है हर जगह रोशनी होती है मुझसे राशनी में बोला नही जाता।

और अ का जी चाहा था— वह एक बार सूरज का पकडकर बुझा दे।

सडको पर सिफ दिन चढते हैं। रातें तो घरा मे होती है—पर घर कोई था नही इसलिए रात भी कही नही थी। उनके पास सिफ सडकें थी और सूरज था, और 'स' सूरज की रोशनी मे बोलता नही था।

एक बार बाला था।

वह चुप सा बैठा हुआ था, जब अ' ने पूछा था क्या सोच रहे हो ? तो वह बोला था, सोच रहा हू, नडकिया से फ्लट करू, और तुम्हे दु खी करू।

पर इस तरह शायद 'अ' दु खी नही, सुखी हो जाती इसलिए अ' भी हसने लगी थी, और 'स' भी। और फिर एक लम्बी खामोशी।

कई बार अ के जी म आता था—हाथ आगे बढाकर स का उसकी खामोशी म स बाहर ले आए, वहा तक, जहा तक दिल का दद है। पर वह अपने हाथो को सिफ देखती रहती थी, उसन हाथो से कभी कुछ कहा नही था।

एक बार स' न कहा था, 'चलो चीन चलें !'

'चीन ?

'जाएगे, पर आएग नही।

पर चीन क्या ?'

यह क्यो' भी शायद पाम के पेड के समान था जिसके पत्ते फिर हवा मे कापने लगे थे।

इस समय 'अ ने तकिए पर सिर रखा हुआ था, पर नीद नही आ रही थी। 'स' बराबर के कमरे मे सोया हुआ था, शायद नीद की गोली खाकर।

अ' को न अपन जागने पर गुस्सा आया न स की नीद पर। वह सिफ यह सोच रही थी—कि व सडको पर चलते हुए जब कभी मिल जाते है तो वहा घडी पहर के लिए एक जादू का घर क्या बनकर खडा हो जाता है ?

'अ को हसी सी आ गई—तपती हुई जवानी के समय ता ऐसा हाता था, ठीक है, लेकिन अब क्यो हाता है ? आज क्या हुआ ?

यह न जान क्या था जो उम्र की पकड म नही आ रहा था।

बाकी रात न जान कब बीत गई, अब दरवाजे पर धीरे से खटका करता हुआ डाइवर कह रहा था, "एयरपाट जान का समय हा गया है।"

'अ न साडी पहनी सूटकेस उठाया, 'स भी जागकर अपन कमरे स आ गया और व दोना उस दरवाजे की ओर बढे जो बाहर सडक की आर खुलता था।

ड्राइवर न 'अ' के हाथ से सूटकेस ले लिया था। अ' को अपने हाथ

ओर भी खाली स लग। वह दहलीज के पास अटक-सी गई, फिर जल्दी से अन्दर गइ और बैठक मे सोई हुई मा को खाली हाथो से प्रणाम करक बाहर आ गई।

फिर एयरपोट वाली सडक शुरू हो गई, खत्म होने को भी आ गई, पर 'स भी चुप था 'अ' भी।

अचानक स' न कहा, "तुम कुछ कहन जा रही थी ?"

'नही।'

और व फिर चुप हो गए।

फिर 'अ को लगा—शायद स' को भी—कि बहुत कुछ कहन को था, बहुत कुछ सुनन को पर बहुत देर हो गई थी और अब सब शब्द जमीन म गड गए थ—पाम के पेड बन गए थे और मन म समुद्र के पास लग हुए उन पडो के पत्ते शायद तब तक कापते रहेंगे जब तक हवा चलती रहेगी।

एयरपोट आ गया और पावो के नीचे 'स' के शहर की सडक टूट गइ।

अब सामन एक नई सडक थी—जो हवा मे स गुजरकर 'अ' के शहर की एक सडक स जा मिलने को थी।

और वहा, जहा दो सडकें एक दूसरे के पहलू से निकलती हैं 'स' ने धीरे-से 'अ' का अपने कधे से लगा लिया, और फिर वे दोनो कापते हुए, पावो के नीचे की जमीन को इस तरह देखने लगे, जैसे उन्हे उस घर का ध्यान आ गया हो, जो बना नही था।

• • •